A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 10 मार्च, 2026

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 156, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

टीम सूर्या ने ही नहीं, भारतीय संस्कृति ने भी जीता है वर्ल्ड कप

अजय बोकिल

टी 20 वर्ल्डकप 2026 का भारत और न्यूजीलैंड के बीच हुआ धमाकेदार फाइनल मैच इस मायने में अलग था कि इसमें भारत और इंग्लैंड के मध्य हुए सेमीफाइनल मैच जैसा दिल की धड़कने थमा देने वाला रोमांच भले न हो, लेकिन मैच का हर क्षण टीम सूर्या की हर हाल में जीत की जिद से सराबोर था। मानो रंगपंचमी का त्यौहार क्रिकेट की दिवाली में तब्दील हो गया हो। खास बात ये कि यह वर्ल्ड कप का यह खिताब न केवल टीम सूर्या ने जीता बल्कि उस उदात्त भारतीय संस्कृति ने जीता है, जिसकी नुमाइंदगी ये 11 खिलाड़ी अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में कर रहे थे। सांस्कृतिक संजीदगी का ये नजारा एक बार नहीं चार-चार बार दिखा। मसलन इंग्लैंड की टीम के साथ हुए कशमकश भरे सेमीफाइनल को अपने नाम करने के बाद भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज संजू सैमसन ने 'प्लेयर ऑफ द मैच' की ट्रॉफी उस मुखालिफ टीम के मासूम युवा खिलाड़ी जेकब बेथल को यह कहकर थमा दी कि आज इसके असल हकदार तुम्ही हो। बेथल ने अपनी टीम को जिताने के लिए जी जान लगा दी, सेंचुरी भी मारी, लेकिन टीम आखिर में सात रनों से हार गई। अपनी इस बेबसी पर रोते बेथल को संजू ने जिस बड़प्पन के साथ हिम्मत बंधाई, श्रेय दिया, उसके लिए दरिया जैसा दिल चाहिए। यही नहीं, अपनी कामयाबियों कर इठलाने की जगह संजू ने जिस हिमालय-सी उदारता का परिचय देते हुए फाइनल में हार से व्यथित न्यूजीलैंड टीम के कप्तान मिशेल सेंटेनर आगे बढ़कर उठाया और 'प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' की अनमोल ट्रॉफी भी मिशेल को सौंप दी। यह केवल दिल बहलाने की बात नहीं थी, बल्कि निष्काम भाव से प्रतिद्वंद्वी के परिश्रम का स्वीकार था। जीत के गुरूर और उन्माद के बीच करूणा और उदारता की कविता रच देना, किसी साधारण खिलाड़ी का काम नहीं है। संजू ने साबित कर दिया कि वो एक बेहतरीन खिलाड़ी ही नहीं हैं, एक महान इंसान भी हैं। ऐसा इंसान, जिसकी तारीफ हमारे दुश्मन देश पाकिस्तान के खिलाड़ियों ने मुक्त कंठ से की। मैदान पर एक नायाब नजारा वो भी दिखा जब इंग्लैंड टीम के कप्तान हैरी ब्रुक ने वानखेडे स्टेडियम के दर्शकों से भरे स्टेडियम में सार्वजनिक रूप से अपनी प्रतिद्वंद्वी टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव के पैर छूकर उनसे आशीर्वाद लिया। गौरतलब है कि दुनिया में पैर छूने की परंपरा केवल भारतीय संस्कृति में है, जहां बड़ों और महान लोगों के आगे झुकने का अर्थ अपने भीतर के अहंकार तो तिरोहित करना है न कि किसी के आगे सरेंडर करना। एक और नजीर फाइनल में गेंदबाज अर्शदीप सिंह द्वारा विकेट उड़ाने की जल्दी में फेंकी गई गेंद न्यूजीलैंड टीम के बल्लेबाज डेरिल मिशेल को जा लगना और उनका बिफरना थी। अर्शदीप ने ऐसा जानबूझकर नहीं किया था, जल्दबाजी में ऐसा हुआ। लेकिन अपने इस 'अपराध बोध' से व्यथित अर्शदीप ने मिशेल से एक नहीं दो-दो बार माफी मांगी। कप्तान सूर्या ने भी अपने साथी की इस चूक पर क्षमायाचना में कोताही नहीं की। मामला वहीं खत्म हो गया। क्रिकेट जैसे खेल और मैच के दौरान किलिंग इंस्टिंक्ट के तकाजों के बीच असाधारण संयम और दरियादिली का परिचय देकर भारतीय खिलाड़ियों ने खिताबी ट्रॉफी के साथ-साथ सारी दुनिया का दिल भी जीत लिया।

दक्षिण अफ्रीका के हाथों ग्रुप मैच में भारत की करारी हार जैसे अवांछित और सबक सिखाने वाले प्रसंग को छोड़ दिया जाए तो ऐसा बार- बार लगा कि भारतीय क्रिकेट टीम एक जिद की साथ उतरी है। फाइनल में खिताबी मैच के एक दिन पहले तक अपनी जीत और भारतीय टीम के घरेलू मैदान पर भारी दबाव में खेलने की डींगे हांकने वाले न्यूजीलैंड के कप्तान मिशेल सेंटेनर की जबान तब खामोश हो गई, जब टॉस जीतकर भी गेंदबाजी करने का उनका अपना दांव उलटा पड़ गया। दूसरी तरफ भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव और उनकी टीम टॉस की क्षणिक हार को रिकॉर्ड जीत में बदलने के लिए बेताब थी। सभी 11 खिलाड़ी तय करके मैदान में उतरे थे कि अपनी दो साल पहले जीती ट्रॉफी को हर हाल में बचाए रखना है, यानी मोर्चे पर तैनात उस योद्धा की तरह, जो अपनी इंच भर जमीन भी दुश्मन को देने के लिए तैयार नहीं है। अगर आप गौर से देखें तो हर कप्तान की अपनी बॉडी लैंग्वेज होती है, जो कुछ कहती है। भारतीय टीम के पूर्व विश्वविजेता कप्तानों और वर्तमान कप्तान सूर्य कुमार यादव की देहभाषा में फर्क यह है कि उनका चेहरा बोलता है। तनाव, संकल्प, हैरत और जिद के लमहों में उनके होठ चंबू (भगवान को जल चढ़ाने वाला सुराही जैसे मुंह वाला छोटा पात्र) की माफिक गोल हो जाते हैं। सेकंड के भी शतांश-सी उनकी यह शारीरिक प्रतिक्रिया इंट्रोस्पेक्शन के साथ-साथ मैच की स्क्रिप्ट किसी ब्लॉक बस्टर फिल्म की पटकथा लिखती-सी प्रतीत होती है। सूर्या के होंठ सामान्य होते ही संदेश चला जाता था कि कोई एरर आई थी, जो सॉल्व हो गई। जीत का कारवां अपनी सरगम के साथ लय में आगे बढ़ रहा है। सूर्या के होठों और आंखों की मौन भाषा को शायद उनके सहयोगी खिलाड़ी भी बड़ी सफाई से पढ़ और समझ लेते हैं। यही कारण है कि जब रनों की जरूरत थी, तब रनों का अंबार रचा, जब विकेट गिराने की जरूरत थी, विकेट ध्वस्त किए, जब कैच पकड़ने की दरकार थी तो किसी सजग प्रहरी से अधिकांश कैचों को जीत के फोल्डर में डाला, जब किफायती गेंदबाजी की आवश्यकता था तब किसी मारवाड़ी की मानसिकता से रन दिए। इन सब बातों का यूनिक मिश्रण मैदान में कीवियों का फालूदा बना गया। कह सकते हैं कि टी 20 वर्ल्ड कप के पहले भारत आई न्यूजीलैंड की टीम को इस फार्मेट में देशी मैदानों पर पहले ही मात देने का अनुभव भारतीय टीम के काम आया। संभवतः टीम सूर्या ने टीम सेंटेंनर की खामियों और खूबियों को भली भांति सेव कर लिया था और मौका लगते ही उसमें आवश्यकतानुसार 'करेक्शन' शुरू कर दिए। इस टी 20 वर्ल्ड कप ने साबित कर दिया कि आज क्रिकेट के इस फार्मेट में टीम इंडिया ही बाहुबली है। आलोचकों ने कप्तान सूर्यकुमार यादव की इस बात के लिए आलोचना की कि उन्होंने भारत को खिताब भले दिलाया हो, लेकिन टूर्नामेंट में उनका अपना निजी योगदान बहुत कम रहा। मान लिया, लेकिन नतीजे आपके पक्ष में हों तो सफलता को जाती कूवत की तराजू पर तौलना नाइंसाफी है। कप्तान का पैमाना अव्वल उसकी कप्तानी है, न कि निजी योगदान। सूर्यकुमार यादव पहले पैमाने पर सौ टंच खरे साबित हुए। टीम सूर्या ने अपने टाइटल को बचाते हुए कई नए रिकॉर्ड कायम किए और पुराने रिकॉर्डों को शिकस्त दी। इस टीम ने कई खेल मिथकों को ध्वस्त किया तो कई नए पैमानों की संरचना की। बतौर सूर्यकुमार यादव अगला लक्ष्य अब ओलंपिक में गोल्ड हासिल करना है। यही चाल रही तो वो भी झोली में होगा।

शरद की सुबह

दो चार अखबारी हलचल
और सोशल मीडिया पर चल
रही बातें करके
कहा उसने,

तुमसे मिलकर
अच्छा लगा
वह मुस्कुराती रही
जाते हुए रूककर कहा उसने...

'क्या अच्छा लगा आपको'

वह सोचता रहा...

बस! आपका ड्रेसिंग सेंस
और मुस्कुराहट
यकीनन 'आप स्मार्ट हैं और सुंदर भी'

बस,यही अच्छा लगा ?
सिवा देह और बाहरी परिधान के!

एक स्त्री को परखने का
तुम्हारा यही पैमाना है!!

यह तो सदियों से चला आ रहा है!!!
इस समकाल में
स्त्रियों की चीख
उनका बेअवाज रोना,अपने स्वयं के पैरों पर
खड़े होकर,सबल होना
तुम्हें कब सुनाई देगा...?

सिवा दैहिक भूगोल से ही किसी के व्यक्तित्व
का आंकलन नहीं होता
और ना ही
समझा जा सकता है
किसी देश का चरित्र भी

- अरुण सातले

बेटियों को नए मौकों से पीछे नहीं रहने देंगे

● पीएम मोदी ने एआई ऑटोमेशन पर फोकस का दिया जोर

कहा-भारत इनोवेशन वाली इकोनॉमी की ओर बढ़ रहा है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पोस्ट-बजट वेबिनार को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भारत अब तेजी से एक इनोवेशन-ड्रिवन इकोनॉमी की ओर बढ़ रहा है। हमारे एजुकेशन सिस्टम को रियल-वर्ल्ड इकोनॉमी की जरूरतों के साथ और मजबूती से जोड़ने की जरूरत है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और डिजिटल इकोनॉमी को भविष्य के लिए जरूरी बताया। पीएम मोदी ने कहा कि लंबे समय की ग्रोथ बनाए रखने के लिए भारत को एआई, ऑटोमेशन, डिजिटल इकोनॉमी और डिजाइन-बेस्ड मैन्युफैक्चरिंग जैसे उभरते सेक्टरों पर ध्यान देना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि ग्लोबल लेवल पर प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए इन विषयों को प्राथमिकता देना जरूरी है।

एजुकेशन-एम्प्लॉयमेंट के बीच की दूरी कम होगी- प्रधानमंत्री ने शिक्षा और रोजगार के बीच सीधा संबंध बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, 'हमें अपने एजुकेशन सिस्टम को रियल इकोनॉमी से जोड़ने की प्रोसेस को और तेज करना होगा।'

● **हेल्थकेयर-स्पोर्ट्स को भी प्राथमिकता देंगे-** पीएम ने हेल्थ सेक्टर पर बात करते हुए कहा कि सरकार एक प्रिवेंटिव और होलिस्टिक हेल्थकेयर सिस्टम पर काम कर रही है। पिछले कुछ वर्षों में हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर का काफी विस्तार हुआ है। इसके साथ ही स्पोर्ट्स को अब राष्ट्रीय विकास का एक प्रमुख स्तंभ माना जा रहा है, जिसके लिए देशभर में खेल सुविधाओं को मजबूत किया गया है। इस वेबिनार की थीम 'सबका साथ सबका विकास- लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना' रखी गई। इस कार्यक्रम का मकसद बजट में की गई घोषणाओं को जमीन पर उतारने के लिए सरकारी विभागों के साथ मिलकर ठोस रणनीति बनानी है।

बिहार सीएम नीतिश का चाणक्य दांव!

● राज्यसभा के लिए नामांकन के बाद आज से करेंगे समृद्धि यात्रा

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को यूं ही नहीं राजनीत का चाणक्य कहा जाता है। ये तो लगता है कि किसी दबाव में नीतिश कुमार राज्यसभा के दरवाजे दस्तक देने जा रहे हैं। ऐसा नहीं होता तो नीतिश कुमार बतौर सीएम कई कार्यक्रम की सहमति ही क्यों देते। 10 मार्च से शुरू समृद्धि यात्रा तो ये बानगी भर है। खुद नीतिश कुमार ने लगभग एक माह तक आश्वासन देते हुए कहा था कि अभी देखूंगा ही न! बीजेपी के समर्थकों नीतिश कुमार के राज्यसभा नामांकन के बाद जिस तरह से जश्न मनाया, उससे तो यही लगा कि अब बीजेपी का खुल्ला खेल फर्रुखाबाद शुरू हो जाएगा। ऐसा

मानने वाले को अभी नीतिश कुमार की सीमांचल यात्रा तक इंतजार करना चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आगामी नवरात्रि पर्व एवं गुड़ी पड़वा की दीं मंगलकामनाएं

एचपीवी वैक्सीन का एक टीका बेटियों को बचाएगा सर्वाइकल कैंसर से : मुख्यमंत्री

भोपाल/जबलपुर (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में माताओं-बहनों के स्वास्थ्य की चिंता करना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सर्वाइकल कैंसर बेटियों की जिंदगी में सबसे कठिन समय होता है। मध्यप्रदेश में बड़े पैमाने पर एचवीपी टीकाकरण अभियान की शुरुआत की गई है। इसमें 14 वर्ष से अधिक आयु की बेटियों को 4 हजार रुपए मूल्य का यह टीका निःशुल्क लगाया जा रहा है। वैक्सीन का एक टीका गर्भाशय एवं ग्रीवा कैंसर के प्रति भविष्य में बेटियों को जीवनभर की सुरक्षा की गारंटी देगा और उन्हें गंभीर रोग से बचाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को जबलपुर के नेताजी सुभाषचंद्र बोस कल्चरल एंड इंफॉर्मेशन सेंटर में महिलाओं के लिए आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर और एचपीवी टीकाकरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने जबलपुर के चौराहों पर सोलर ट्रैफिक सिग्नल की स्थापना के कार्यों का रिमोट से लोकार्पण किया।

● बहनों से सुरक्षा की गारंटी वाले टीके का लाभ लेने का किया आहवान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आहवान किया कि बहनें और बेटियां सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए टीकाकरण का लाभ लेकर टीका अवश्य लगवा लें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टीका लगवा चुकी बेटियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए। साथ ही जबलपुर में 37 करोड़ रूपये से अधिक के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार लाड़ली बहनों से लेकर लाड़ली लक्ष्मी बेटियों तक निरंतर जनकल्याणकारी कार्यों को आगे बढ़ा रही है। लाड़ली बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए राज्य सरकार योजना की राशि को निरंतर बढ़ा रही है। प्रदेश की 1 करोड़ 25 लाख से अधिक लाड़ली बहनों को अब 1500 रुपए की राशि हर माह उनके बैंक खातों में अंतरित की जा रही है। राज्य सरकार ने बहनों को रोजगारपरक उद्योगों में काम करने पर 5 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि अलग से देने का निर्णय लिया है। प्रदेश में लैंगिग असमानता को खत्म करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य हो रहे हैं।

स्थानीय निकायों के चुनाव में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है। लोकसभा और विधानसभा में भी महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण का लाभ मिलेगा। बेटियां सेना से लेकर हर क्षेत्र में आगे बढ़कर बेहतर भविष्य का निर्माण कर रही हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उन्होंने 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अशोकनगर जिले में करीला धाम पहुंचकर माता जानकी और उनके पुत्र लव-कुश का आशीर्वाद प्राप्त किया और सभी प्रदेशवासियों के कल्याण की कामना की।

नेत्र दिव्यांग बालिकाओं का किया सम्मान

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एचपीवी टीकाकरण पूर्ण कर चुकी बालिकाओं जिया सेन और अंशी विश्वकर्मा को प्रतीकात्मक रूप से प्रमाण पत्र प्रदान किए। उन्होंने नेत्रहीन कन्या विद्यालय जबलपुर की बालिकाओं से भेंट कर उनका सम्मान भी किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लखपति दीदी आरती चौधरी और सीता गोंड को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। पूर्व मंत्री श्री अजय बिश्नोई ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी देश का नेतृत्व करते हुए हर वर्ग के कल्याण के लिए योजनाएं शुरू कर रहे हैं। बेटियों को सर्वाइकल कैंसर से सुरक्षित रखने के लिए शुरू की गई टीकाकरण की यह योजना मील का पत्थर सिद्ध होगी। देश और प्रदेश को आगे बढ़ाने में माताओं-बहनों का पूर्ण सहयोग सरकार को मिल रहा है। प्रदेश की आंगनवाड़ी एवं हेल्थ वर्कर्स की सहायता से विभिन्न प्रकार के कैंसर की पहचान करने के लिए आमजन को जागरुक किया जा सकता है। कार्यक्रम में विधायक श्री संतोष बरकड़े सहित जनप्रतिनिधि, स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी, स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ता, लाड़ली बहनें एवं बड़ी संख्या में बेटियां उपस्थित थीं।

मुख्यमंत्री ने जबलपुर को दी 37 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जबलपुर में 10.51 करोड़ लागत से आधुनिक जनपद भवन का भूमि-पूजन और 27.16 करोड़ लागत से नवनिर्मित गीता भवन सहित 3 अन्य विकास कार्यों का लोकार्पण किया। इनमें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, 21 स्वास्थ्य एवं उप स्वास्थ्य केंद्र और सोलर ट्रैफिक सिस्टम शामिल हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संस्कार धानी जबलपुर की छटा देश में सबसे अलग है। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित नागरिकों को आगामी नवरात्रि पर्व एवं गुड़ी पड़वा की मंगलकामनाएं दीं।

ईरान जंग से कच्चा तेल 2022 के बाद सबसे महंगा

115 डॉलर के पार निकला,150 डॉलर तक पहुंच सकती है कीमत

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग से अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम साढ़े तीन साल के हाई पर पहुंच गए हैं। 9 मार्च को ये 25 फीसदी बढ़कर 116 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है। इससे पहले 2022 में रूस-यूक्रेन जंग से कच्चा तेल 100 डॉलर के पार निकला था। क्रूड ऑयल बढ़ने की सबसे बड़ी वजह 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज' का बंद होना है। ये करीब 167 किमी लंबा जलमार्ग है, जो फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है। ईरान जंग के कारण यह रूट अब सुरक्षित नहीं रहा है। खतरे को देखते हुए कोई भी तेल टैंकर वहां से नहीं गुजर रहा। दुनिया के कुल पेट्रोलियम का

20 फीसदी हिस्सा यहीं से गुजरता है। सऊदी अरब, इराक और कुवैत जैसे देश भी अपने निर्यात के लिए इसी पर निर्भर हैं। भारत अपनी जरूरत का 50 फीसदी कच्चा तेल और 54 फीसदी एलएनजी इसी रास्ते से मंगाता है। ईरान खुद इसी रूट से एक्सपोर्ट करता है। ईरान पर अमेरिका और इजराइल के हमलों के जवाब में, ईरान ने कतर, सऊदी अरब और कुवैत की ऑयल फैसिलिटीज पर ड्रोन हमले किए हैं। इन हमलों के कारण इन देशों को अपने उत्पादन में कटौती करनी पड़ी है। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर ने धमकी दी है कि वे क्षेत्र के अन्य ऊर्जा ठिकानों को भी निशाना बनाएंगे।

कच्चा तेल 10 दिन में 60 फीसदी चढ़ा- ब्रेंट क्रूड आज 25 फीसदी से ज्यादा चढ़कर 116 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है। 28 फरवरी को शुरू हुई जंग के बाद से अब तक 10 दिन में कच्चा तेल करीब 60 फीसदी महंगा हो चुका है। इससे पहले 2022 में रूस-यूक्रेन जंग के दौरान ये 100 डॉलर के पार निकला था। जानकारों का मानना है कि तेल की कीमतें 150 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकती हैं। इसका असर भारत में पेट्रोल-डीजल पर दिख सकता है। ये 5 से 6 रुपए लीटर तक महंगा हो सकता है। हालांकि

भारत सरकार का कहना है कि हमारे पास पर्याप्त तेल है। एक रिपोर्ट के अनुसार यह बैकअप इतना है कि अगर सप्लाई पूरी तरह रुक भी जाए तो भी देश की पूरी सप्लाई चेन 7 से 8 हफ्तों तक आसानी से चल सकती है। यानी आने वाले दिनों में पेट्रोल-डीजल और दूसरे पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स की कमी की ज्यादा चिंता नहीं है। अमेरिकी ट्रेजरी सचिव स्कॉट बेसेंट ने 6 मार्च को बताया था कि राष्ट्रपति ट्रम्प के ऊर्जा एजेंडे के तहत भारत को रूस से कच्चा तेल खरीदने की शर्तों के साथ छूट दी जा रही है।

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 10 मार्च 2026

> जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
>
> चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

शंकराचार्य के खिलाफ फिर पॉक्सो कोर्ट पहुंचे आशुतोष महाराज

● कहा-यात्रा सीतापुर पहुंचने से रोकी जाए, पीड़ित बटुक दहशत में

प्रयागराज (एजेंसी)। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के खिलाफ एक बार फिर आशुतोष महाराज कोर्ट पहुंचे हैं। सोमवार को प्रयागराज स्पेशल पॉक्सो कोर्ट में वाद दायर कर 'गौ प्रतिष्ठा धर्मयुद्ध यात्रा' रोकने की मांग की है। उन्होंने कहा- शंकराचार्य को सीतापुर पहुंचने से रोका जाए, क्योंकि उनके खिलाफ बयान दर्ज कराने वाले बटुक पड़ोसी हरदोई जिले के हैं। यात्रा से बटुक दहशत में हैं। इसी कोर्ट में आशुतोष महाराज ने अविमुक्तेश्वरानंद के खिलाफ बटुकों से यौन उत्पीड़न का वाद दाखिल किया था।

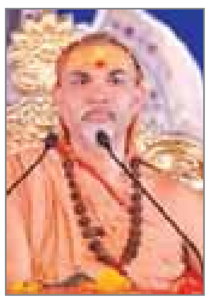

दरअसल, शंकराचार्य ने 7 मार्च को काशी से अपनी यात्रा शुरू की थी। यात्रा रायबरेली, उन्नाव होते हुए शाम को सीतापुर पहुंचेगी। गाय को राष्ट्र माता घोषित करने की मांग को लेकर यह यात्रा 11 मार्च को लखनऊ में समाप्त होगी। उधर, आशुतोष महाराज पर रविवार को चलती ट्रेन में हुए जानलेवा हमले के मामले में पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। पुलिस ने वारदात के वक्त ट्रेन में मौजूद 4 यात्रियों से पूछताछ भी की है। हालांकि, पूछताछ में क्या जानकारी सामने आई है, यह अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। आशुतोष महाराज रीवा एक्सप्रेस से गाजियाबाद से प्रयागराज जा रहे थे। उनका रिजर्वेशन एसी फर्स्ट में था। सिराथू रेलवे स्टेशन के पास टॉयलेट के पास उन पर अज्ञात शख्स ने हमला किया था। धारदार हथियार से नाक काटने की कोशिश की थी। आशुतोष महाराज वही हैं, जिन्होंने शंकराचार्य के खिलाफ बटुकों से यौन उत्पीड़न की एफआईआर दर्ज करवाई थी। आशुतोष ब्रह्मचारी महाराज का जन्म शामली के कांधला कस्बे के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता राजेंद्र पांडे दिल्ली रोड पर चलने वाली प्राइवेट बसों में कंडक्टर थे। आशुतोष महाराज कांधला के प्राचीन शाकुंभरी सिद्धपीठ मंदिर की कमेटी से जुड़े।

शराब घोटाला केस में केजरीवाल और सिसोदिया को लगा झटका

● दिल्ली हाईकोर्ट ने जारी किया नोटिस फिर से देना होगा जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। आबकारी नीति मामले में दिल्ली हाईकोर्ट ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और पार्टी नेता मनीष सिसोदिया को नोटिस जारी किया है। इस मामले में सभी 23 आरोपियों से सीबीआई की याचिका पर अपने जवाब दाखिल करने को कहा गया है। अगली सुनवाई 16 मार्च को होगी। सोमवार को सुनवाई करते हुए दिल्ली हाईकोर्ट ने सीबीआई और उसके जांच अधिकारी के खिलाफ ट्रायल कोर्ट की टिप्पणियों पर रोक लगाई। जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा ने राउज एवेन्यू कोर्ट को इस मामले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस की सुनवाई तब तक टालने का भी निर्देश दिया, जब तक कि ट्रायल कोर्ट के फैसले के खिलाफ सीबीआई की याचिका पर फैसला नहीं कर लिया जाता। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने मांग की थी कि हाईकोर्ट फिलहाल ये आदेश पास करे कि मनी लॉन्ड्रिंग वाले केस पर राउज एवेन्यू कोर्ट के इस फैसले का असर नहीं पड़ेगा। तुषार मेहता ने कहा कि यह राष्ट्रीय राजधानी के सबसे बड़े घोटालों में से एक है। वैज्ञानिक जांच की गई और साजिश के हर पहलू को साबित किया गया है। इसके बाद, हाईकोर्ट ने साफ किया कि जब तक इस केस का उच्च न्यायालय में निपटारा नहीं हो जाता, तब तक निचली अदालत में दिल्ली शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के मामले पर सुनवाई नहीं होगी। राउज एवेन्यू कोर्ट ने 27 फरवरी को अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया को आबकारी नीति मामले में 23 अन्य लोगों के साथ बरी कर दिया था।

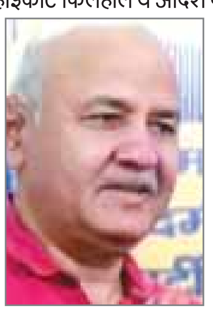

मेडिकल कॉलेजों में हड़ताल पर 8 हजार डॉक्टर

ना ओपीडी में मरीजों का इलाज और ना ही कोई सामान्य ऑपरेशन करेंगे

भोपाल (नप्र)। लंबित स्टाइपेंड संशोधन को लेकर जूनियर डॉक्टरों की सोमवार सुबह 9 बजे से हड़ताल हैं। इस कारण गांधी मेडिकल कॉलेज के स्त्री रोग विभाग में पीपीटीसीटी काउंसलिंग एंड टेस्टिंग सेंटर, फर्टिलिटी क्लिनिक, एएनसी रूम सुमित अन्य व्यवस्थाएं प्रभावित हो रही हैं। सीनियर डॉक्टर के साथ जूनियर डॉक्टर यहां की रिस्पांसिबिलिटी संभालते हैं। जूनियर डॉक्टरों के हड़ताल पर होने के कारण मरीज को इलाज के लिए लंबा इंतजार करना पड़ रहा है। वह सुबह से अपनी बारी के इंतजार में बैठे हैं। मरीज अनवर ने बताया कि वह सुबह से काफी परेशान हैं। पैरों में दर्द है और अन्य बीमारियों के कारण सुबह से इलाज के लिए भटक रहे हैं। वे आगे बोल पाते तब तक गार्ड ने रोक दिया। उधर, जूडा ने साफ कर दिया है कि उप मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ल से मुलाकात के बाद आगे की रणनीति तय की जाएगी। जूडा जबलपुर के प्रेसिडेंट डॉ. शुभम शर्मा आज दोपहर मंत्री शुक्ल से मिलेंगे।

लंबित स्टाइपेंड संशोधन को लेकर हड़ताल- मध्य प्रदेश के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में कार्यरत रेजिडेंट डॉक्टर लंबित स्टाइपेंड संशोधन को लेकर अपना विरोध जता रहे हैं। जूनियर डॉक्टर एसोसिएशन का कहना है कि जब तक उनकी मांगें नहीं मानी जाती हैं तब तक वे ओपीडी में सेवाएं नहीं देंगे। जेडीए ने यह भी साफ किया कि ऑपरेशन थिएटर (ओटी) में भी सिर्फ अति गंभीर मरीज होने पर ही सेवा देंगे। यानी प्रदेशभर के मेडिकल कॉलेजों में हर्निया, रॉड इंप्लांट जैसे सामान्य ऑपरेशन टल सकते हैं। इसका सीधा असर इन बीमारियों से पीड़ित मरीजों पर पड़ेगा।

मजबूरी में लड़ रहे जंग, जबरन थोपी गई है

● ईरान ने कहा-यह हमारी पसंद नहीं बल्कि मजबूरी है ● तुर्किये-साइप्रस और अजरबैजान पर हमले से इनकार ● इजराइली हमले में ईरान के नए सुप्रीम लीडर घायल

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। ईरान ने कहा है कि वह मजबूरी में जंग लड़ रहा है, यह उसकी पसंद नहीं है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने सोमवार को एक प्रेस ब्रीफिंग के दौरान कहा कि जंग देश पर जबरन थोपी गई है। जब उनसे सीजफायर के लिए मध्यस्थता की संभावना के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि फिलहाल इस तरह की बात करना गलत होगा। बघाई ने कहा कि इस समय सैन्य टकराव जारी है और ऐसे में देश की रक्षा के अलावा किसी दूसरे विषय पर चर्चा करना सही नहीं है। उन्होंने कहा कि ईरान ने इस जंग की शुरुआत नहीं की थी। उनके अनुसार देश को अपनी रक्षा के लिए लड़ना पड़ रहा है। इसके अलावा उन्होंने तुर्किये, साइप्रस और अजरबैजान पर हमले से भी इनकार किया है। उन्होंने कहा कि पिछले सप्ताह इन देशों की दिशा में ईरान की जमीन से कोई हमला शुरू नहीं किया गया। इस बीच टाइम्स ऑफ इजराइल ने बताया कि ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के बेटे मुजतबा खामेनेई घायल हो गए हैं। उन्हें बीती रात ईरान का नया सुप्रीम लीडर घोषित किया गया था।

टाइप-2 डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद योग

40 दिन के अभ्यास से दिखे सकारात्मक परिणाम ; योग के फायदे बताए एम्स भोपाल के डॉक्टर ने

भोपाल (नप्र)। टाइप 2 मधुमेह से जूझ रहे मरीजों के लिए नियमित योगासन बेहद लाभकारी साबित हो सकता है। एम्स भोपाल के फिजियोलॉजी विभाग के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. वरुण मल्होत्रा ने नई दिल्ली के हमदर्द इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयोजित व्याख्यान में में कहा कि प्रतिदिन योग अभ्यास से न केवल वजन और बॉडी मास इंडेक्स में कमी आती है, बल्कि इंसुलिन प्रतिरोध में भी सुधार देखा जाता है।

उन्होंने एक अध्ययन का हवाला देते हुए बताया कि 56 टाइप 2 मधुमेह रोगियों ने 40 दिनों तक नियमित योगासन किया, जिससे उनके स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव दर्ज हुए। एम्स के फिजियोलॉजी विभाग के डॉ. वरुण मल्होत्रा ने हमदर्द इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में व्याख्यान दिया।

योग का हृदय और मस्तिष्क पर वैज्ञानिक प्रभाव- डॉ. वरुण ने हमदर्द इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में एचआरवी और ईईजी को संशोधित करने में योग की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने कहा कि एचआरवी यानी हार्ट रेट वेरिएबिलिटी हृदय की धड़कनों के बीच समय के अंतर को मापती है, जबकि ईईजी मस्तिष्क की विद्युत गतिविधि को दर्शाती है। योग का नियमित अभ्यास इन दोनों प्रणालियों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और तनाव को कम करने में मदद करता है।

यह सत्र फिजियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. मोहम्मद इकबाल आलम द्वारा आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में डॉ. मल्होत्रा ने एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक डॉ. माधवानन्द कर के मार्गदर्शन में भागीदारी की।

40 दिन के योग अभ्यास से दिखे सकारात्मक परिणाम- व्याख्यान के दौरान डॉ. मल्होत्रा ने एक अध्ययन का उल्लेख किया। जिसमें टाइप 2 मधुमेह से पीड़ित 56 मरीजों को शामिल किया गया था। इन मरीजों ने लगातार 40 दिनों तक प्रतिदिन योगासन का अभ्यास किया।

अध्ययन में पाया गया कि नियमित योग अभ्यास से मरीजों के वजन और बॉडी मास इंडेक्स में कमी आई। इसके साथ ही कमर-कूल्हा अनुपात घटा और दुबले शरीर द्रव्यमान में वृद्धि हुई। खास बात यह रही कि योग के नियमित अभ्यास से इंसुलिन प्रतिरोध में भी सुधार देखा गया, जिससे मधुमेह नियंत्रण में मदद मिल सकती है।

मस्तिष्क में बढ़ती है सकारात्मक गतिविधि

योग के नियमित अभ्यास से मस्तिष्क के अग्र भाग में सकारात्मक गतिविधि बढ़ती है, जिससे प्रसन्नता की भावना उत्पन्न होती है और चिंता कम होती है। डॉ. मल्होत्रा के अनुसार, नियमित योग और ध्यान से मस्तिष्क की आदतों में सकारात्मक परिवर्तन संभव है, जिससे व्यक्ति मानसिक रूप से अधिक संतुलित और शांत बन सकता है।

तनाव से मुक्ति के लिए दिए व्यावहारिक सुझाव

व्याख्यान के अंत में उन्होंने तनाव से मुक्ति और बेहतर जीवनशैली के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव भी दिए। इनमें नियमित ध्यान, सकारात्मक सोच, एक समय में एक विचार पर ध्यान केंद्रित करना, संतुलित आहार, पर्याप्त नींद और नियमित व्यायाम शामिल हैं।

इसके अलावा उन्होंने सकारात्मक प्रतिज्ञापन और ध्यान तकनीकों जैसे हॉग-सौ एकाग्रता तथा ध्यान का भी उल्लेख किया। डॉ. मल्होत्रा ने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह शरीर और मन के संतुलन का वैज्ञानिक माध्यम है, जो स्वस्थ और संतुलित जीवन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कछुए की तरह धीमी-नियंत्रित सांस लेने का कनेक्शन दीर्घायु से

डॉ. मल्होत्रा ने बताया कि योग में श्वास तकनीकों का विशेष महत्व है। धीमी और गहरी श्वास, जैसे अनुलोम-विलोम, शरीर की विश्रांति प्रणाली को सक्रिय करती है और मन को शांत बनाती है। इसके विपरीत कपालभाति जैसी तीव्र श्वास तकनीक शरीर की सक्रियता और चयापचय को बढ़ाती है। इससे वजन प्रबंधन में भी मदद मिल सकती है। उन्होंने बंदर और कछुए की श्वसन दर का उदाहरण देते हुए समझाया कि धीमी और नियंत्रित श्वास दीर्घायु और मानसिक एकाग्रता से जुड़ी होती है। डॉ. मल्होत्रा ने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह शरीर और मन के संतुलन का वैज्ञानिक माध्यम है।

बंगाल पहुंचे सीईसी ज्ञानेश कुमार, कालीघाट में की पूजा

● लोगों ने गो-बैक के पोस्टर लहराए, काले झंडे भी दिखाए

कोलकाता (एजेंसी)। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार रविवार शाम को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव की तैयारियों का रिव्यू करने कोलकाता पहुंचे। 3 दिन चलने वाली चुनाव आयोग की फुल बेंच मीटिंग के बीच सोमवार को ज्ञानेश कुमार कालीघाट में पूजा करने पहुंचे। मंदिर के बाहर मौजूद प्रदर्शनकारियों ने गो बैक के पोस्टर और काले झंडे दिखाए।

इसके पहले रविवार को भी कोलकाता पहुंचने पर कुछ लोग उनके काफिले के सामने झंडे लेकर पहुंचे और नारेबाजी करते दिखे। इधर, बीजेपी के एक डेलीगेशन ने सोमवार को इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया की फुल बेंच से मुलाकात की और मांग की कि 2026 का पश्चिम बंगाल असेंबली चुनाव तीन फेज में ही कराया जाए। पश्चिम बंगाल विधानसभा का कार्यकाल 7 मई को खत्म होने वाला है। 294 सीटों पर अप्रैल में चुनाव होने की उम्मीद है। 2021 में टीएमसी ने 215 सीटें जीतकर सरकार बनाई थी।

बातचीत से हल निकलेगा, हम शांति के पक्ष में हैं

इजरायल-ईरान जंग पर भारत की कड़ी नजर, संसद में बोली सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद में केंद्र सरकार ने सोमवार को पश्चिम एशिया के तनाव पर आधिकारिक बयान दिया। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने राज्यसभा में इजरायल-ईरान युद्ध पर बयान देते हुए कहा कि खाड़ी देशों में हालात चिंताजनक हैं और भारत शांति के पक्ष में है। संसद में पश्चिम एशिया की मौजूदा स्थिति पर विदेश मंत्री एस जयशंकर ने राज्यसभा में बयान देते हुए कहा कि 28 फरवरी से क्षेत्र में तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है और खाड़ी के कई देशों में हालात चिंताजनक हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार लगातार स्थिति पर नजर बनाए हुए है और वहां रह रहे भारतीयों की सुरक्षा उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस मुद्दे पर सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति की बैठक में भी विस्तार से चर्चा की गई थी और सभी संबंधित विभागों को जरूरी निर्देश दिए गए हैं। विदेश मंत्री ने कहा,पश्चिम एशिया में हो रहे घटनाक्रम सभी के लिए गहरी चिंता का विषय हैं और भारत का मानना है कि किसी भी विवाद का समाधान संवाद और कूटनीतिक प्रयासों से ही निकाला जाना चाहिए। सरकार ने हालात पर नजर रखने के लिए एक स्पेशल कंट्रोल रूम भी बनाया है जो क्षेत्र में मौजूद भारतीयों से संपर्क बनाए रखने व सहायता उपलब्ध कराने का काम कर रहा है।

● **भारतीय दूतावास और राजनयिक दिन-रात कर रहे काम-** उन्होंने यह भी बताया कि ईरान में फंसे भारतीय छात्रों को दूतावास के जरिए मदद दी गई और उन्हें सुरक्षित बाहर निकालने के लिए वैकल्पिक रास्तों का इस्तेमाल किया गया। कई छात्रों को आर्मेनिया के रास्ते भारत लाने की व्यवस्था की गई। विदेश मंत्री ने कहा कि संकट के समय भारतीय दूतावास और राजनयिक मिशन दिन-रात काम कर रहे हैं ताकि जरूरतमंद भारतीयों तक मदद पहुंचाई जा सके। राज्यसभा में बयान के दौरान उन्होंने कहा कि कतर, कुवैत, ओमान और बहरीन समेत खाड़ी क्षेत्र के कई देशों में भारत सक्रिय रूप से संपर्क बनाए हुए है। जिन भारतीयों को सहायता की जरूरत है, उनके लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी खाड़ी देशों के नेताओं से बातचीत की है और राजनयिक माध्यमों से लगातार संवाद जारी है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि मौजूदा परिस्थितियों में ईरान के शीर्ष नेतृत्व से संपर्क करना मुश्किल है।

स्पेशल कंट्रोल रूम बनाया गया: विदेश मंत्री

विदेश मंत्री ने कहा कि हमारा मानना है कि सभी मुद्दों के समाधान के लिए बातचीत और विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने राज्यसभा में कहा कि पश्चिम एशिया में संघर्ष शुरू होने के बाद से भारत सरकार वहां की स्थिति का लगातार आंकलन कर रही है। स्पेशल कंट्रोल रूम बनाया गया है। भारत शांति के पक्ष में है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि भारत शांति, संवाद और कूटनीति के जरिए समाधान का समर्थक है तथा मौजूदा परिस्थितियों में तनाव कम करने, संयम बरतने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की वकालत करता है। जयशंकर ने बताया कि खाड़ी देशों में करीब 1 करोड़ भारतीय रह रहे हैं। हम भारतीयों से लगातार संपर्क में है।

बाग उमराव दूल्हा इलाके में आग लगी

रहवासी इलाका होने से दहशत फैली, 10 किमी दूर से दिखा धुआं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बाग उमराव दूल्हा इलाके में सोमवार दोपहर 3.30 बजे आगजनी की बड़ी घटना हो गई। आग तीन मंजिला मकान की छत पर लगी। जानकारी मिलते ही आसपास के फायर स्टेशनों से दमकलें मौके पर पहुंची। इसके बाद आग काबू में आ सकी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि तीन मंजिला बिल्डिंग के ऊपरी हिस्से में तेल के टिन रखे थे। जिसमें अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग फैलने लगी। तेल होने की वजह से पूरे इलाके में धुआं ही धुआं हो गया। आग की लपटें भी 10 फीट तक ऊपर उठने लगी। इससे आसपास रहने वाले लोगों में हड़कंप मच गया। आग को बुझाने के लिए तुरंत फायर स्टेशन से दमकलें मौके पर पहुंची। इधर, लोग भी आग को काबू पाने में जुट गए।

बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर मीट की दुकान- यह इतनी तेज थी कि 10 किलोमीटर दूर से भी धुआं दिखाई दे रहा था। मौके पर दमकलें पहुंची हैं, जो आग पर काबू पा रही है। इस बिल्डिंग के नीचे मीट की दुकान है।

भारत की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना होगा : आरती दुबे

भोपाल। हिन्दी लेखिका संघ की मासिक साहित्यिक गोष्ठी 'नारी और हास्य' विषय पर विश्व संवाद केंद्र, शिवाजी नगर में गरिमामय वातावरण में संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. संतोष श्रीवास्तव ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा और वैदिक साहित्य की व्याख्याता डॉ. आरती दुबे उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य हिन्दी लेखिका संघ की प्रांताध्यक्ष डॉ. साधना गंगराड़े ने दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य समाज की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है और महिला लेखिकाएँ आज विभिन्न विषयों पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

मुख्य अतिथि डॉ. आरती दुबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब भारतीय परंपरा की चर्चा होती है तो साहित्य के सभी मंच वेदपीठ बन जाते हैं। उन्होंने कहा कि वैदिक वाङ्मय में नारी की छवि अत्यंत अनुकरणीय है। वेद मिथक नहीं हैं, बल्कि उनका संस्कार और डीएनए आज भी हमारे भीतर विद्यमान है। भारत केवल कृषि प्रधान ही नहीं, बल्कि ऋषि प्रधान देश भी है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. संतोष श्रीवास्तव ने सभी लेखिकाओं की रचनाओं की सराहना करते हुए कहा कि नारी सम्मान के क्षेत्र में अभी बहुत कार्य होना शेष है। समाज से बाल विवाह और दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों का पूरी तरह अंत होना चाहिए तथा विधवा विवाह को भी सामाजिक स्वीकृति मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज भी स्त्री पितृसत्तात्मक ढांचे के बीच अपनी पहचान और अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है, इसलिए इन मुद्दों पर निरंतर संवाद आवश्यक है। इस अवसर पर वरिष्ठ लेखिका श्रीमती शीला श्रीवास्तव के बाल कहानी संग्रह 'हौसलों की उड़ान' का विमोचन भी किया गया। गोष्ठी में हास्य और नारी विषय पर रचनापाठ का क्रम भी अत्यंत सरस और प्रभावी रहा।

संदीप राशिनकर को शब्दान्वेषी कला भूषण व्यंग्य यात्रा सम्मान, दिल्ली में होंगे सम्मानित

इंदौर। शहर के चित्रकार संदीप राशिनकर को उनके साहित्य केंद्रित दीर्घ कला अवदान के लिए शब्दान्वेषी कला भूषण व्यंग यात्रा सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। 'व्यंग्य यात्रा' के संपादक प्रेम जनमेजय ने बताया कि संदीप जी द्वारा साहित्य को दिए गए अभिनव और प्रदीर्घ अवदान और उसकी महत्ता को रेखांकित करने के लिए विशेष तौर पर इस सम्मान की घोषणा की गई है। 21 मार्च को दिल्ली के हिंदी भवन में आयोजित व्यंग्य यात्रा सम्मान समारोह में उन्हें सम्मानित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि साहित्य, कला में अपने नवाचार और अपने निरंतर सक्रिय अवदान के चलते संदीप इसके पूर्व भी जीवन गौरव के साथ ही देश भर में अनेकों महत्वपूर्ण सम्मानों से सम्मानित हो चुके है।

रिक्शा से शराब के 100 पाव जब्त

इंदौर। रंगपंचमी पर आबकारी विभाग ने ड्रायडे घोषित किया था। इसके बावजूद शराब तस्कर सक्रिय थे। तस्करी पर रोक लगाने मुहिम चलाई जा रही थी। इस दौरान विभाग ने आटो को पकड़ा। आटो से 100 पाव देशी शराब जब्त की है। सूचना मिली थी कि रेडिसन चौराहे के पास ऑटो से शराब बेची जा रही है। सूचना मिलते ही तत्काल विभाग की मालवा मिल और छावनी की टीम मौके पर पहुंची। टीम ने वहां खड़े ऑटो (एमपी-09-एएम-5866) को घेराबंदी कर पकड़ा। दो गत्ते की पेटियों में 50 देशी मसाला और 50 पाव प्लेन बरामद हुई। रंगपंचमी के पहले भी बाणगंगा पुलिस ने अवैध शराब बिक्री को लेकर बड़ी कार्रवाई की। पुलिस ने टिगरिया बादशाह के हरिजन मोहल्ला स्थित मकान पर दबिश देकर 7 पेटी अंग्रेजी शराब जब्त की है। इस क्रम में निलेश पिता मदनलाल परिहार के मकान से देसी तथा अंग्रेजी शराब की 7 पेटियां जप्त की गईं। उल्लेखनीय है कि इसके पहले हजारों किलो रंग गुलाल भी जब्त किया था, जो अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई मानी जाती है।

खाई में गिरे दो युवकों की मौत

इंदौर। पर्यटन स्थल तिंछा फॉल पर शनिवार तड़के एक सनसनीखेज हादसा हो गया। ये खाई के मुहाने पर बैठकर शराब पी रहे देपालपुर के व्यापारी अशोक और ड्राइवर सुमित की 500 फीट नीचे गिरने से मौत हो गई। घटना के समय उनके साथ आरओ प्लांट का मालिक अभिनय पाठक भी मौजूद था, जिसने पुलिस को सूचना दी। क्रेन और ग्रामीणों की मदद से रस्सियों के सहारे शवों को कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया। अभिनय के अनुसार, सुमित का पैर फिसलने पर अशोक उसे बचाने गया और दोनों असंतुलित होकर गिर गए। हालांकि, परिजनों ने इस घटना को हत्या करार दिया। उनका कहना है कि सुमित और अशोक रात 10 बजे अभिनय के साथ भोपाल जाने का कहकर घर से निकले थे, फिर वे तिंछा फॉल कैसे पहुंचे! परिजनों ने शवों के गले पर निशान होने और घटनास्थल पर रात में लड़ाई-झगड़े की आवाजें आने का दावा करते हुए निष्पक्ष जांच की मांग की है। पुलिस फिलहाल पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है।

13 दिन में 2517 वाहनों पर कार्रवाई

इंदौर। यातायात व्यवस्था को बनाने ट्रैफिक पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। 21 फरवरी से 5 मार्च तक चलाए गए अभियान में पेट्रोलिंग टीमों ने अपने-अपने क्षेत्रों में नो पार्किंग का निरीक्षण किया। 13 दिन में नो-पार्किंग में खड़े 2517 वाहनों पर व्हील लॉक लगाए गए। पुलिस उपायुक्त (यातायात) के निर्देशन में चारों ट्रैफिक जोन में पेट्रोलिंग टीमें सक्रिय हैं। टीम का मुख्य उद्देश्य व्यस्त मार्गों, बाजारों और ट्रैफिक दबाव वाले क्षेत्रों में अव्यवस्थित पार्किंग को नियंत्रित कर यातायात को सुगम बनाना है। इन क्षेत्रों में चली मुहिम। यातायात जोन-1 में कालानी नगर, एयरपोर्ट रोड, बड़ा गणपति से गौराकुंड, इमली बाजार, अंतिम चौराहा, मरीमाता से बाणगंगा, जोन-2 में मालवामिल, पाटनीपुरा, भमोरी, एलआईजी, रसोमा, मेदांता रोड और विजय नगर, जोन-3 में जेलरोड, एमटीएच, आरएनटी मार्ग, एमजी रोड, व्हाइट चर्च से दवा बाजार, मधुमिलन, जंजीरवाला, पलासिया से व्हाइट चर्च और घंटाघर से गीताभवन रोड, जोन-4 में सपना संगीता, टॉवर चौराहा से खातीवाला टैंक, सिंधी कॉलोनी, राजवाड़ा, जवाहर मार्ग, खजूरी बाजार, सराफा क्षेत्र और भंवरकुआ से भोलाराम उस्ताद मार्ग तक अभियान चलाया गया। पेट्रोलिंग टीमों ने पीए सिस्टम, बॉडी वॉर्न कैमरा, क्रेन, व्हील लॉक और पीओएस मशीन की मदद से नो पार्किंग वालों पर कार्रवाई की गई। कई स्थानों पर घोषणा कर वाहनों को हटवाया भी गया।

घर से पकड़ी 6 पेटी शराब

इंदौर। ड्रायडे पर सारे शहर की शराब दुकानें बंद थी। इस दिन महंगे दाम पर शराब बेचने तस्कर सक्रिय हो गए थे। आबकारी विभाग की टीम लगातार तस्करों पर नजर रखी हुई थी। इसी बीच, द्वारकापुरी पुलिस ने गुरुशंकर नगर स्थित घर पर छापा मारा। यहां रहने वाले शिवम पिता मनोहर भार्गव के घर से पुलिस ने 8 पीएम की 12 बॉटल, बैगपाइपर की 22 बॉटल, 150 क्वार्टर देशी मसाला कुल 53 बल्क लीटर (6 पेटी) मदिरा जब्त की। जब्त मदिरा की कीमत 50 हजार रुपए है। इसी प्रकार, आजाद नगर पुलिस ने दिनेश पिता राधेश्याम अजनारे निवासी मूसाखेड़ी से 18 क्वार्टर देशी प्लेन, लसूड़िया पुलिस ने संजय पिता लक्ष्मणसिंह चौहान निवासी मांगलिया से 21 क्वार्टर प्लेन, तुकोगंज पुलिस ने ऋषि पिता निलेश चौहान निवासी रामानंद नगर से 28 क्वार्टर प्लेन तथा छत्रीपुरा पुलिस ने पूनमचंद पिता कीमाराम सुतार निवासी बिचौली मर्दाना को गंगवाल बस स्टैंड से 48 केन बीयर के साथ गिरफ्तार किया है।

बैंक का बाउंसर बताकर महिला को पीटा

इंदौर। दो महिलाएं खुद को बैंक का बाउंसर बताकर एक अन्य महिला के घर में घुसी और विवाद करने लगीं। जब पीड़िता ने पहचान पत्र मांगा तो दोनों ने मारपीट की। लसूड़िया पुलिस के अनुसार श्रीनाथ टाउनशिप निवासी गुंजा पति कलम पालीवाल निवासी श्रीनाथ टाउनशिप ने शिकायत दर्ज कराई है कि शनिवार दोपहर वह अपने घर पर थीं। इसी दौरान सुषमा दुबे और बुलबुल नामक महिलाएं उनके घर पहुंचीं और बाउंसर बताने लगीं। जब गुंजा ने उनसे बैंक से जुड़े होने का प्रमाण दिखाने को कहा तो दोनों महिलाएं भड़क गईं। आरोप है कि दोनों ने अपशब्द कहते हुए मारपीट शुरू कर दी और बाल पकड़कर गुंजा को पटक दिया। शोर सुनकर पड़ोस में रहने वाली रेशमा और नेहा मौके पर पहुंचीं और बीच-बचाव किया। इसके बाद दोनों आरोपी महिलाएं वहां से भाग गईं। बताते हैं, फरियादी का बैंक से लिए लोन को लेकर विवाद चल रहा है।

प्रश्न पत्र बिगड़ा तो तनाव में फांसी लगाई

इंदौर। पिता की समझाइश के बाद भी 12वीं का छात्र तनाव में चल रहा था। उसका 7 मार्च को फिजिक्स, केमिस्ट्री का प्रश्न पत्र बिगड़ गया था। इसके बाद से वह परेशान चल रहा था। रविवार को उसने अपने कमरे में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। मृतक ओमेक्स सिटी में रहने वाला नचिकेत (17) पिता राजेश कामदार है। लसूड़िया पुलिस के अनुसार,पेपर बिगड़ने के बाद वह कमरे आया और उसके बाद बाहर नहीं निकला था। छोटे भाई ने उसे फंदे पर लटका देखा। परिजनों ने बताया कि वह पढ़ाई में होशियार था पर उसके दो पेपर बिगड़ गए थे। नचिकेत निजी कोचिंग में भी पढ़ रहा था। पुलिस ने छात्र का शव उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया है और वे शव लेकर सलकनपुर के लिए रवाना हो गए हैं। बता दें कि नचिकेत के पिता राजेश राऊ के कॉलेज में टीचर हैं और मां पटवारी हैं। उनकी पोस्टिंग शिप्रा इलाके में है। परिवार सलकनपुर (सीहोर) का रहने वाला है। पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है।

पारिवारिक विवाद में महिला ने फांसी लगाई

इंदौर। परिवार के सदस्यों से बात कर महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। महिला का लंबे समय से पारिवारिक विवाद चल रहा था। मृतक का नाम आयुषी (33) पति अर्पित केसरे निवासी अरावली परिसर कनाड़िया है। आयुषी को परिजनों ने फंदे पर देखा था। इसके बाद उसे नजदीक के अस्पताल लेकर पहुंचे थे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने बताया कि वह शनिवार को सास-ससुर से बात कर रही थी। इसी दौरान वह उठकर कमरे में चली गई। बाद में काफी देर तक बाहर नहीं आई। आयुषी के पति निजी कंपनी में काम करते हैं। कनाड़िया पुलिस को मौके से किसी तरह का सुसाइड नोट नहीं मिला है।

रंगपंचमी पर सात दशक पुरानी परंपरा निभाई, साढ़े 5 लाख लोगों ने रंग खेला

प्रशासन ने सुरक्षा के इंतजाम किए, पूरे मार्ग पर पुलिस बल तैनात रहा

इंदौर। रंगपंचमी का उत्साह इस बार भी शहर में अपने पूरे शबाब पर नजर आया। शहर की ऐतिहासिक और करीब 77 साल पुरानी गेर की परंपरा के तहत रविवार दोपहर राजवाड़ा क्षेत्र में रंग, गुलाल और उत्साह की अनोखी तस्वीर देखने को मिली। हजारों की संख्या में लोग इस गेर में शामिल हुए और रंगों की बारिश के बीच ढोल-ताशों की गूंज से पूरा शहर गूंज उठा। करीब सात दशक से भी ज्यादा समय से चली आ रही रंगपंचमी की गेर इंदौर की सांस्कृतिक पहचान बन चुकी है। रंग, गुलाल, संगीत और उत्साह के साथ मनाया जाने वाला यह आयोजन शहर की गंगा-जमुनी संस्कृति और उत्सवधर्मिता का प्रतीक है, जिसे देखने के लिए हर साल देश-विदेश से लोग इंदौर पहुंचते रहे हैं। आयोजन को देखते हुए प्रशासन ने सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए और पूरे मार्ग पर भारी पुलिस बल तैनात रहा।

रंगपंचमी के अवसर पर इंदौर की प्रसिद्ध गेर इस बार भी पूरे उत्साह और परंपरागत अंदाज में निकाली गई। शहर की दशकों पुरानी परंपरा को निभाते हुए गिरी परिवार की ओर से गेर का पहला जुलूस निकाला गया, जो शहर के हृदय स्थल राजवाड़ा पहुंचा।

इस दौरान सड़कों पर हजारों लोग रंग और गुलाल में सराबोर होकर जश्न मनाते नजर आए। ढोल-ताशों की गूंज और पारंपरिक वेशभूषा में शामिल लोग इस उत्सव को और भी खास बना रहे थे। इस ऐतिहासिक आयोजन को देखते हुए पुलिस और जिला प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद नजर आया।

पूरे रूट पर 500 सीसीटीवी

गेर के पूरे मार्ग पर करीब 500 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे। ड्रोन कैमरों के जरिए लगातार निगरानी की गई। आयोजन को सुरक्षित और शांतिपूर्ण बनाए रखने के लिए करीब 4000 पुलिसकर्मियों को तैनात रहे। इसके साथ ही सादी वर्दी में भी पुलिसकर्मियों ने भीड़ के बीच नजर रखी। किसी भी तरह की शरारत या उपद्रव को तुरंत रोकने के उपाय किए गए गए थे। इस दौरान प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों, पुलिस विभाग और नगर निगम के अधिकारियों ने भी मौके पर मौजूद रहकर व्यवस्थाओं पर नजर रखी। भागीरथपुरा क्षेत्र में हुई घटना के चलते वहां के जनप्रतिनिधियों ने इस बार गेर में शामिल न होने का फैसला किया था।

हाई कोर्ट की बाइक टैक्सी सेवाओं पर सख्ती, कंपनियों से जवाब मांगा

सुरक्षा के इंतजाम पूछे, दोपहिया वाहनों में जीपीएस क्यों नहीं

इंदौर। शहर में चल रही बाइक टैक्सी सेवाओं को लेकर मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने कड़ा रुख अपनाया है। कोर्ट ने ओला, उबर और रैपिडो जैसी कंपनियों के साथ ही केंद्र और राज्य सरकार के संबंधित विभागों को नोटिस जारी कर सुरक्षा व्यवस्था और नियमों के पालन पर जवाब मांगा है। शुक्रवार को सुनवाई के दौरान कोर्ट ने केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के प्रमुख सचिव, मध्य प्रदेश के प्रमुख सचिव गृह विभाग और इन कंपनियों से पूछा कि यात्रियों की सुरक्षा के लिए क्या इंतजाम किए गए हैं। साथ ही यह भी सवाल उठाया गया कि इन दोपहिया वाहनों में जीपीएस सिस्टम क्यों नहीं लगाया गया है।

निजी उपयोग के लिए पंजीकृत

यह मामला कानून के छात्र आयुष जाट द्वारा दायर जनहित याचिका से सामने आया है। एडवोकेट अमित सिंह सिसोदिया के जरिए दाखिल इस याचिका में बताया गया है कि शहर में बाइक टैक्सी के रूप में चल रहे कई दोपहिया वाहन निजी उपयोग के लिए पंजीकृत हैं, जबकि उनका उपयोग व्यावसायिक रूप से किया जा रहा है। ऐसे में किसी दुर्घटना की स्थिति में यात्री को बीमा का लाभ मिलना मुश्किल हो जाता है और जिम्मेदारी तय करना भी कठिन हो जाता है।

लाइव लोकेशन ट्रैक असंभव - याचिका में यह भी कहा गया है कि कई वाहनों में जीपीएस नहीं होने से उनकी लाइव लोकेशन ट्रैक करना संभव नहीं होता, जिससे यात्रियों की सुरक्षा पर सवाल खड़े होते हैं। इसके अलावा यह भी स्पष्ट नहीं होता कि चालक के पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस है या नहीं और वाहन का पंजीकरण नियमों के अनुसार है या नहीं। गौरतलब है कि अक्टूबर 2025 में हाई कोर्ट की युगलपीठ ने राज्य सरकार को मोटर व्हीकल एक्ट की धारा 66 का सख्ती से पालन कराने के निर्देश दिए थे। हालांकि याचिका में दावा किया गया है कि अब तक इन आदेशों का प्रभावी पालन नहीं हुआ है।

वाहनों की अलग पहचान

जनहित याचिका में यह भी मांग की गई है कि व्यावसायिक रूप से इस्तेमाल होने वाले दोपहिया वाहनों पर स्पष्ट रूप से वाहन का पंजीकरण नंबर, चालक का लाइसेंस, परमिट और बीमा से जुड़ी जानकारी प्रदर्शित की जाए। इसके साथ ही ऐसे वाहनों की नंबर प्लेट सामान्य वाहनों से अलग रखने की व्यवस्था भी लागू की जाए, ताकि उनकी पहचान आसानी से हो सके।

इंदौर-भुवनेश्वर फ्लाइट बंद, 1 अप्रैल से इंडिगो का बुकिंग बंद करने का निर्णय

साल भर में आठ शहरों की उड़ानें बंद, सांसद ने बढ़ाने की बैठक की

इंदौर। यहां से भुवनेश्वर के लिए उड़ान भरने वाली इंडिगो एयरलाइंस को बंद किया जा रहा है। इस उड़ान की बुकिंग भी 1 अप्रैल से बंद कर दी गई। हर दिन की उड़ान को दूसरी जगह भेजा जा रहा है। इंदौर एयरपोर्ट पर यात्री बढ़ते जा रहे हैं और उड़ानें कम हो रही हैं। साल भर में आठ शहरों की उड़ानें बंद हो गई हैं। इंदौर से भुवनेश्वर उड़ान 70% फुल रहती थी। उड़ान बंद होने की जानकारी हाल ही में सामने आई। कई यात्रियों ने पुरी और आसपास घूमने के लिए पैकेज करवा रखे हैं। एयरलाइंस पूरा पैसा वापस देने और नई उड़ान में जगह देने के लिए तैयार है। पहले भुवनेश्वर से इंदौर आने में दो घंटे अब सात से आठ घंटे लग जाएंगे। इधर, ईरान-इजराइल के बीच जारी युद्ध के कारण इंदौर की हवाई सेवाओं पर असर लगातार बना हुआ है। सुरक्षा कारणों से दुबई एयरपोर्ट से संचालन प्रभावित होने के चलते शारजाह और इंदौर के बीच चलने वाली नियमित उड़ान बीते शनिवार से बंद है। शनिवार को भी यह फ्लाइट निरस्त रहेगी।

प्रबंधन ने बताया कि यह उड़ान दिल्ली से इंदौर आकर शारजाह के लिए रवाना होती है और वापसी में शारजाह से इंदौर होते हुए दिल्ली लौटती है। ऐसे में उड़ान बंद रहने से इंदौर के साथ- साथ दिल्ली की हवाई सेवा भी प्रभावित हो रही है। लगातार कई दिनों से उड़ानें रद्द होने के कारण कई यात्री दुबई और शारजाह में फंसे हुए हैं। इधर, प्रबंधन सूत्रों ने कहा कि शारजाह से भारत के लिए कुछ उड़ानें शुक्रवार को संचालित हुई हैं। उम्मीद कर रहे हैं कि एक-दो दिनों में एयर इंडिया एक्सप्रेस इंदौर से भी अपनी उड़ान का संचालन शुरू कर सकती है। इससे पहले इंदौर-नासिक, इंदौर-उदयपुर, इंदौर-जोधपुर, इंदौर-मुंबई, इंदौर-दिल्ली, इंदौर-हैदराबाद, इंदौर-गाजियाबाद, इंदौर-बेलगावी की उड़ानें बंद हो चुकी हैं।

चार्टर जारी, नियमित नहीं- ईरान और अमेरिका-इजराइल के बीच चल रहे युद्ध के चलते यूएई के भी कई शहरों में हमले हुए हैं, जिससे वहां के प्रमुख एयरपोर्ट्स को शुरुआती दिनों में बंद कर दिया गया था, लेकिन अब यहां से उड़ानों का संचालन दोबारा शुरू हो गया है। यहां से भारत के प्रमुख शहरों के लिए भी उड़ानें संचालित हो रही हैं, लेकिन शारजाह से इंदौर के बीच आज लगातार आठवें दिन भी उड़ानों को निरस्त किया गया है। इसके कारण कई यात्री वहां फंसे हुए हैं। इसे देखते हुए इंदौर एयरपोर्ट डायरेक्टर सुनील मगीरकर ने एयर इंडिया एक्सप्रेस के स्थानीय अधिकारियों के साथ ही मुख्यालय को मेल करते हुए कहा है कि इंदौर की उड़ान को तुरंत शुरू किया जाए, ताकि वहां फंसे यात्री सकुशल घर लौट सकें।

सांसद ने उड़ाने बढ़ाने बैठक की

विमानतल पर हवाई सेवाओं के विस्तार और नई उड़ानों की संभावनाओं को लेकर सांसद शंकर लालवानी ने विमान कंपनियों के अधिकारियों के साथ बैठक की। इसमें इंदौर से संचालित उड़ानों की संख्या बढ़ाने, नई फ्लाइट्स शुरू करने और कुछ उड़ानों में की जा रही संभावित कटौती पर चर्चा की गई। सांसद ने कहा कि इंदौर तेजी से विकसित हो रहे शहरों में शामिल है, इसलिए किसी भी परिस्थिति में एयरलाइंस कंपनियां यहां से अपनी सेवाओं में कमी न करें। बढ़ती औद्योगिक, व्यापारिक और पर्यटन गतिविधियों को देखते हुए यहां से प्रमुख शहरों के लिए अधिक से अधिक उड़ानों का संचालन जरूरी है। सांसद ने कंपनियों के प्रतिनिधियों से नई फ्लाइट्स शुरू करने और मौजूदा उड़ानों की संख्या बढ़ाने पर गंभीरता से काम करने का आग्रह किया। उनका कहना था कि मजबूत हवाई कनेक्टिविटी से इंदौर ही नहीं, बल्कि पूरे मालवा-निमाड़ के व्यापार, उद्योग, पर्यटन और निवेश को भी नई गति मिलेगी। बैठक में यह सहमति बनी कि इंदौर की हवाई कनेक्टिविटी को और मजबूत बनाने एयरपोर्ट प्रबंधन और विमान कंपनियां आपसी समन्वय के साथ प्रयास करेंगी।

स्कॉर्पियो का कहर, युवक की मौत, दोस्त गंभीर, आरोपी चालक फरार

इंदौर। छत्रीपुरा इलाके में रविवार सुबह तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने दो युवकों को टक्कर मार दी। हादसे में 19 वर्षीय तनवीर खान की इलाज के दौरान मौत हो गई, जबकि उसका दोस्त फैजान मंसूरी गंभीर घायल का निजी अस्पताल में इलाज जारी है। पुलिस के अनुसार यह हादसा रविवार सुबह 4 से 5 बजे के बीच सिलावटपुरा स्थित गणेश मंदिर के पास हुआ। उस समय इलाके में कुछ युवक सेहरी के लिए बाहर खड़े थे। तभी तेज गति से आई स्कॉर्पियो ने तनवीर और फैजान को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद चालक गाड़ी समेत मौके से फरार हो गया। घटना के बाद दोनों घायलों को तुरंत यूनिक अस्पताल ले जाया गया, जहां दोपहर में तनवीर ने दम तोड़ दिया। तनवीर अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था और उसके पिता दुकान पर काम करते हैं। वहीं घायल फैजान मंसूरी के पिता इलाके में बेकरी चलाते हैं। परिजनों के मुताबिक, टक्कर मारने वाली स्कॉर्पियो पास में लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई है। पुलिस ने फुटेज जब्त कर लिए हैं और उसके आधार पर वाहन और चालक की पहचान करने की कोशिश की जा रही है।

5 किलोमीटर तक किया पीछा

प्रत्यक्षदर्शी इरफान ने बताया कि हादसे के बाद उसने अपनी बाइक से स्कॉर्पियो का करीब 5 किलोमीटर तक पीछा भी किया। आरोपी चालक गाड़ी को गंगवाल बस स्टैंड, महूनाका और फूटीकोठी होते हुए चंदन नगर की तरफ ले गया। इसके बाद वह धार रोड की ओर भाग निकला। तेज रफ्तार होने के कारण वह गाड़ी का नंबर नहीं देख पाया। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर स्कॉर्पियो की पहचान कर आरोपी चालक को जल्द पकड़ने की कोशिश की जा रही है। इधर, बड़ा गणपति क्षेत्र में चेकिंग के दौरान दो कारों की टक्कर में युवक घायल हो गया, जबकि रंगपंचमी के दिन मालवा मिल चौराहे पर ई-रिक्शा पलट गया। हालांकि इस हादसे में किसी को गंभीर चोट नहीं आई।

बर्थडे पर बदमाशों से स्वागत कराने वाला हेड कॉन्स्टेबल निलंबित हुआ

पुलिस कमिश्नर की कार्रवाई, बदमाशों साथ फोटो भी खिंचवाए

इंदौर। परदेशीपुरा क्षेत्र में पदस्थ एक हेड कॉन्स्टेबल का जन्मदिन मनाने का वीडियो सामने आने के बाद पुलिस विभाग ने कार्रवाई की है। गुरुवार को हेड कॉन्स्टेबल जीतू सरदार ने अपना जन्मदिन मनाया, जिसमें संयोगितागंज क्षेत्र के तीन बदमाश भी पहुंच गए। उन्होंने हेड कॉन्स्टेबल को माला पहनाई और साथ में फोटो व वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिए। वीडियो वायरल होने के बाद मामला वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुंचा। इसके बाद शनिवार रात हेड कॉन्स्टेबल जीतू सरदार को निलंबित कर दिया गया। एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि परदेशीपुरा थाने में पदस्थ हेड कॉन्स्टेबल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ था, जिसमें उनकी कथित रूप से कुछ बदमाशों के साथ नजदीकियां नजर आ रही थीं। वीडियो सामने आने के बाद मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच की गई और प्रारंभिक जांच के आधार पर उन्हें निलंबित कर दिया गया। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि किसी भी पुलिसकर्मी की आपराधिक तत्वों से सांठगांठ किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जानकारी के मुताबिक गुरुवार को हेड कॉन्स्टेबल जीतू सरदार के जन्मदिन समारोह के दौरान कई लोग वहां मौजूद थे। इसी दौरान संयोगितागंज क्षेत्र में रहने वाले सगे भाई अक्रांत और आयुष अपने रिश्तेदार विकास के साथ वहां पहुंचे और हेड कॉन्स्टेबल के साथ फोटो खिंचवाए। बताया जा रहा है कि तीनों के खिलाफ संयोगितागंज थाने में गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। अक्रांत और आयुष के पिता दीनू निगरानीशुदा बदमाश बताए जाते हैं। वहीं विकास पर भी नशा और मारपीट से जुड़े करीब 10 मामले दर्ज हैं।

महिला की हत्या के आरोपी

गौरतलब है कि दीनू और उनके परिवार का कुछ समय पहले संयोगितागंज इलाके में विवाद हुआ था, जिसमें दोनों पक्षों के बीच हथियार और डंडे चले थे। घटना में बुजुर्ग महिला की मौत हो गई थी। वहीं, इससे पहले परदेशीपुरा थाने के एसआई दीपक जामोद का भी विवाद सामने आया था। उनकी सर्विस पिस्टल के साथ युवती का इंस्टाग्राम वीडियो वायरल हुआ था। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जोन 2 अमरेन्द्र सिंह ने कहा कि हेड कांस्टेबल को बुके देने का वीडियो वायरल हुआ था। हेड कांस्टेबल को नोटिस देकर जवाब मांगा गया और जांच के बाद कार्रवाई की गई।

ज्वेलरी कंपनी की महिलाकर्मी 61 लाख के जेवर लेकर गायब

ग्राहकों को दिखाने ज्वेलरी लेकर गई, फिर नहीं लौटी

इंदौर। एक ज्वेलरी कंपनी से लाखों रुपए की ज्वेलरी लेने और वापस न करने का मामला सामने आया। कंपनी डायरेक्टर की शिकायत पर पुलिस ने महिला कर्मचारी के खिलाफ धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी। मामले में महिला के कुछ सहयोगियों के नाम भी सामने आए हैं, जिनसे जल्द पूछताछ की जाएगी। पुलिस के मुताबिक फरियादी रजत माहेश्वरी निवासी डी स्कीम नंबर 74 की शिकायत पर मेघा पति आशीष राठौर निवासी भक्त प्रहलाद नगर एमओजी लाइन के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया गया है। रजत एमजी रोड स्थित सिटी सेंटर में रजत जेम्स एंड ज्वेलरी प्राइवेट लिमिटेड नाम से ज्वेलरी कंपनी संचालित करते हैं, जो कई वर्षों से आभूषणों के व्यापार से जुड़ी हुई है।

कंपनी में कार्यरत थी मेघा- रजत के अनुसार मेघा राठौर वर्ष 2019 से कंपनी में कार्यरत थी। वह सेल्समैन के साथ मिलकर इनवॉइस तैयार करती थी और ग्राहकों को घर जाकर ज्वेलरी दिखाने का काम करती थी। कंपनी के कई ग्राहक मेघा को सीधे पर पहचानते थे। कंपनी की ओर से स्वर्ण आभूषण योजना भी चलाई जाती है, जिसमें ग्राहक किस्तों में रकम जमा कर ज्वेलरी लेते हैं। इसी योजना के तहत गोल्ड अरूवल वाउचर के जरिए मेघा ने कंपनी से ज्वेलरी प्राप्त की थी।

जमा नहीं कराई ज्वेलरी, राशि- आरोप है कि मेघा राठौर ने 357.66 ग्राम सोने की ज्वेलरी कंपनी से ली, लेकिन न तो यह ज्वेलरी ग्राहकों को दी गई और न ही कंपनी में वापस जमा कराई गई। इस ज्वेलरी की कीमत करीब 60 लाख 97 हजार रुपए है। मेघा ने संबंधित राशि भी कंपनी में जमा नहीं की गई। रजत के मुताबिक 12 फरवरी के बाद से मेघा कंपनी के ऑफिस भी नहीं आई। संपर्क करने की कोशिश की गई तो उसने कॉल रिसीव नहीं किया और बाद में पूरी तरह संपर्क बंद कर दिया। इसके बाद रजत ने अपने वकील से सलाह लेकर शनिवार को तुकोगंज थाने में शिकायत दर्ज कराई।

चौकीदार की साइलेंट अटैक से मौत

इंदौर। लसूड़िया थाना क्षेत्र की कॉलोनी में शनिवार शाम चौकीदार की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। वह घर पर पानी पीते समय अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा। आसपास मौजूद लोगों ने उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। पुलिस के अनुसार, घटना सेटेलाइट कॉलोनी की है। मृतक की पहचान राजू पिता त्र्यंबक इंगले के रूप में हुई है, जो पिछले करीब डेढ़ साल से कॉलोनी में चौकीदारी का काम कर रहे थे। शनिवार शाम 5 बजे वह नाश्ता करने के बाद घर पर पानी पी रहे थे, तभी अचानक उनकी तबीयत बिगड़ी और वह गिर पड़े। घटना के बाद कॉलोनी के लोगों ने उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। डॉक्टरों ने प्रारंभिक जांच में साइलेंट हार्ट अटैक की आशंका जताई है। राजू मूल रूप से हरदा के रहने वाले थे। पिछले साल उनकी पत्नी की भी अटैक से मौत हो गई थी। परिवार में बेटी है, जो इंदौर में परिवार के साथ रहती है।

संपादकीय

प. बंगाल- निम्नस्तर की सियासत

पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से हटाने और ममता द्वारा अपनी सत्ता को बचाने के लिए जो निहायत घटिया राजनीति हो रही है, वह शर्मनाक है। भाजपा भले ही इसे न स्वीकार करे, लेकिन उसने अपनी इस राजनीति में राष्ट्रपति को भी घसीट लिया है, इस बात से स्पष्ट है कि राष्ट्रपति के प्रति अपेक्षित सम्मान शिष्टाचार न दिखाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और बीजेपी के ईको सिस्टम ने जिन शब्दों में ममता की आलोचना की, खुद राष्ट्रपति ने जिन लफ्जों में ममता के प्रति अपनी नाराजगी जताई तथा जिस भाषा में ममता ने मोदी की बात का जवाब दिया, उससे लगता है कि अब भारतीय राजनीति में शिष्टता के सभी तटबंध टूटकर सिर्फ कचरा बह रहा है। इस ताजा घटनाक्रम से यह भी उजागर हो गया कि द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाने के पीछे बीजेपी का असल मकसद पश्चिम बंगाल और झारखंड में सत्ता हासिल करना ही था, क्योंकि इन दोनों राज्यों में बड़ी संख्या उन संथाल आदिवासियों की है, जो इन राज्यों में बसते हैं और मतदाता हैं। राज्य में विस चुनाव की घोषणा के कुछ ही पहले राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की पश्चिम बंगाल यात्रा पर कई सवाल उठ रहे हैं। उन्होंने ऐसे संवेदनशील और केन्द्र और राज्य के बीच तनावपूर्ण माहौल में पश्चिम बंगाल की यात्रा क्यों की? वो स्वयं ऐसा चाहती थीं अथवा उन्हें ऐसा करने पर मजबूर किया गया? बंगाल में ममता सरकार द्वारा प्रोटोकॉल का पालन न कर राष्ट्रपति को भाजपा एजेंट बताने से इस पद की गरिमा का कितना हनन हुआ? इन सवालों के जवाब आगे पूछे जाते रहेंगे। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू विगत शनिवार को 9वें अंतरराष्ट्रीय संथाल सम्मेलन में शामिल होने के लिए उत्तर बंगाल गई थीं। लेकिन राष्ट्रपति की अगवानी के लिए न तो स्वयं मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी गईं और न ही उनका कोई मंत्री वहां पहुंचा। यही नहीं सम्मेलन के लिए तयशुदा स्थान को भी बदल कर छोटी जगह अनुमति दी गई। इससे व्यथित राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे पता है कि राज्यपाल का तबादला हो गया है, इसलिए वह नहीं आ सकीं। कार्यक्रम की तारीख़ पहले तय हो गई थी, लेकिन कोई बात नहीं। मैं भी बंगाल की बेटी हूं। ममता बनर्जी मेरी छोटी बहन हैं। लेकिन शायद वह मुझसे नाराज़ हैं। लेकिन मैं उनके अच्छे होने की दुआ करती हूं। कार्यक्रम के आयोजक नरेश मुर्मू ने भी पुलिस पर आरोप लगाया कि उन्होंने जगह चार बार बदली और राष्ट्रपति के लिए अलग शौचालय तक नहीं बनाया। कई संथालों को बिना सिक्योरिटी पास के अंदर नहीं आने दिया गया। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया पर अपनी पोस्ट में इसे शर्मनाक बताया। उधर ममता की पार्टी ने जवाब में कहा कि राष्ट्रपति एकाध बार बंगाल आएं तो उनका स्वागत है, लेकिन वो बार-बार क्यों आ रही हैं? उल्लेखनीय है कि ममता ने आगामी विस चुनावों के मद्देनजर बंगाली अस्मिता और एसआईआर में नाम काटे जाने को मुद्दा बनाया हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य में कई आदिवासियों के नाम वोटर लिस्ट से काटे गए हैं। राष्ट्रपति इसे भी देखें। ममता स्वयं राज्य में एसआईआर के तहत कोलकाता में वोटर लिस्ट से बड़ी संख्या में लोगों के नाम कटने के विरोध में धरने पर बैठी हैं। गौरतलब है कि राज्य में 16 सीटें आदिवासियों के लिए आरक्षित हैं। पिछले विस चुनाव में भाजपा ने इनमें से 9 सीटें जीती थीं। बंगाल के आदिवासियों में से भी आधी आबादी संथालों की है। बीजेपी उनके बीच अपनी पकड़ मजबूत करना चाहती है। राष्ट्रपति का कार्यक्रम भी उसी मकसद से था। लेकिन ममता का जवाब भी उतना ही तगड़ा निकला।

डब्ल्यूटीओ की पूरी रावण-कथा से बाहर होना जरूरी

नजरिया

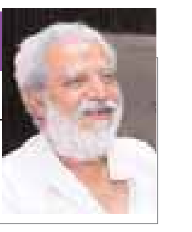

रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

अमेरिका के साथ ट्रेड डील को लेकर देश के एक बड़े हिस्से में संदेह का वातावरण है। किसानों के मन में भी संदेह है। एक तो अभी तक इस ट्रेड डील की सारी शर्तें नहीं बताई गई हैं। अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप या अमेरिका जब चाहे तब अपने मन से नई जानकारी मीडिया को देते हैं। भारत सरकार उनके बारे में ना कोई स्पष्ट खुलासा करती है न खंडन करती है। वाणिज्य मंत्री जो गोल-मोल जवाब देते हैं वह और भी संदेह पैदा करता है। वह कहते हैं कि समझौते होते हैं तो उनमें लेनदेन होता है। यह सही है। परंतु जो लेनदेन की शर्तें होती वह छिपाई नहीं जातीं। उनमें स्पष्टता होनी चाहिए। इस ट्रेड डील में कुछ खाद्यान्न के नाम लिए गए गेहूं चावल आदि। परंतु साथ में श्अन्य भी जोड़ा गया है। यह श्अन्य संदिग्ध और व्यापक है। इस श्अन्य की व्याख्या कब और कौन करेगा, यह क्यों लिखा गया है ,ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर देश मांग रहा है। परंतु प्रधानमंत्री जी से लेकर पूरी सरकार मौन है। यहां तक की संसद में भी इसका खुलासा नहीं किया गया।

मैं तो लगातार 1995 से यह कह रहा हूं कि विश्व व्यापार संगठन समझौता नई आर्थिक गुलामी का दस्तावेज है। आर्थिक गुलामी में राजनीतिक गुलामी भी शामिल होती है। आर्थिक शक्ति के बगैर न सामरिक शक्ति होती है न राजनीतिक। 20वीं सदी में साम्राज्यवाद का जो स्वरूप था वह अब बदल रहा है, बल्कि बदल चुका है। 19वीं सदी तक ताकतवर राजा या देश कमजोर देश के राजाओं को परास्त कर कब्जा करते थे। गुलाम बनाते थे। मुगल हमलावर आए तो उन्होंने भारत को जीत कर अपना साम्राज्य बनाया। अंग्रेजों ने उन्हें हराकर अपना। 20वीं सदी में साम्राज्यवाद का चेहरा बदला। बाहर से आकर शासन करने के बजाय अपने किसी पिट्ठू को सत्ता में बिठाकर देशों के शोषण का काम किया गया। 19वीं और 20वीं सदी के आरंभ तक दुनिया दो ध्रुवों या महाशक्तियों में बंटी थी। साम्यवादी कम्युनिस्ट और पूंजीवादी अमेरिका। अफगानिस्तान में रुसी प्रभाव का राष्ट्रपति था। उसके बाद अमेरिका की मदद और कट्टरता को हथियार बनाकर तालिबानों ने सत्ता हथिया ली। ईरान में शाह की अमेरिका परस्त सरकार थी। रूस ने विरोधी शक्तियों को मदद कर खमेनी की संप्रभुता वाला कट्टरपंथी शासन स्थापित कराया। शाह को हटाया। यह पिट्ठू के द्वारा सत्ता परिवर्तन का खेल और पिट्ठू सरकार बनाने का खेल जारी है। परंतु यह कुछ सीमित भी हुआ है। जहां आर्थिक और सुरक्षा दोनों मुद्दे मिल जाते हैं वहां ताकतवर देश की विरोधी सरकार को हटाकर पिट्ठू सरकार बनाई जाती है।

ईरान, अमेरिका और रूस दोनों के लिए अपने-अपने तरीके से आर्थिक और सामरिक नियंत्रण की आवश्यकता है। इस प्रकार अफगानिस्तान जिओ-पोलिटिकल राजनीति और आर्थिक सामाजिक सुरक्षा के लिए रूस अमेरिका दोनों की आवश्यकता है। अमेरिका रूस दोनों के नकाब भले अलग हों परंतु उनके मूल चरित्र में कोई अंतर नहीं है। अमेरिका ने कट्टरपंथी तालिबान को मदद कर अफगानिस्तान के रूस समर्थक राष्ट्रपति को हटाया था जो इस्लामिक देश के मुखिया थे। बदले में रूस ने ईरान के शाह को खुमेनी (खामेनेई) के इस्लामी कट्टरपंथ के सहारे हटाया जहां शाह पूंजीवादी उदार थे और खुमेनी (खामनई) शासन कट्टरपंथी।

कुल मिलाकर अमेरिका या रूस दोनों के लिए न उदारवाद की दरकार है, न लोकतंत्र की। बल्कि इन्हें अपने पिट्ठू शासकों की दरकार होती है।

विदेशी शासक या पिट्ठू शासन के प्रति जन विद्रोह या जन-आक्रोश की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए अमेरिका की पहल पर विश्व व्यापार संगठन का दस्तावेज आर्थर डंकल ने तैयार किया। पहले इसे डंकल प्रस्ताव कहा गया। अब वह बाकायदा विश्व व्यापार संगठन का एक स्वीकृत मसौदा है जो विश्व व्यापार के नाम पर दुनिया के बड़े हिस्से की आर्थिक नीतियों को नियंत्रित कर अपने हित में रखना चाहता है। अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री हेनरी किसिंगर ने तो साफ कहा था (डब्ल्यूटीओ इज नथिंग, बट द सुप्रीमेसी ऑफ अमेरिका)। उनका यह साहसिक बयान था और कटु सत्य भी। स्वर्गीय राजीव गांधी की हत्या के बाद कॉर्पोरेट के प्रबंधन ने और कांग्रेस की अंतः राजनीतिक समीकरणों ने स्व. नरसिंह राव को प्रधानमंत्री बनाने और स्व. मनमोहन सिंह को विश्व बैंक से लाकर भारत का वित्त मंत्री बनाने में छिपी भूमिका अदा की थी, यह एक अघोषित तथ्य है। 1996 में नरसिंह राव के हटने के बाद जब 2004 में कांग्रेस पार्टी को बहुमत की मिली-जुली सरकार बनाने का अवसर मिला तब बाकायदा मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाने की भूमिका तैयार की गई जिनकी पृष्ठभूमि और मानसिक विचार पूंजीवादी संस्था विश्व बैंक के थे। वे लोकसभा के सदस्य भी नहीं थे। अपने जीवन में 10 साल राज्यसभा के मेंबर रहते हुए प्रधानमंत्री रहे। इस तथाकथित एलपीजी अर्थव्यवस्था यानी लिबरलाइजेशन- प्राइवेटाइजेशन-ग्लोबलाइजेशन की आधारशिला विश्व-व्यापार संगठन समझौते के माध्यम से नरसिंह राव के जमाने में रखी गई थी। उसका पूर्णरूप मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री बनने के बाद सामने आया। 2014 में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री का चेहरा बनाकर आगे किया गया। यह फैसला भले ही संघ या भाजपा द्वारा किया गया हो पर पटकथा दुनिया के कारपोरेट जगत द्वारा लिखी गई। इसलिए श्री नरेंद्र मोदी के कॉर्पोरेट व वैश्विक पूंजीवाद का समर्थन करने वाली नीतियां व काम गलत, अनुचित, राष्ट्रीय हितों के विरोधी तो लगते हैं परंतु आश्चर्यजनक नहीं। वे तो अपने आर्थिक आकाओं के कामों को पूरा करने वाले मुनीम मात्र हैं। जिनके पैसे से 2014 में चुनाव जीते थे।

यह स्थिति भी कोई नई नहीं है। बल्कि स्व.अटल बिहारी वाजपेयी ने तो प्रधानमंत्री बनने के बाद सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया था कि हम विश्व व्यापार संगठन के समझौता दस्तावेज को लागू करने को बाध्य हैं व संसद भी बाध्य है।

मैं लगातार लोगों को बताता रहा हूं कि आने वाले भविष्य में दुनिया की कॉर्पोरेट आर्थिक शक्ति वाले देशों के दुनिया को लूटने के चार महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

पहला-हथियार और यह स्थापित तथ्य है कि अभी तक हथियारों पर दुनिया के ताकतवर देश या अमेरिका का लगभग एकाधिकार है।

चौथी-महत्वपूर्ण चीज खाद्यान्न है। दुनिया की आबादी जिस प्रकार बढ़ रही है ,उसकी खाद्यान्न जरूरतें जिस प्रकार बढ़ रही है वे बढ़ती ही जाएंगी। दुनिया के अनेक छोटे-बड़े देश अपनी खाद्यान्न जरूरत के लिए अमेरिका जैसे देशों पर निर्भर होंगे। इसके लिए पहला तरीका था कृषि वाले देशों के सिंचाई साधनों को सीमित रखना,ताकि उनकी खाद्यान्न पैदा करने की क्षमता सीमित रहे। इसीलिए जब रूस में बिखराव के बाद दुनिया एकध्रुवीय बनी तब विश्व बैंक ने सिंचाई सुविधाओं को बढ़ाने के लिए दिया जाने वाला पैसा रोक दिया। इसके लिए कुछ एनजीओ को पैसा देकर खड़ा किया गया,उनसे बांधों का विरोध कराया गया, ताकि सिंचाई क्षमताएं सीमित रहें, और देश खाद्यान्न आत्मनिर्भरता में समर्थ न हो। इसके प्रयोग दुनिया ने और भारत ने देखे हैं। जहां हजार पांच सौ करोड़ की योजनाओं को विरोध के नाम पर रोक कर न केवल विलंबित किया गया बल्कि लागत बढ़ने से अब वे योजनाएं लाखों करोड़ की खर्चे वाली हो गई हैं। बहुत सी योजनाएं तो भारत में इसलिए बंद हो गई कि विश्व बैंक ने सिंचाई के लिए पैसा देना बंद कर दिया है और सरकार के पास पैसा नहीं है। यद्यपि भारत जैसे देश अपने स्रोतों से इन्हें पूरा कर सकते हैं परंतु वैश्वीकरण की गुलाम सरकारों के द्वारा आत्मनिर्भरता के कदम उठाना कैसे संभव है? संसद में वित्त मंत्री श्रीमती सीतारमण ने बजट में बहस का उत्तर देते हुए कहा कि कांग्रेस 2013 में, इंडोनेशिया के बाली में विश्व व्यापार संगठन के मंत्री मंडलीय स्तर की बैठक में समझौता करके आ गये। समझौते के अनुसार भारत सरकार 2017 से भारत में किसान से खरीद नहीं कर सकती थी तथा पीडीएस से वितरण नहीं हो सकता था। इसका अर्थ स्पष्ट है कि अगर यह समझौता बदला नहीं जाता तो, पीडीएस को राशन कहां से आता। किसान की फसल का क्या होता? हालांकि यह भी है कि 2013 में, देश के 85 करोड़ लोगों में 5 किलो प्रति व्यक्ति राशन देने का वोट हथियाओ कार्यक्रम शुरू नहीं हुआ था। मतलब साफहै कि अगर आज कांग्रेस सरकार होती तो वह भी वही पाप करती कि देश के बाहर से अनाज का आयात करती। अब उसी का रास्ता, भाजपा ने खोजा है। कुल मिलाकर, कांग्रेस, भाजपा दोनों के आरोप अपनी जगह सही है। भाजपा के लिये कांग्रेस पुरानी अपराधी और कांग्रेस के लिये भाजपा नई अपराधी, पर देश के लिये तो दोनों ही समान है, याने दोनों अपराधी हैं।

भारतीय राजनीति दो नाटक मंडली के समूह में फंसी है। इसमें पात्र वहीं रहते हैं, भूमिकाएं बदल जाती हैं।

1990 के दशक में जब नरसिंह राव ने विश्व व्यापार संगठन का समझौता किया तब गांव गांव जाकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भाजपा के लोग और स्वदेशी जागरण मंच डंकल समझौते का विरोध कर रहे थे। स्वदेशी बनाम विदेशी के मुद्दे पर दिल्ली की सरकार और फिर देश हथिया लिया। तब कांग्रेस पार्टी इस समझौते का समर्थन कर रही थी। इसे उदारवाद और विकास का पर्याय बता रही थी। अब कांग्रेस भी उसी हथियार से सत्ता की वैतरणी पार करना चाहती है। राहुल गांधी आजकल भारत अमेरिका ट्रेड डील पर काफी मुखर हैं। होना भी चाहिए। भोपाल में उन्होंने उनकी पार्टी द्वारा आयोजित किसान महाचौपाल में दो-तीन बातें इस डील को लेकर कहीं।

पहली तो यह कि डील की शर्तों के बारे में राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी और शिवराज सिंह को भी नहीं पता।

श्री राहुल गांधी ने डील के दो कारण बताए। पहला तो अदानी पर केस और दूसरा एपस्टीन का डर। उन्होंने कहा कि यदि प्रधानमंत्री पर दबाव नहीं है तो डील को रद्द करके बताएं। जहां तक पहली बात का सवाल है यह ट्रेड डील तो विश्व व्यापार संगठन की पूरी रामायण का एक अध्याय भी नहीं, एक चौपाई भर है। इस रामायण को सभी जान रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी भी, राजनाथ-गडकरी-शिवराज भी, श्री राहुल गांधी भी और इंडी गठबंधन के सभी संसदीय दल भी। परंतु वे विश्व व्यापार संगठन की रामायण की एक दो चौपाई समाप्त करना चाहते हैं संपूर्ण रामायण को नहीं। इसका मतलब होगा कि जो भी सत्ता में आएगा वह इसी विश्व व्यापार संगठन रूपी रामायण की आगे की चौपाइयों को क्रियान्वित करने लाचार होगा। चाहे वह राहुल गांधी हो या कांग्रेस।

अदानी पर केस या एपस्टीन का डर कारण हो सकते हैं। इसके बारे में विशेष जानकारी श्री राहुल गांधी को होगी क्योंकि वे अमेरिका का दौरा करते रहते हैं। परंतु मैं मानता हूं कि यह डर न भी होते तो भी 1 जनवरी 1995 के डब्ल्यूटीओ के राष्ट्र विरोधी समझौते के हस्ताक्षरी होने के कारण भारतीय राजनीति को पहले भी झुकना पड़ा था और आगे भी झुकना पड़ेगा।

अटल बिहारी वाजपेई पर तो न केस था, न एपस्टीन था। उन्हें और लालकृष्ण आडवाणी को वाध्य क्यों होना पड़ा? नरसिंह राव और मनमोहन सिंह को बाध्य क्यों होना पड़ा?

अगर दबाव नहीं है तो प्रधानमंत्री डील को रद्द कर दें, यह भाषा और मांग कमजोर और राजनीतिक हथियार जैसी है। अगर वास्तव में कांग्रेस या कोई भी प्रतिपक्षी दल इस डील के खिलाफहै तो वह चौपाई नहीं बल्कि विश्व व्यापार संगठन की पूरी रावण-कथा का विरोध कर यह घोषणा करें कि हम यदि सत्ता में आएंगे तो विश्व व्यापार संगठन से बाहर निकलेंगे तभी ये सब समझौते समाप्त होंगे। महात्मा गांधी और लोहिया आज होते तो यही कह रहे होते।

खामेनेई का अंत और इस्लामी क्रांति

राजनीति

अवधेश कुमार
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अमेरिका और इजरायल के संयुक्त हमले में ईरान के सर्वोच्च मजहबी नेता अयातुल्लाह अल खामेनेई का मारा जाना 21वीं सदी की ऐसी बड़ी घटना है जिसका प्रभाव कई रूपों में संपूर्ण विश्व पर पड़ेगा। इस्लामी शासन होने के कारण वे व्यावहारिक रूप से ईरान के सर्वोच्च नेता थे। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन की भूमिका खामेनेई की नीतियों के क्रियान्वयन की रही है। अयातुल्लाह होने के कारण उन्हें विश्व भर के शिया मुसलमान अपने शीर्ष मजहबी नेता के रूप में देखते थे। पाकिस्तान,ईरान,भारत सहित कई देशों में शिया मुसलमानों का विरोध सामने है। किंतु यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि ईरान के एक भी पड़ोसी देश ने ईरान का पक्ष नहीं लिया है। हालांकि पिछले वर्ष खामेनेई ने संपूर्ण विश्व के मुसलमानों की एकता का आह्वान किया था। ईरान और उसके बाहर उनके समर्थकों की कल्पना में कभी उनके इस तरह की मौत की बात नहीं आई होगी। हालांकि पिछले वर्ष जून में पहले इजरायल और बाद में अमेरिका के हमले के समय अटकलें लगी थी कि शायद वे देश छोड़कर चले गए। ऐसा हुआ नहीं।

इस घटना की संपूर्ण परिणतियों का स्पष्ट पूर्वावलोकन अभी कठिन है। इतना स्पष्ट कहा जा सकता है कि ईरान में 1979 से इस्लामी क्रांति का एक दौर तत्काल समाप्त हो गया है।

ऐसा नहीं है कि इस्लामी क्रांति के बाद हुए परिवर्तनों ,स्थापित ढांचें, विचारधारायें समाप्त हो गई हैं पर कम से कम उस रूप में आने वाले लंबे समय तक मुक्त और स्वतंत्र शिया इस्लामी शासन नहीं हो सकता। यह कथन सामान्य क्रांतियों के संदर्भ में है कि क्रांति के शिशु ही क्रांति को खा जाते हैं। ईरान के इस्लामी क्रांति के बारे में भी तत्काल यह निष्कर्ष सही दिखता है। सामान्यतः आम इस्लामी देशों से थोड़ा उदार और खुले जीवन जीने वाले ईरान में 1979 के इस्लामी क्रांति और अयातुल्लाह के सर्वोच्च नेता के रूप में स्थापना संपूर्ण विश्व की दृष्टि से एक नई घटना थी। इसमें केवल ईरान नहीं संपूर्ण अरब और कुछ मायनो में इससे बाहर भी गैर इस्लामी या इस्लाम विरोधी शासनों के अंत और इसके विस्तार का विचार प्रबल था। यहूदी देश इजरायल को इस्लाम का दुश्मन घोषित करते हुए ईरान राष्ट्र का लक्ष्य धरती से उसका नामोनिशान मिटाना हो गया। अमेरिका और उसके नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों को शैतान कहा गया। यह व्यावहारिक तौर पर विश्व में एक इस्लामी विद्रोह की सत्ता का स्वरूप था। सच कहें तो इसी अतिवादी भाव के व्यवहार ने ईरान को उस अवस्था में पहुंचा दिया जहां उसका शांत, स्थिर, सशक्त और सुरक्षित रहना असंभव था। जब आप किसी एक देश के धरती पर नहीं रहने के अधिकार की घोषणा करेंगे और उसके अनुसार देश का व्यवहार होगा, बाहर अलग-अलग हिंसक समूह पैदा कर उसकी मदद करेंगे तो इसकी प्रतिक्रिया आपको झेलनी पड़ेगी। आखिर कोई देश ऐसे शासन को कायम रहने देने के पक्ष में क्यों होगा जो उसके अंत को अपना लक्ष्य बनाकर काम कर रहा हो?

दरअसल, 7 अक्टूबर ,2023 को हमास द्वारा उत्सव मना रहे निर्दोष निरपराध यहूदियों पर हमला कर लगभग 1200 लोगों का सरेआम कत्लेआम और बंधक बना लेने की घटना ने पश्चिम एशिया खासकर ईरान इजरायल ,ईरान अमेरिका संबंधों को ऐसे मोड़ पर ला दिया जिसे अयातुल्लाह सहित उनके परिवार के अनेक सदस्यों ,प्रमुख कमांडरों और रक्षा मंत्री आदि की मृत्यु की पृष्ठभूमि माना जा सकता है। गाजा में हमास , लेबनान में हिजबुल्लाह, यमन में हुती अयातुल्लाह के ईरान के ही गैर राज्यीय आतंकवादी समूह हैं। उस घटना ने विश्व के हर विवेकशील व्यक्ति और संतुलित राष्ट्रों को अंदर से हिला दिया। हालांकि यहूदियों के विरुद्ध इस्लामी मजहबी भाव को देखते हुए मुस्लिम देशों में आम भाव ऐसा नहीं था किंतु ईरान की तरह भूमिका दूसरे की नहीं थी।

इजरायल और अमेरिका का ऑपरेशन तभी से आगे बढ़ने लगा। लेबनान में हिजबुल्लाह तथा गाजा में हमास को पूरी तरह समाप्त करने के लक्ष्य से इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतान्याहू ने कार्रवाई आरंभ की। हिजबुल्लाह प्रमुख नजीबुल्लाह और उसके ज्यादातर शीर्ष साथियों की मृत्यु ,उसके केंद्र काफी हद तक नष्ट होने आदि के साथ उसकी शक्ति इतनी क्षीण हो गई कि पहले की तरह संघर्ष नहीं कर सकते थे। गाजा में भी संघर्ष जारी रहा और अपने लोगों को सुरक्षित लाने की विवशता रहते हुए भी इजरायल ने हमास के ढांचे को जितना संभव था अंत करने की कोशिश की। डोनाल्ड ट्रंप के शासन में आने के बाद कुछ समय के लिए लगा कि शायद इजरायल की उनको लेकर अपेक्षाएं गलत साबित हो सकतीं हैं। लेकिन 22 जून 2025 को अमेरिका के शक्तिशाली जीबी 57ए/बी मैसिव ऑर्डिनेंस पेनिट्रेट या एमोपी जिसे बंकर बस्टर बम भी कहा जाता है, के हमलों में ईरान के तीन महत्वपूर्ण फोर्डो, नतांज और इस्फाहान न्यूक्लियर ठिकानों को नष्ट किया। वस्तुतः अमेरिका और इजराइल क्रमबद्ध तरीके से यहां तक पहुंचे हैं। ईरान पर पिछले एक दशक से ज्यादा के प्रतिबंधों ने उसके तेल व्यापार को लगभग समाप्त कर दिया और आर्थिक संकट बढ़ता गया। डोनाल्ड ट्रंप ने उन प्रतिबंधों को सख्ती से लागू करने के उपाय किए और उनके तेवर ऐसे थे जिसका असर हुआ। इस बीच ईरान रिवॉल्यूशनरी कोर्प्स गार्ड से लेकर प्रमुख रक्षा वैज्ञानिकों आदि की हत्यायें होती रहीं । इजरायल ने भी बीच-बीच में हमले किये। हालांकि पिछले वर्ष ईरान के मिसाइल हमले से इजरायल को भारी तबाही का सामना करना पड़ा। उसके बाद ज्यादा सशक्त तैयारी का अहसास हुआ और वही किया गया।

आयतुल्लाह के मारे जाने के कुछ घंटे पहले जब डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा किया कि ईरान के बहादुर लोगों से मेरा अनुरोध है कि आप अपने घरों में रहें,चारों तरफ हमारे बम गिर रहे हैं और इस शासन से मुक्त कर आपको हम ईरान सौंप देंगे तब भी शायद बहुत बड़ी संख्या में लोगों को विश्वास नहीं हुआ होगा कि वे जो बोल रहे हैं वही करने की तैयारी से इस बार ईरान में हस्ताक्षेप हुआ है। देख लीजिए ट्रंप के बोर्ड ऑफ पीश में ज्यादातर मुस्लिम देश ही है। कहा तो यह भी जा रहा है कि सऊदी अरब के प्रधानमंत्री और क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने अमेरिका और इजरायल का पूरा साथ दिया है। ईरान जिस तरह सऊदी अरब,बहरीन,ओमान, कुवैत,क़तर आदि सभी स्थानों के अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाने के नाम पर हमले कर रहा है उसके लगता है कि हर देश उसके विरुद्ध थे। वैसे 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद ईरान का सबसे पहला और लंबा युद्ध इराक के साथ हुआ जो स्वयं शिया बहुल देश है।

अभी भविष्य की स्पष्ट तस्वीर नहीं प्रस्तुत की जा सकती। ईरान के बचे-खुचे कमांडर अपनी शक्ति से संघर्ष करेंगे, दुनिया भर के शिया अतिवादी समूह अपने स्तर से हिंसा और विरोध करेंगे, लेकिन ईरान के शासन का लंबे समय तक समूचे देश पर नियंत्रण रहना कठिन होगा। ईरान पर कब्जा कर किसी को सत्ता पर बिठाना अमेरिका के लिए कठिन है। बड़ी संख्या में ईरानी भी किसी बाहरी हस्तक्षेप वाले शासन को स्वीकार नहीं करेंगे। खामेनेई की मृत्यु के बाद तत्काल उनके प्रति सहानुभूति भी पैदा हुई है जो? लोगों की प्रतिक्रियाओ में दिख रही है।? ईरान में तुर्क, कुर्द, अज़रबैजानी अलग-अलग स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे हैं। उनका हौसला बढ़ा है। वहां व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग करने वाला समूह भी बहुत बड़ी संख्या में है। इसलिए ईरान के एक निश्चित दिशा में पहुंचने के पहले वहां घटनाएं अनेक मोड़ लेंगी और हमें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस्लामी शासन का ऐसा हस्र पूरी दुनिया के इस्लामवादियों के लिए सबक होना चाहिए। जो भी हो 1979 इस्लामी क्रांति के सिद्धांत वाली ऐसी शासन व्यवस्था वहां कायम नहीं रह सकती, जिसका संपूर्ण देश पर प्रभावी नियंत्रण हो।

समय का मरहम : सच्चाई या एक भ्रम?

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया
लेखक स्तंभकार हैं।

मनुष्य के जीवन में समय को बहुत शक्तिशाली माना जाता है। अक्सर लोग कहते हैं कि 'समय हर घाव को भर देता है।' जब कोई व्यक्ति किसी गहरे दुख, पीड़ा या आघात से गुजरता है, तो उसे सांत्वना देने के लिए यही कहा जाता है कि थोड़ा समय बीत जाने दो, सब ठीक हो जाएगा। यह वाक्य सुनने में बहुत सुकून देता है और ऐसा लगता है कि मानो समय एक ऐसा मरहम है जो हर दर्द को मिटा सकता है। लेकिन जब हम जीवन की वास्तविकता को ध्यान से देखते हैं, तो यह प्रश्न उठता है कि क्या सच में समय हर घाव को भर देता है, या यह केवल एक भ्रम है जिसे हम अपने मन को समझाने के लिए स्वीकार कर लेते हैं।

जीवन में कई ऐसे अनुभव होते हैं जो मनुष्य के मन पर गहरी छाप छोड़ जाते हैं। किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु, किसी अपने का विश्वासघात, बचपन की कड़वी स्मृतियाँ या जीवन में मिली कोई बड़ी असफलता–ये सभी ऐसे घाव हैं जो केवल समय बीत जाने से समाप्त नहीं होते। वर्षों बाद भी जब इन घटनाओं की याद आती है, तो मन उसी तरह व्यथित हो उठता है जैसे वह दर्द अभी-अभी हुआ हो। इससे यह स्पष्ट होता है कि समय अपने आप घाव को नहीं भरता, बल्कि वह केवल हमें उस दर्द के साथ जीने की आदत सिखा देता है।

दरअसल, समय केवल परिस्थितियों को बदलता है, मनुष्य के भीतर के भावों को नहीं। यदि किसी व्यक्ति के मन में गहरी पीड़ा छिपी हुई है और वह उसे समझने या स्वीकार करने का प्रयास नहीं करता, तो वह दर्द उसके भीतर बना रहता है। बाहर से देखने पर ऐसा लग सकता है कि सब सामान्य हो गया है, परंतु भीतर कहीं न कहीं वह घाव जीवित रहता है। इस प्रकार केवल समय के बीत जाने से घाव का भर जाना संभव नहीं है। इतिहास और समाज में भी हमें ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ समय बीत जाने के बाद भी घाव पूरी तरह नहीं भरे। किसी अन्याय, संघर्ष या भेदभाव से उत्पन्न पीड़ा लोगों के मन में लंबे समय तक बनी रहती है। कई पीढ़ियों तक लोग उन घटनाओं को याद करते रहते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि समय का बीतना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस पीड़ा को समझना और उससे सीखना भी आवश्यक है।

वास्तव में घाव को भरने के लिए समय के साथ-साथ संवेदनशीलता, सहानुभूति और प्रयास की आवश्यकता होती है। जब कोई व्यक्ति अपने दर्द को स्वीकार करता है और उससे भागने के बजाय उसका सामना करता है, तब वह धीरे-धीरे उस पीड़ा से बाहर निकलने की शक्ति प्राप्त करता है। इस प्रक्रिया में परिवार और मित्रों का सहयोग भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। जब किसी दुखी व्यक्ति को समझने वाले लोग मिलते हैं, तो उसका दर्द कुछ हद तक हल्का हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, आत्मचिंतन भी घाव भरने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब मनुष्य अपने अनुभवों से सीखने की कोशिश करता है, तब वह उस दर्द को एक नई दृष्टि से देखने लगता है। धीरे-धीरे वही पीड़ा उसे जीवन की सच्चाइयों को समझने में मदद करती है। तब वह दुख केवल एक बोझ नहीं रह जाता, बल्कि एक अनुभव बन जाता है जो उसे अधिक परिपक्व और संवेदनशील बना देता है।

कई बार लोग अपने दुख को दबाने की कोशिश करते हैं और यह सोचते हैं कि समय के साथ सब अपने आप ठीक हो जाएगा। लेकिन ऐसा करने से समस्या और गहरी हो सकती है। दबे हुए भाव मन के भीतर जमा होते रहते हैं और किसी न किसी रूप में बाहर आ जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने भावों को समझे, उन्हें व्यक्त करे और उनसे निपटने का स्वस्थ तरीका अपनाए। इस विषय का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि समय कभी-कभी घाव को भरने के बजाय उसकी स्मृति को और गहरा कर देता है। जैसे-जैसे समय बीतता है, व्यक्ति को यह एहसास होने लगता है कि जो खो गया है, वह कभी वापस नहीं आएगा। यह एहसास कई बार दर्द को और अधिक तीव्र बना देता है। ऐसे में यह मान लेना कि समय अपने आप सब कुछ ठीक कर देगा, एक प्रकार की आत्म-सांत्वना भर हो सकती है। अंततः यह कहा जा सकता है कि समय स्वयं किसी भी घाव का उपचार नहीं करता। समय केवल हमें आगे बढ़ने का अवसर देता है। घाव को भरने का वास्तविक कार्य मनुष्य की समझ, धैर्य, साहस और संवेदनशीलता से ही संभव होता है। जब हम अपने दुख को स्वीकार करते हैं, उससे सीखते हैं और जीवन को नई दिशा देने का प्रयास करते हैं, तभी हम उस पीड़ा से ऊपर उठ पाते हैं। इसलिए यह कहना अधिक उचित होगा कि समय घाव को नहीं भरता, बल्कि वह हमें यह सिखाता है कि उस घाव के साथ कैसे जीना है। यही जीवन की सच्चाई है। इस दृष्टि से देखा जाए तो 'समय हर घाव को भर देता है' कहना पूरी तरह सत्य नहीं है। यह केवल एक धारणा है, एक सांत्वना है–और शायद कई बार एक भ्रम भी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वीकेंड का आलस और बिस्तर का 'गुरुत्वाकर्षण'

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
लेखक व्यंग्यकार हैं।

चतुर्भुज जी अलार्म को ऐसे देखते हैं जैसे वह कोई विदेशी आक्रमणकारी हो। वे उसे 'स्नूज़' (Snooze) करते हैं। स्नूज़ करना दरअसल इंसान की वह आखिरी उम्मीद है जो उसे लगता है कि अगले पाँच मिनट में वह अपनी अधूरी जिंदगी जी लेगा। पाँच मिनट बीतते हैं, और बिस्तर का 'गुरुत्वाकर्षण' अचानक दस गुना बढ़ जाता है। रजाई उन्हें ऐसे जकड़ लेती है जैसे कोई बिछड़ी हुई प्रेमिका अपने प्रेमी को जाने न दे रही हो।

दुनिया में दो तरह की दूरियाँ होती हैं। एक वह, जिसे मील और किलोमीटर में मापा जाता है, और दूसरी वह, जो सोमवार की सुबह 'बिस्तर से दफ्तर' के बीचपैदा होती है। यह दूसरी वाली दूरी इतनी अनंत है कि प्रकाश की गति से चलने वाला आइंस्टीन भी इसे पार करने में हांफ जाए।

हमारे मोहल्ले के 'आलस शिरोमणि' हैं–चतुर्भुज जी। चतुर्भुज जी के लिए शनिवार की शाम 'स्वतंत्रता संग्राम' की विजय जैसी होती है, और रविवार का दिन 'समाधि' का। रविवार को वे बिस्तर पर इस तरह पसरे होते हैं जैसे किसी पुरातात्विक खुदाई में निकला हुआ कोई विशाल जीवाश्म। श्रीलाल शुक्ल के शब्दों में कहें तो, चतुर्भुज जी का बिस्तर पर लेटना कोई शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि एक 'दार्शनिक शोध' है कि मनुष्य बिना हिले-डुले ब्रह्मांड को कैसे देख सकता है।

संकट तब आता है जब रविवार की रात को घड़ी की सुइयां बारह पार करती हैं। जैसे ही 'सोमवार' का आगमन होता है, चतुर्भुज जी के कमरे का वातावरण किसी 'हॉरर फिल्म' के क्लाइमेक्स जैसा हो जाता है। सुबह का अलार्म बजता नहीं, बल्कि 'चीखता' है। वह अलार्म नहीं, बल्कि दफ्तर के उस 'बॉस' की दहाड़ होती है जो अपनी कुर्सी पर बैठकर फाइलें चबाने के लिए तैयार खड़ा है।

चतुर्भुज जी अलार्म को ऐसे देखते हैं जैसे वह कोई विदेशी आक्रमणकारी हो। वे उसे 'स्नूज़' (Snooze) करते हैं। स्नूज़ करना दरअसल इंसान की वह आखिरी उम्मीद है जो उसे लगता है कि अगले पाँच मिनट में वह अपनी अधूरी जिंदगी जी लेगा। पाँच मिनट बीतते हैं, और बिस्तर का 'गुरुत्वाकर्षण' अचानक दस गुना बढ़ जाता है। रजाई उन्हें ऐसे जकड़ लेती है जैसे कोई बिछड़ी हुई प्रेमिका अपने प्रेमी को जाने न दे रही हो।

वे मन ही मन हिसाब लगाते हैं– 'अगर मैं ब्रश करने में दो मिनट बचाऊँ, नाश्ता दफ्तर के रास्ते में करूँ और नहाने की प्रक्रिया को 'सांकेतिक' (केवल चेहरा धोना) कर दूँ, तो मैं अभी पंद्रह मिनट और सो सकता हूँ।' यह वह गणित है जो बड़े-बड़े इंजीनियरों को भी फेल कर दे।

दफ्तर की दूरी महज पाँच किलोमीटर है, पर सोमवार को वह 'कैलाश मानसरोवर' की यात्रा लगने लगती है। चतुर्भुज जी जब आखिरकार एक पैर जमीन पर रखते हैं, तो उनकी हड्डियों से वैसी ही आवाज आती है जैसी किसी पुराने ट्रक के गियर बदलने पर आती है। वे शीशे के सामने खड़े होकर खुद को पहचानते हैं और खुद से पूछते हैं– 'क्या यह वही चेहरा है जिसे दुनिया एक 'कर्मचारी' कहती है, या यह कोई थका हुआ युद्धबंदी है?'

चतुर्भुज जी किसी तरह लड़खड़ाते हुए, अधखुली आँखों से तैयार होकर दफ्तर की दहलीज पर पहुँच ही गए। उन्होंने रजिस्टर में हाजिरी लगाने के लिए पेन उठाया और बड़े गर्व से अपने बॉस की केबिन की ओर देखा कि देखो, मैं 'कर्तव्य' की बलवेदी पर हाजिर हूँ।

तभी चपरासी ने उन्हें टोका– 'साहब, ये क्या कर रहे हैं? आज दफ्तर क्यों आए?'

चतुर्भुज जी झल्लाए– 'क्यों? आज सोमवार है, काम का दिन है! दफ्तर नहीं आऊँगा तो क्या घर पर रजाई के साथ सत्संग करूँ? चपरासी ने बड़ी मासूमियत से कहा– 'अरे साहब, शायद आप भूल गए। आज तो 'राष्ट्रीय अवकाश' है, कल रात ही ग्रुप पर मैसेज आया था कि आज दफ्तर बंद रहेगा!'

चतुर्भुज जी के हाथ से पेन गिर गया। जिस 'बिस्तर से दफ्तर' की दूरी को उन्होंने हिमालय चढ़ने की तरह तय किया था, वह अब उन्हें 'पाप' जैसा लगने लगा। वे वहीं सीढ़ियों पर बैठ गए और फूट-फूट कर बोले– 'हे भगवान! ये दफ्तर की वफादारी भी क्या चीज है, कल रात अगर 'आलस' के चक्कर में फोन चेक कर लिया होता, तो आज मैं अपने बिस्तर के साथ 'मोक्ष' प्राप्त कर रहा होता!' अब चतुर्भुज जी इस सदमे में हैं कि वे वापस घर जाने की 'दूरी' कैसे तय करें।

जन प्रतिनिधित्व अधिनियम में संशोधन आवश्यक

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

जन प्रतिनिधित्व कानून, 1951 एक महत्वपूर्ण कानून है। यह भारत के चुनावी परिदृश्य को आकार देता है। जन प्रतिनिधित्व कानून, 1951 को लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में सीटों के आवंटन, मतदाताओं की योग्यता और मतदाता सूची की तैयारी के लिए अधिनियमित किया गया था। यह अधिनियम यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक था कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से आयोजित किए जाएं और लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांतों का सम्मान किया जाए।

सर्वोच्च न्यायालय ने एसआईआर के विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया में पहचान के लिए आधार कार्ड के उपयोग का विरोध करने वाले एक याचिकाकर्ता से कहा कि जब तक जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 आधार को मान्य दस्तावेज के रूप में स्वीकार करता है, तब तक अदालत को भी इसे मानना होगा। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल पांचोली की खंडपीठ पश्चिम बंगाल में एसआईआर से संबंधित याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि यदि याचिकाकर्ता को फर्जी आधार कार्ड के व्यापक उपयोग की चिंता है, तो उसे बार-बार अदालत में मुद्दा उठाने के बजाए केंद्र सरकार से कानून में संषोधन कराने के लिए संपर्क करना चाहिए। अभिभाषक अश्विनी उपाध्याय ने दावा किया कि देश में बड़ी संख्या में फर्जी आधार कार्ड बने हुए हैं। खासकर सीमा क्षेत्रों में। कई मामलों में पकड़े गए बांग्लादेशी या रोहिंग्या व्यक्तियों के पास बंगाल से जारी आधार पाए गए हैं। इस पर मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि यह गंभीर मुद्दा हो सकता है और गहन जांच की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन फिलहाल इस पर टिप्पणी करने का उचित समय नहीं है।

न्यायालय ने कहा कि यदि बड़े पैमाने पर फर्जी आधार कार्ड बनाए जा रहे हैं, तो यह विधायी स्तर पर नियंत्रित किया जाना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि याचिकाकर्ता केंद्र सरकार को अभ्यावेदन देकर जनप्रतिनिधित्व कानून, 1950 में संशोधन की मांग करें। जब जन प्रतिनिधित्व कानून, 1950 में संशोधन करके आधार को पहचान के प्रमाण के रूप में शामिल किया गया है, तो अदालत को उसे स्वीकार करना ही होगा। साथ ही यह स्पष्ट किया कि आधार केवल पहचान का दस्तावेज है। यह नागरिकता का प्रमाण नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने पिछले वर्ष सितंबर में चुनाव आयोग द्वारा एसआईआर प्रक्रिया के लिए निर्धारित 11 दस्तावेजों के अतिरिक्त आधार कार्ड को भी सत्यापन दस्तावेज के रूप में स्वीकार करने की अनुमति दी थी। यह आदेश जन प्रतिनिधित्व कानून, 1950 की धारा 23(4) के प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए दिया गया था। इसमें आधार को पहचान स्थापित करने के लिए मान्य दस्तावेज माना गया है। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि कानून में जब तक आधार कार्ड मान्य पहचान दस्तावेज है, तब तक अदालत उसे खारिज नहीं कर सकती। फर्जी आधार की समस्या का समाधान न्यायालय नहीं बल्कि विधायी स्तर पर किया जाना चाहिए।

जन प्रतिनिधित्व कानून, 1951 एक महत्वपूर्ण कानून है। यह भारत के चुनावी परिदृश्य को आकार देता है। जन प्रतिनिधित्व कानून, 1951 को लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में सीटों के आवंटन, मतदाताओं की योग्यता और मतदाता सूची की तैयारी के लिए अधिनियमित किया गया था। यह अधिनियम यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक था कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से आयोजित किए जाए और लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांतों का सम्मान किया जाए। जनप्रतिनिधित्व कानून, 1951 कई कारणों से समकालीन भारत में अत्यधिक प्रासंगिक बना हुआ है। इनमें महत्वपूर्ण है सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार। अधिनियम सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के सिद्धांत को कायम रखता है। यह सुनिश्चित करता है कि 18 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक नागरिक को वोट देने का अधिकार है। यह लोकतंत्र के लिये महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रत्येक नागरिक को सरकार में भागीदारी देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

साथ ही यह चुनावी अपराधों के लिए भी महत्वपूर्ण है। अधिनियम विभिन्न चुनावी अपराधों, जैसे रिश्वतखोरी, प्रतिरूपण और अनुचित प्रभाव को निर्दिष्ट करता है और उनके लिये दंड निर्धारित करता है। चुनाव की शुचिता बनाए रखने के लिये भी यह महत्वपूर्ण है। यह अधिनियम जन प्रतिनिधित्व कानून, 1951 चुनाव लड़ने के लिए अयोग्यता को भी सूचीबद्ध करता है। इसमें आपराधिक दोषसिद्ध और भ्रष्ट आचरण शामिल हैं। यह सुनिश्चित करता है कि संदिग्ध पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति सार्वजनिक पद पर न रहें। उभरती चुनौतियों का समाधान करने और चुनावी प्रक्रिया को मजबूत करने के लिये जन प्रतिनिधित्व कानून में पिछले कुछ वर्षों में कई संशोधन हुए हैं। उदाहरण के लिये, 2013 में 'नोटा' (उपरोक्त में से कोई नहीं) की शुरुआत एक महत्वपूर्ण थी। इसमें मतदाताओं को उपलब्ध उम्मीदवारों के प्रति अपना असंतोष व्यक्त करने की अनुमति मिली।

बदलती परिस्थितियों और चुनौतियों के अनुरूप जन प्रतिनिधित्व कानून में अन्य संशोधन भी हुए हैं। कुछ प्रमुख संशोधनों में शामिल पेपर लेस इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन (वोटर वेरिफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल) यह ईवीएम से जुड़ी एक स्वतंत्र प्रणाली है। यह मतदाताओं को यह सत्यापित करने में मदद करती है कि उनका वोट उनके इच्छित उद्देश्य के अनुसार सही दर्ज हुआ है। इसे 2013 में पेश किया गया था। जब उच्चतम न्यायालय ने पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज बनाम यूनियन ऑफ इंडिया मामले (2013) के अपने फैसले में चुनाव आयोग को स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव की आवश्यकता की अनुमति दी थी। इसके अलावा यह भी प्रावधान किया गया है कि राजनीतिक दलों के लिये दो हजार रुपए से अधिक प्राप्त दान की सूची चुनाव आयोग को सौंपना अनिवार्य है। राजनीतिक दल दो हजार रुपए से ज्यादा नकद चंदा नहीं ले सकते हैं। सूचना का अधिकार भी महत्वपूर्ण है। उम्मीदवारों को यह जानकारी देनी होगी कि क्या वह किसी लंबित मामले में दो साल या उससे अधिक कैद की सजा से दंडनीय किसी अपराध का आरोपी है या किसी अपराध के लिये दोषी ठहराया गया है। यह भी महत्वपूर्ण है कि उच्चतम न्यायालय ने जन प्रतिनिधित्व कानून, 1951 की धारा 8(4) को रद्द कर दिया और इसे अवैधानिक घोषित कर दिया। यह भी माना कि अयोग्यता दोषसिद्धी की तारीख होती है। धारा 8(4) दोषी सांसदों, विधायकों और एमएलसी को अपने पद पर बने रहने की अनुमति देती है। शर्त यह है कि वे ट्रायल कोर्ट द्वारा फैसले की तारीख के तीन महीने के अंदर अपनी दोषसिद्धी/सजा के खिलाफ उच्च अदालतों में अपील दायर कर दें।

जन प्रतिनिधित्व कानून ने अपने प्रावधानों और संशोधनों के साथ, भारत में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'नोटा' की शुरुआत ने मतदाताओं को उम्मीदवारों के प्रति अपनी अस्वीकृति व्यक्त करने का अधिकार दिया है। इससे राजनीति में अवांछित तत्वों का प्रभाव कम हो गया है। साथ ही राजनीति के अपराधीकरण पर रोक भ्रष्ट आचरण के दोषी व्यक्तियों की अयोग्यता ने संदिग्ध पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों को चुनाव में भाग लेने से रोक दिया है। यह भारतीय चुनाव आयोग को जन प्रतिनिधित्व अधिनियम के सिद्धांतों को लगातार बनाए रखने में मदद करता है। यह पारदर्शिता बनाए रखता है। इसके अलावा, यह अधिनियम उभरती चुनौतियों, जैसे एग्जिट पोल के प्रभाव और पारदर्शी राजनीतिक फंडिंग की आवश्यकता, को संबोधित करने के लिये पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुआ है। चुनाव के अंतिम चरण तक एग्जिट पोल पर प्रतिबंध का उद्देश्य मतदाताओं के निर्णयों को समय से पहले प्रभावित होने से रोकना है।

जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की आधारशिला बना हुआ है। यह बदलती परिस्थितियों और चुनौतियों के अनुरूप वर्षों में विकसित हुआ है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि चुनावी प्रक्रिया स्वतंत्र और निष्पक्ष बनी रहे। अधिनियम के प्रावधान और संशोधन भारतीय चुनावों में पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक आचरण को बढ़ावा देने में सहायक रहे हैं। इससे यह एक जीवंत लोकतंत्र के कामकाज के लिये एक महत्वपूर्ण कानून बन गया है। अतः चुनावी प्रक्रिया में कोई भी फेरबदल जैसे पहचान के उपयोग किये जाने वाले दस्तावेजों में कई नए दस्तावेज का उपयोग करने जैसे बदलाव को कानूनी वैधता प्रदान करने के लिए उक्त जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 में संशोधन करना आवश्यक है।

महिला दिवस: अधिकारों की प्राप्ति का प्रयास

दृष्टिकोण

भारती पंडित

लेखिका शिक्षाविद् हैं।

दासता शब्द सुनकर तुरंत कुछ सखियाँ कह उठेंगी, अरे अब कहाँ दासता? हम तो बहुत स्वतंत्र हैं अब। तो मेरी सखियों, एक तो अपने चश्मे से सारी दुनिया को मत देखो। हमारा देश आज भी महिलाओं पर अत्याचार की रैंकिंग में चौथे क्रम पर है। बालक-बालिका अनुपात 1000:910 का हो चला है, 30 प्रतिशत महिलाएँ यौन प्रताड़ना और 45 प्रतिशत घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं और महिला शिक्षा (साक्षरता नहीं) की दर अभी भी 50 प्रतिशत से आगे बढ़ी नहीं है। बची हुई महिलाओं को भी अपने मन जैसा जीने की, मन जैसा पेशा चुनने की और अपनी पसंद से विवाह करने की स्वतंत्रता नहीं है। यह है हमारे तथाकथित सभ्य और सुसंस्कृत समाज की हकीकत। तो स्पष्ट है न कि दिवस उसी का मनाने की ज़रूरत महसूस होती है जिसके पास अधिकार नहीं होते।

8 मार्च को दुनिया भर में महिला दिवस केवल महिला अधिकारों के लिए ही नहीं वरन जेंडर समानता के लिए भी मनाया जाता है। पहले तो यह सोचना ही ज़रूरी है कि महिला दिवस मनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी? यह सवाल ठीक वैसा ही है जैसे कि आरक्षण की ज़रूरत ही क्यों पड़ी? प्रकृति ने तो महिला और पुरुष दोनों को समान रूप से रचा था, नए जीवन को जन्म देने के लिए। उसकी रचना में कोई न निम्न था, न कोई उच्च...कुछ समय तक यह व्यवस्था सुचारू रूप से चली। फिर अचानक मानव सामाजिक हो गया और इसी ने जन्म दिया स्त्री की दासता को...

दासता शब्द सुनकर तुरंत कुछ सखियाँ कह उठेंगी, अरे अब कहाँ दासता? हम तो बहुत स्वतंत्र हैं अब। तो मेरी सखियों, एक तो अपने चश्मे से सारी दुनिया को मत देखो। हमारा देश आज भी महिलाओं पर अत्याचार की रैंकिंग में चौथे क्रम पर है। बालक-बालिका अनुपात 1000:910 का हो चला है, 30 प्रतिशत महिलाएँ यौन प्रताड़ना और 45 प्रतिशत घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं और महिला शिक्षा (साक्षरता नहीं) की दर अभी भी 50 प्रतिशत से आगे बढ़ी नहीं है। बची हुई महिलाओं को भी अपने मन जैसा जीने की, मन जैसा पेशा चुनने की और अपनी पसंद से विवाह करने की स्वतंत्रता नहीं है। यह है हमारे तथाकथित सभ्य और सुसंस्कृत समाज की हकीकत। तो स्पष्ट है न कि दिवस उसी का मनाने की ज़रूरत महसूस होती है जिसके पास अधिकार नहीं होते।

आज भले ही यह डंका पीटा जा रहा हो कि हर सफल स्त्री के पीछे कोई न कोई पुरुष ही है, हमारे घर में समानता है, हमें स्वतंत्रता है तो यदि आप भी ऐसा ही समझती हैं तो ऐसे में कुछ सवाल अपने आप से कीजिए-

1. क्या आपके घर में निर्णय लेने का अधिकार आपके पास है? (सलाह को निर्णय न मानिए)

2. यदि दोनों नौकरी करते हैं तो काम के बँटवारे जैसी कोई व्यवस्था बनी हुई है? दफ्तर से आकर चाय या रात का भोजन कौन बनाता है?

3. क्या आपको अपनी मर्जी के कपडे पहनने, रात गए अपनी मित्रों/सहेलियों के साथ पार्टी करने या किसी सहेली के घर में स्लीप ओवर करने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है? (अनुमति लेने और सूचित करने के अंतर को समझिए)

4. क्या मायके के लोगों को अपनी तनख्वाह देने या उनकी मदद करने का निर्णय लेने की स्वतंत्रता है?

5. क्या आपको अपने धन को अपनी मर्जी से चाहे जैसा खर्च करने की सहूलियत है?

6. परिवार के लिए किए जाने वाले सारे सामंजस्य किसके हिस्से में आते हैं?

7. यदि आपका स्थानांतरण हो जाए तो नौकरी कौन छोड़ेगा? सामंजस्य किसे बिठाने को कहा जाएगा?

8. क्या आपको घर में अपनी असहमति दर्शाने, विरोध करने की छूट है?

यह सूची और भी लम्बी हो सकती है मगर यदि इनमें से किसी एक प्रश्न का भी उत्तर आपके पक्ष में नहीं है तो आपको अपनी स्वतंत्रता और समानता के भ्रम पर पुनर्विचार करना होगा।

और हाँ, स्त्री समानता की वकालत करने का यह हरगिज़ अर्थ नहीं है कि ऐसा करके पुरुष को चुनौती देना है, उसका दमन करना है, सत्ता परिवर्तन करना है या भूमिकाओं में अदला-बदली करना है। जिसे जो अच्छा लगे करे मगर एक इंसान के रूप में स्त्री को सम्मान तो दे...बराबरी के अवसर मिले, बराबरी का व्यवहार हो, बराबरी की शिक्षा मिले, बराबरी से निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिले7 मानते हैं कि हमारे घर के पुरुष शायद इतने जटिल न हो (???) पर हमारे जैसों का प्रतिशत देश की आधी आबादी का 8-10 प्रतिशत होगा शायद...इतना काफी है क्या?

एक और मज़ेदार बात यह है कि प्रताड़ना जब तक शारीरिक हिंसा के रूप में न हो, हम उसे प्रताड़ना समझते ही नहीं है। जबकि ऐसी कोई भी बात कहना जिससे आपके सम्मान को ठेस लगती हो, प्रताड़ना है। शारीरिक बनावट का मजाक उड़ाना, कमियाँ गिनवाना, हीन महसूस करवाना यह सब प्रताड़ना के ही खाते में दर्ज होते हैं। यहाँ तक कि ऐसा कोई भी काम करना जिससे सामने वाले का मन आहत हो, प्रताड़ना है मगर हम सब इन बातों को सामान्य समझते हुए (क्योंकि यह सब घटते देखते आए हैं) स्वीकार करते रहते हैं कि स्त्री होने का अर्थ यही है।

तो महिला दिवस हमें यही याद दिलाने का दिवस है कि देखें कि पिछले दशक की तुलना में हमारे घर की रवायतों में कुछ बदलाव आया है कि नहीं, हमारी दृष्टि व्यापक हुई है कि नहीं, आसपास कुछ बदला है कि नहीं, हमारी बच्चियाँ पिछले वर्ष के मुकाबले सुरक्षित और स्वतंत्र हुई हैं कि नहीं...

और हाँ, महिला दिवस अपने घर की पुरुष संतानों को महिलाओं के बारे में जागरूक बनाने का भी दिन है। शिक्षा को लड़कियों और लड़कों के स्कूल में बाँट देने से वैसे ही खूब कबाड़ा हो चुका है, दोनों एक दूसरे के लिए अबूझ, अजीब पहेलियाँ बन जाते हैं जिन्हें सुलझाने के बकवास उपाय बताए जाते हैं फिल्मों, इंटरनेट और फिजूल किताबों द्वारा...दोनों एक दूसरे की ज़रूरतों को जानते ही नहीं तो संवेदनशील होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता...तो यह बीड़ा हमें उठाना होगा कि कम से हमारे घर में और आसपास के घरों में हम इस शब्दावली तक को निषेध करेंगे कि 'अरे खाना बनाना सीख लो, फलां करो, फलां मत करो, लडकी हो आखिर...जानते हैं न कि भाषा भी असमानता को व्यापक करती है। लड़कों के व्यवहार पर भी नज़र रखिए, उन्हें लड़कियों के प्रति संवेदनाहीन होने से बचाइए, शुरुवात अपने घर के पुरुषों, बच्चों से ही कीजिए और इस पहुँच को समाज तक ले जाइए। सबसे महत्वपूर्ण यह कि हर असमानता भरे व्यवहार को ना कहिए, घर में भी अन्यथा बच्चे उसी को वास्तविक व्यवहार समझने लगते हैं कि मेरे पिताजी माँ को उल्टी-सीधी बातें कहते थे और माँ कुछ कहती नहीं थीं यानी पत्नी से ऐसे ही बात की जाती हैं। परिपाटियाँ ऐसे ही बनती हैं।'

तो आइए स्त्री अधिकारों की इमारत में अपने-अपने हिस्से की ईंट लगाइए।

और इसके साथ ही यह भी ध्यान रहे कि महिला मुक्ति का अर्थ पुरुष का जीवन कष्टकर बना डालना नहीं है, जो पुरुष सरल स्वभाव के हैं, आपके लिए सब सुविधाएँ जुटाते हैं, आपकी हर बात मानते हैं, उनकी सरलता को कमजोरी या मूर्खता मानकर उन्हें प्रताड़ित करना इस महान उद्देश्य को बेकार कर देने जैसा है। क्योंकि हम सब जानते हैं- लिंग भेद प्रकृतिजन्य है मगर लिंग असमानता समाज द्वारा गढ़ी गई है।

बालेन की जीत नेपाल में नए युग की शुरूआत है...

विश्व राजनीति

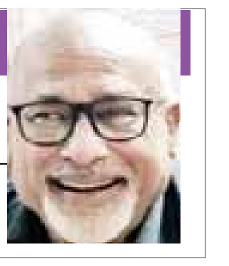

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

नेपाल में संसदीय चुनाव के नतीजों के आने के बाद यह सर्वथा स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के मुखिया बालेंद्र शाह नेपाल के प्रधानमंत्री होंगे। इस चुनाव में नेपाल के मतदाताओं ने अदभुत परिपक्वता और परिवर्तन की मानसिकता का परिचय दिया है। बीत वर्ष की बात है कि नेपाल में जेनरेशन ज़ेड के बेलगाम हिंसक आंदोलन ने ओली सरकार का तख्तापलट दिया था और देश की सियासी फिज़ा बदल दी थी। तब एक युवा चेहरा तेजी से परिदृश्य में उभरा था। यह चेहरा था बालेंद्र शाह या बालेन शाह का, जिन्हें बोलचाल में बालेन कहकर बुलाया जाता है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी की स्थापना 21 जून, 2022 को पत्रकार रबी लामिछाने ने की थी। गत वर्ष बालेन को पीएम बनाने की मांग उठी थी, किंतु उन्होंने इसे कुबुल नहीं किया था। संप्रति, काठमांडु के महापौर बालेन के कक्ष में ग्रेटर नेपाल का नक्शा अभी भी लटका हुआ है।

इस चुनाव की खूबी है कि नेपाली अवाम ने नेपाली कांग्रेस और वामपंथियों को नकार दिया है। स्थापित पार्टियों और परिवारों की चूलें हिला देने वाले इस महासमर में कोईराला परिवार हाशिये में चला गया है और केपी शर्मा ओली और माधव कुमार नेपाल जैसे दिग्गज चुनाव हार गये हैं। और तो और कांग्रेस के अध्यक्ष गगन थापा को शिकस्त का सामना करना पड़ा है। सिर्फ पूर्व पीएम पुष्प कुमार दहल प्रचंड अपना वजूद बचाने में सफल हुये हैं। उनकी पार्टी को करीब दस फीसद वोट मिले हैं। आंकड़ों के मान से बालेन की पार्टी आरएसपी को प्रचंड बहुमत मिला है। इस चुनाव की एक और अहम बात है कि मतदाताओं ने नारी शक्ति के प्रति समर्थन व्यक्त किया है। आरएसपी की 16 में से 13 महिला प्रत्याशिनें संसद में पहुंची है, अलबत्ता प्रचंड की बेटी को हार का सामना करना पड़ा है।

बालेन की उम्र ज्यादा नहीं है। यही कोई- पैंतीस वर्ष। उनका जन्म 27 अप्रैल, 1990 को हुआ। वह फिलवक्त राजधानी काठमांडू के महापौर हैं। सामान्यतः मेयर नगर निगमों के कामकाज में उलझे रहते हैं, लेकिन बालेन का पिंड अलग है। उन्होंने अपनी आक्रामक और तुर्श राजनीति से सारे देश का ध्यान आकृष्ट किया है और आंदोलन की धुरी बनकर उभरे हैं। सोशल मीडिया पर वह खासे लोकप्रिय हैं। उनके लाखों फालोअर्स हैं। नेपाली युवाओं के वह आईकॉन या रोल मॉडल हैं। यह अकारण नहीं है कि सन 2023 में 'टाइम' ने उन्हें विश्व के 100 शीर्ष व्यक्तित्वों में शामिल किया। वह नेपाली रैपर, संगीतकार, इंजीनियर और राजनीतिज्ञ हैं। काठमांडू के महापौर चुने गये वह पहले निर्दलीय प्रत्याशी हैं और मुद्दों पर किसी भी अथार्टी से भिड़ने के मामले में उनका कोई सानी नहीं है।

बालेन शाह काठमांडू के 15वें मेयर हैं। वह सन 2022 में ग्रीष्म में पांच वर्षों के लिए मेयर चुने गये थे। उन्होंने 10+2 की पढ़ाई बीएस निकेतन हायर सेकेंड्री स्कूल से की। हिमालयन व्हाइट हाउस इंटरनेशनल कालेज से सिविल इंजीनियरिंग में डिग्री के बाद उन्होंने भारत में कर्नाटक में स्थित विश्वेश्वरैया प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से एमटेक किया। उनके पिता आयुर्वेद चिकित्सक थे, लेकिन बालेन का मन संगीत में रमा। इसमें उन्हें खासी कामयाबी मिली। वह काठमांडू के रैप मुकाबलों में सक्रिय रहे। अपने गीतों और अदाओं से वह युवा वर्ग में लोकप्रिय सितारा बनकर उभरे। यह लोकप्रियता उनका जंपिंग बोर्ड साबित हुई और अराजनीतिक पृष्ठभूमि के बावजूद वह बत्तीस की उम्र में काठमांडू के मेयर चुन लिए गये। दिलचस्प बात है कि वह संगीत की दुनिया में अभी भी सक्रिय हैं। मेयर चुने जाने तक वह नेपाली हिपहॉप उद्योग में एक दहाई बिता चुके थे। नेवार के मधेशी बौद्ध परिवार में जनमे बालेन की पत्नी सबीना काफले सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारी हैं।

बालेन के सुर्खियों में उभरने का क्रम उनके मेयर बनने के बाद शुरू हुआ। उन्होंने नागरिक सुविधाओं, कचरा निपटान और अतिक्रमण ध्वंस पर ध्यान केंद्रित किया। उनके एजेंडे में भ्रष्टाचार और अनियतिताओं का विरोध, बौद्ध स्थलों का विकास और बेहतर परिवहन तो शामिल है ही, वह वृहत्तर नेपाल के भी समर्थक हैं। वाम विचारों के बालेन के सन 2023 में अपने दफ्तर में ग्रेटर नेपाल का नक्शा टांगने पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई थी। बेजा कब्जा हटाने के फेर में वह निजी व्यापारियों, उड्डयन अभिकरण और पुलिस प्रशासन से टकरा चुके हैं और अदालती झमेलों में भी उलझे, लेकिन उन्होंने घुटने नहीं टेके और फैसलों पर अडिग रहे। इससे उन्होंने लोकप्रियता बटोरी। उन्होंने अवैध निर्माणों को तो तोड़ा ही, पुलिस के अवैध सब-स्टेशनों को भी नहीं बख्शा। वह भारत के प्रति तल्ख हैं और पूर्वोत्तर भारत के भूभाग वापस नेपाल में चाहते हैं। एक दफा उन्होंने राजधानी की सीमा में भारतीय फिल्मों की स्क्रीनिंग पर प्रतिबंध लगा दिया था और फिल्म आदिपुरूष में 'सीता भारत की बेटी है' लाइन हटाने की मांग की। इस पर उनके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल हुई और पाटन हाईकोर्ट ने उनके खिलाफ अंतरिम आदेश जारी किया। अदालती आदेश की अवहेलना में बालेन ने उसके पालन से इंकार किया। अंततः सुप्रीम कोर्ट के दखल पर उन्होंने नरमी बरती, लेकिन अदालत और संघीय सरकार पर भारत के प्रभाव में होने का आरोप चस्पां किया। बालेन के नेपाल का प्रधानमंत्री होने का नेपाल की राजनीति में नये युग का प्रारंभ और चीन तथा भारत के लिये नये समीकरणों का जनक माना जा रहा है।

पहल

श्याम बोहरे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

समाज में बराबरी के लिए छोटी लेकिन गंभीर मुहिम

इस मुहिम की शुरुआत 1857 में 8 मार्च के दिन हुई जब अमेरिका के शिकागो और न्यूयार्क शहर में कपड़ा मिलों में काम करने वाली महिला मजदूरों ने काम के 16 घंटे से 10 घंटे करने की मांग को लेकर सड़कों पर आंदोलन किया था। पुलिस द्वारा आन्दोलन के दमन से कई महिलायें शहीद हुई और अनेक घायल हुई। यद्यपि पहली लड़ाई में कोई सफलता नहीं मिली, लेकिन 8 मार्च के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए 8 मार्च 1910 को मजदूर नेत्री क्लारा जेटकिन ने एक महिला सम्मेलन में इस दिन को महिला दिवस के रुप में मनाने का प्रस्ताव रखा जो करतल ध्वनि से मंजूर कर लिया गया। बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इसे मान्यता प्रदान की। महिला दिवस पर महिला और पुरुष के बीच गैर बराबरी का जायजा लेते हुए महिलाओं को समाज में समान और न्यायपूर्ण दर्जा दिलाने की कोशिशों की बात होती रही है आगे भी होती रहेगी।

समाज में महिलाओं की दशा और उनकी हैसियत से उस समाज की सच्चाई समझी जा सकती है। मनुस्मृति में कहा गया है, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' शक्ति की देवी दुर्गा, धन की देवी लक्ष्मी, विद्या की देवी सरस्वती की पूजन बहुत ही श्रद्धा और विधि विधान से की जाती है। जहां सिक्के का एक पहलू सकारात्मक, चमकदार और सम्मानजनक है, वहीं दूसरा पक्ष घोर निंदनीय, वीभत्स, काला, अंधकार से भरा है, गैरबराबरी फैलाने वाला अन्यायी है। महिलाओं के प्रति अन्याय और गैर बराबरी की व्यवस्था को मिटाकर समता, सम्मान और न्याय पर आधारित समाज में भरोसा करने वाले महिलाओं और पुरुषों के बीच बराबरी लाने की कोशिश करते रहे हैं, आज भी कर रहे हैं और उद्देश्य प्राप्त होने तक करते रहेंगे।

इस मुहिम की शुरुआत 1857 में 8 मार्च के दिन हुई जब अमेरिका के शिकागो और न्यूयार्क शहर में कपड़ा मिलों में काम करने वाली महिला मजदूरों ने काम के 16 घंटे से 10 घंटे करने की मांग को लेकर सड़कों पर आंदोलन किया था। पुलिस द्वारा आन्दोलन के दमन से कई महिलायें शहीद हुई और अनेक घायल हुईं। यद्यपि पहली लड़ाई में कोई सफलता नहीं मिली, लेकिन 8 मार्च के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए 8 मार्च 1910 को मजदूर नेत्री क्लारा जेटकिन ने एक महिला सम्मेलन में इस दिन को महिला दिवस के रुप में मनाने का प्रस्ताव रखा जो करतल ध्वनि से मंजूर कर लिया गया। बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इसे मान्यता प्रदान की। महिला दिवस पर महिला और पुरुष के बीच गैर बराबरी का जायजा लेते हुए महिलाओं को समाज में समान और न्यायपूर्ण दर्जा दिलाने की कोशिशों की बात होती रही है आगे भी होती रहेगी।

एक आंकड़े से महिलाओं की स्थिति को देखिए महिला के हिस्से काम के घंटे 60, आमदनी में 20, और सम्पत्ति में 2 प्रतिशत आई है। काम पुरुष से अधिक लेकिन आमदनी और सम्पत्ति में हिस्सा बहुत कम आखिर यह गैरबराबरी क्यों? देश के संविधान की उद्देशियका में भारत के सभी नागरिकों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक न्याय की बात लिखी है। वहीं दूसरी ओर कई धर्म हैं जो महिला को पुरुष के अधीन घोषित करते हैं।

ईसाई धर्म की पवित्र पुस्तक 'बाइबिल' में लिखा है कि महिला को पति के सामने झुकना चाहिए जैसे ईश्वर के सामने झुकते हैं। पति पत्नी का स्वामी है जैसे ईसा गिरजाघर के स्वामी हैं। मुस्लिम धर्म के पवित्र ग्रंथ 'कुरान शरीफ' में स्पष्ट लिखा है कि आदमी का औरत पर अधिकार है। अल्लाह ने पुरुष को ऊंचा बनाया है। महिला को पुरुष की आज्ञा मानना चाहिए। हिन्दू धर्म की मनु स्मृति के अनुसार महिला को बचपन में पिता,जवानी में पति पर और बुढ़ापे में अपने बेटों पर निर्भर रहना चाहिए। पति चाहे पागल, कामी, दुराचारी, अवगुणी हो तो भी पत्नी को उसे भगवान की तरह पूजना चाहिए।

संवैधानिक प्रावधान, कानून, नियम, तर्क और विवेक आदि हैं जो समानता का पाठ पढ़ाते रहते हैं लेकिन धार्मिक आस्थाएं इन सब पर भारी हैं। दरअसल, हम संविधान, लोकतंत्र और ज्ञान को धर्म नहीं बना पाए, महिला-पुरुष गैरबराबरी बनी रहने का यह भी कारण है। यद्यपि महिलाओं के हालात को समझने के लिए अकादमिक शोध और अध्ययन किये जाते हैं, लेकिन समाज के सामान्य व्यवहार में भी इसे आसानी से देखा जा सकता है। घटना 2003 की है। मध्यप्रदेश के पन्ना जिले पटना तमोली गांव में कुटटी बाई पति के देहान्त के बाद सती हो गईं। इस सामाजिक कुप्रथा का जहां विरोध होना था वहां इसको पूरे जोरशोर से महिमा मंडित किया गया। इससे उत्साहित होकर सती माता के मन्दिर बनाने का अभियान पूरी शिद्दत से चलने लगा। समाज को जागरुक करने का दम्भ भरने वाले मीडिया ने सती माता के मन्दिर बनाने वाले अभियान की आग में घी डाला। यह समझ ही नहीं आता कि सती माता के मन्दिर बनाने की मुहिम को मीडिया ने हवा क्यों दी? एक माह से अधिक समय तक प्रशासन की मुस्तैदी और कठोर परिश्रम से किसी तरह वह गलत काम रोका जा सका।

महिला के जलने की वीभत्स खुशी अकल्पनीय और घृणित होना चाहिये, लेकिन उसे महिमामण्डित करने के पीछे यह कारण हो सकता है -

अनुव्रजन्ती भर्तारं गृहात पितृवनं मुदा।
पदे पदेअश्वमेधस्य फलं प्राप्नोत्संशयम।

स्कन्दपुराण के ब्रहम्खण्ड में लिखा है कि जो नारी अपने मृत पति का अनुसरण करती हुई घर से श्मशान की ओर प्रसन्नता के साथ जाती है, वह पग-पग पर अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करती है। आधुनिक शिक्षा, सोच विचार उससे उपजी जागरुकता सभी कुछ धार्मिक प्रावधानों के सामने धराशायी क्यों हो जाते हैं?

हमारे विवाह के रीति रिवाजों को देखिये। जिनमें वर पक्ष के सदस्यों को अधिक सम्मान देना जरुरी होता है। धार्मिक पर्व और विवाह निरंतर पितृसत्तातमक व्यवस्था को मजबूती से स्थापित करते हैं। विवाह तय करते समय यदि लड़की कहे कि उसे खाना बनाना नहीं आता तो यह बड़ी अयोग्यता मानी जाती है जबकि लड़के से यह अपेक्षा करने का सवाल ही नहीं उठता। क्या यही है बराबरी?

महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अधिकांश व्रत-उपवास पति को स्वस्थ और दीर्घायु रखने के लिए होते हैं जिनमें पत्नी की स्थिति दोयम दर्जे की होती है। यह समझ के परे है कि अच्छी खासी पढ़ी लिखी तथाकथित जागरुक प्रोफेसर, डॉक्टर, उच्च पदस्थ सम्पन्न आत्मनिर्भर महिलाएं अपने आपको दोयम दर्जे का सिद्ध करने वाले इस तरह के अनुष्ठान करती ही क्यों हैं वह भी खुशी- खुशी? इनकी उच्च शिक्षा और आत्मनिर्भरता ने इन्हें बराबरी का अहसास करने की सलाहियत क्यों नहीं दी?

अधिक निराश न हों,चलो कुछ मीठा हो जाये। मामूली दिखने वाले कुछ प्रभावी कदमों की बात करते हैं। महिलाओं को सशक्त करने के हर संभव प्रयास सराहनीय हैं। गरीब महिलाओं को मजबूत करने वाले आकार में छोटे लेकिन पुख्ता कामों पर नजर डालते हैं।

इन्दौर में काम कर रही समान सोसायटी 2015 से महिलाओं को मुख्यधारा के उन कामों में दक्ष कर रही है जिन पर केवल पुरुषों का एकाधिकार माना जाता था। अभी तक 450 महिला ड्रायवर पूरी तरह दक्ष और अन्य व्यवसायिक; प्रोफेशनल ड्राइवरों की तरह 12 से 35 हजार रुपए प्रति माह कमा रहीं हैं। इसी तरह 150 महिला मैकेनिक अपनी वर्कशॉप में दोपहिया और चार पहिया वाहन सुधारने का काम पूरी दक्षता और समझदारी से कर रहीं हैं। 100 से अधिक इलेक्ट्रिशियन का काम बखूबी कर रहीं हैं। इन्दौर के चौइथराम अस्पताल और बाम्बे अस्पताल के बड़े ठेकेदारों ने इन्हें ठेका देकर काम कराया है। बनते हुए घरों की अन्डरग्राउंड वायरिंग से लेकर तैयार मकान की पूरी बिजली फिटिंग का काम समान सोसायटी की महिला इलेक्ट्रिशियंस ने किया, साथ ही दिन प्रतिदिन घरों में बिजली सुधारने के काम नियमित रुप से करतीं हैं। समान सोसायटी इनका प्रशिक्षण बहुत व्यवस्थित तरीके से करती है जिसमें दक्षता के साथ साथ समानता के मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जो काम केवल पुरुष एकाधिकार में रहे उनमें महिला को जगह बनाना किसी चक्रव्यूह को भेदने से अधिक मुश्किल काम है।

बकरी पालन गरीबों की रोजी रोटी का साधन तो है लेकिन बकरी नए आ रहे पौधें को खा कर या कुचलकर नष्ट कर पौधों के रीजनरेशन में बाधा डालती है। बकरी को जंगल में न भेजकर घर में ही पत्ती और दाना खिलाकर पालने से इस बाधा को दूर करने में सफलता हासिल कर पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान किया है। सीहोर और इछावर तहसील के 150 गांवों में बकरी पालन कर रही 6500 महिलाओं ने आमदनी बढ़ाई है। जिले में काम कर रही सीपा संस्था ने प्रशिक्षण और सतत सम्पर्क से इन बकरी पालक महिलाओं को दाना तैयार करने, बकरियों के उचित आवास, टीकाकरण,पेट के कीड़े मारने, बीमारियों का इलाज, क्रय-विक्रय, दस्तावेजीकरण आदि कामों में इतना दक्ष कर दिया है कि अब 150 महिलायें पशु सखी बनकर ये सभी सेवायें बकरी पालकों को पैसे लेकर दे रहीं हैं। पशु सखियों को गांवों में बकरी की डॉक्टर भी कहते हैं।

सीहोर जिले में ही रेहटी जागृति महिला संस्थान 40 गाांवों में लगभग 3500 महिलाओं को संगठित कर रोजगार आदि कामों के माध्यम से आगे ला रहीं हैं। करीब 120 महिलायें सिलाई से, तो 100-150 के करीब अपने अनाज के उत्पाद जैसे मल्टीग्रेन आटा,दलिया, बड़ी,पापड. आदि को तैयार कर बाजार में जगह बनाने की जददोजहद कर रहीं हैं, अभी हाल में सहकारी संस्था बनाई है जिसमे 500 सदस्य हैं। जिन महिलाओं के लिए पहले बाहर की महिलाओं से बात करना कठिन था वे आज आजकल बंगलोर, नागपुर, भोपाल प्रशिक्षण के लिए जाने लगीं हैं यह बात बहुत मामूली लग सकती है पर जिस परिवेश की महिलाओं ने जूझकर यह पड़ाव हासिल किया है उनके के लिए यह उपलब्धि क्रांति से कम नहीं है।

फाइनल में भारत बना विश्व विजेता,खूब फूटे बम

सोहागपुर। नर्मदांचल यूथ क्लब के तत्वावधान में नगर के मुख्य बाजार मालवीय पैलेस परिसर में विश्व कप फाइनल के मैच खेल प्रेमियों को बड़े स्कीन पर दिखाया गया। जिसमें सैकड़ों खेलप्रेमियों उपस्थिति दर्ज कराई। खेल प्रेमियों ने उत्साह मैच देखा। वहीं भारत की पारी में खिलाड़ियों के चौके छक्के पर

झूम कर नृत्य करते रहे। वहीं न्यूजीलैंड की टीम के खिलाड़ी आऊट होने पर ढोल ढमाके बजते रहे। जब भारतीय टीम ने विजय हासिल की तब मालवीय परिसर भारत माता की जय के नारे परिसर गूंज उठा। यही नहीं उपस्थित गणमान्य नागरिक भी झूमने को मजबूर हो गए। ढोल, डीजे के साथ पूरे नगर में विजयश्री जुलूस निकाला गया।इस आयोजन में पुष्पराज पटेल,संतोष मालवीय,मिश्रीलाल साहू,मुकेश मालवीय,गजेन्द्र चौधरी,सुरेश साहू कार्तिक शर्मा,रिषभ दीक्षित ,नीरज चौधरी सैकड़ों सहित नगर वासी शामिल हुए। इधर नगर के चारों तरफ फाइनल में भारत की जीत पर आतिशबाजी जलती रही। इसके साथ जूलूस भी निकाले गए।

नर्मदा परिक्रमा वासियों का जगह-जगह स्वागत

पंडित सोमेश परसाई के सानिध्य में क्षेत्रीय विधायक अपने विधानसभा मुख्यालय सोहागपुर पहुंचे

सोहागपुर। नर्मदापुरम से पंडित सोमेश परसाई के सानिध्य में सोहागपुर विधायक विजयपालसिंह सपत्नीक, राज्यसभा सांसद माया नारोलिया के साथ करीबन 108 नर्मदा परिक्रमा वासियों के साथ नर्मदा परिक्रमा को करीबन 13 दिन पूर्व नर्मदापुरम से परिक्रमा को निकले थे । रविवार को परिक्रमा वासियों के साथ सोहागपुर विधानसभा के ग्राम शोभापुर , ग्राम करनपुर, सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय, सेमरी हरचंद आदि स्थानों पर आगमन हुआ। परिक्रमा वासियों का जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया।नगरागमन पर मुख्य बाजार में मंच बनाया गया था। पंडित सोमेश परसाई, शंभू दरबार के पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल,नगर की प्रथम नागरिक श्रीमती लता यशवंत पटेल आदि मंचासीन थे। इस अवसर पर पंडित सोमेश परसाई ने मां नर्मदा के

महत्व पर सारगर्भित उद्बोधन दिया। क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने स्वागत से अभिभूत होकर सभी का आभार व्यक्त किया।इसके पूर्व नगरवासियों ने नर्मदा परिक्रमा वासियों की बैंड बाजों आदि उनकी अगवानी की। वहीं नगर को पंडित सोमेश परसाई, क्षेत्रीय विधायक विजयपाल सिंह आदि के बैनरों से पाट दिया गया था। जिससे इस प्राचीन नगरी कहलाने वाली श्रोणितपुर नगरी सोहागपुर धार्मिक आस्था का केंद्र बन गई। परिक्रमा वासियों के आगमन पर नागरिकों ने मां नर्मदा की जय जयकार करते हुए। फूलों की वर्षा की। गणमान्य नागरिकों ने मंच पर पंडित सोमेश परसाई सहित,भी आगुंतकों का फूलमालाओं से स्वागत किया। इसके उपरांत पंडित सोमेश परसाई, क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह, राज्य सभा सांसद माया नारोलिया आदि को खुली जीप में बैठा गया। क्षेत्रीय विधायक नागरिकों का अभिवादन स्वीकार करते चल रहे थे। नागरिक परिक्रमा वासियों पर पुष्पों की वर्षा कर रहे थे। इसके पूर्व ग्राम शोभापुर में भाजपा नेता केशव जाजू , गणमान्य नागरिकों, एवं कार्यकर्ताओं जनप्रतिनिधियों ने भारी संख्या पहुंचकर पंडित सोमेश परसाई,विधायक विजयपालसिंह आदि का भव्य स्वागत किया। उल्लेखनीय बात यह रही कि सोहागपुर मुस्लिम त्योहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान आदि ने मुस्लिम समुदाय के साथ क्षेत्रीय विधायक आदि परिक्रमावासियों का स्वागत किया।इधर राज मैरिज गार्डन में आयोजित स्वागत समारोह में भी गणमान्य नागरिकों, भाजपा कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों एवं मातृशक्ति आदि ने पंडित सोमेश परसाई क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह सपत्नीक, राज्य सभा सांसद माया नारोलिया आदि का स्वागत किया गया। राज मैरिज गार्डन के संचालक बाबू भाई मुल्ला जी ने भी शाल आदि से स्वागत किया।

यूजीसी के नियमों के विरोध में सवर्ण समाज का धरना-प्रदर्शन

रैली निकालकर कलेक्ट्रेट पहुंचे, राष्ट्रपति व मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

बैतूल। सवर्ण समाज संगठन जिला बैतूल के बैनर तले यूजीसी के हाल ही में लागू किए गए नियमों के विरोध में सोमवार की दोपहर को धरना प्रदर्शन किया गया। संगठन से जुड़े पूरे जिले से आए लोग पहले बैतूल के शिवाजी आडिटोरियम में एकत्रित हुए, जहां सभा आयोजित कर नियमों पर चर्चा की गई। इसके बाद पदाधिकारियों और सभी समाजों के लोगों ने शहर के प्रमुख मार्गो से रैली निकालते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचकर राष्टपति और मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन कलेक्टर बैतूल नरेंद्र सूर्यवंशी को सौंपा। ज्ञापन में बताया गया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने 15 जनवरी 2026 से उच्च शिक्षण संस्थानों में जातिगत भेदभाव रोकने के उद्देश्य से नए नियम लागू किए हैं। इन नियमों में कॉलेज और विश्वविद्यालयों में शिकायत निवारण तंत्र को मजबूत करने, जातिगत उत्पीड़न के मामलों में कार्रवाई करने और संस्थानों की जवाबदेही तय करने जैसे प्रावधान किए गए हैं। जो सवर्ण समाज के विरुद्ध हैं। ज्ञापन सौंपने के बाद सभी लोग कलेक्ट्रेट के सामने धरना-प्रदर्शन पर बैठ गए। वहां सवर्ण समाज संगठन जिला बैतूल के बैनर तले सभी समाज के प्रमुखों ने अपने संबोधन में कहा कि सरकार ऐसे नियम लागू कर समाज को बांटने का प्रयास कर रही है। उनका कहना था कि इससे सवर्ण समाज और अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति सहित अन्य वर्गों के बीच अनावश्यक वैमनस्य बढ़ेगा एवं तनाव की स्थिति निर्मित होगी। उन्होंने कहा कि समाज में सभी वर्गो के बीच आपसी भाईचारा बना रहना चाहिए।

संगठन ने कहा-नियमों में संतुलन का अभाव- संगठन का आरोप है कि इन नियमों में संतुलन का पूर्णत अभाव है और इससे सवर्ण समाज के छात्रों को बिना पर्याप्त जांच के दोषी ठहराए जाने की आशंका बन सकती है। जिससे उनका भविष्य बर्बाद हो सकता है। आक्रोशित सवर्ण समाज के सभी लोगों ने एकमत होकर सरकार व प्रशासन से मांग की कि इन प्रावधानों को या तो जल्द से जल्द वापस लिया जाए या उसमें जायज संशोधन किया जाए। संगठन ने चेतावनी दी कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो सवर्ण समाज व्यापक स्तर पर सड़कों पर उतरकर आंदोलन व धरना-प्रदर्शन करने को मजबूर होगा। साथ ही कहा है कि इस आंदोलन के दौरान किसी भी अप्रिय घटना की जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी। रैली एवं धरना-प्रदर्शन की अगुवाई में ब्राह्मण, क्षत्रिय, राजपूत, वैश्य, जैन, रघुवंशी, मराठा, कायस्थ, सिंधी व पंजाबी और गुजराती समाज के प्रमुखों सहित बड़ी संख्या में इन समाजों की महिलाएं व पुरुष उपस्थित थे।

युवाओं, बुजुर्गों और महिलाओं ने जमकर उड़ाया रंग-गुलाल, मनाई रंगपंचमी

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी राजीव खंडेलवाल के निवास पर हुआ मिलन समारोह

बैतूल। रविवार को जिलेभर में रंगपंचमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस पर्व पर हर कोई रंगों में डूबा नजर आया। होली से ज्यादा रंगपंचमी पर नागरिकों द्वारा रंग गुलाल उड़ाया गया। होली के पांचवे दिन मनाए जाने वाले रंगपंचमी पर्व पर युवाओं, बुजुर्गों और महिलाओं ने परंपरानुसार एक-दूसरे पर रंग गुलाल लगाए। रविवार सुबह से रंगपंचमी का त्योहार मनाने युवाओं की होली सडक पर निकल चुकी थी। ग्रामीण इलाको में भी रंग पंचमी उत्साह एवं उमंग से मनाा। होली उत्सव का समापन इस दिन दोगुनी खुशियों के साथ लोगों ने किया। कई ग्रामीण क्षेत्रों में सुबह से शाम तक रंग खेलने का दौर जारी रहा। इस पर्व पर सुरक्षा व्यवस्था बनाने के लिए चप्पे-चप्पे पर पुलिस बल

तैनात किया गया था, इससे कहीं कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। रंगपंचमी के चलते रविवार को लगने वाला साप्ताहिक बाजार भी पूरी तरह सूना रहा।

राजीव खंडेलवाल के निवास पर हुआ मिलन समारोह...- प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नगर सुधार न्यास के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध कर सलाहकार राजीव खंडेलवाल के सिविल लाइन्स, कॉलेज रोड, बैतूल स्थित निवास पर रविवार को प्रातः 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक रंगपंचमी के शुभ अवसर पर होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें शहर के जनप्रतिनिधियों, पत्रकारों के अलावा बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों ने जोश के साथ एक दूसरे को रंग गुलाल लगाया। कार्यक्रम में हर कोई व्यक्ति रंगा-पुता नजर आया। युवाओं और महिलाओं ने डीजे की धुन पर मनमोहक गीत संगीत के साथ होली का पर्व प्रेम, सौहार्द और आनंद के साथ जमकर मनाया।

जीत के जश्न में हुड़दंग-पुलिस को चोट के बाद चार गिरफ्तार

देवास। कल रात भारत न्यूजीलैंड क्रिकेट मैच में भारत की जीत के जश्न के दौरान स्याजी द्वार पर उत्साही भीड़ द्वारा पटाखे चलाने से एस टी एफ का जवान हुआ जख्मी, एक पुलिस अधिकारी के कान के पास भी फूटा बम । बाहर से आये बल के दो जवान हुए घायल । अन्य पुलिस बल और अधिकारियों पर भी जलते हुए बम फूटे । जश्न बना हुड़दंग,पुलिस ने दिखाई सख्ती और छ्ष्ट्रङ्क के आधार पर बम,फटाके जलाकर फेकने वाले 4 नामजद आरोपी गिरफ्तार.पकड़े गए आरोपियों में आदर्श पडियार, नितिन कुमावत, आदित्य गुप्ता और आयुष अहीर शामिल हैं। पुलिस ने चारों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है। अन्य हुड़दंगियों की होगी जल्द गिरफ्तारी जश्न के दौरान हुड़दंगियों के कारण छ्स्क्कसहित अन्य दो जवान हुए थे।

नवरात्रि पर्व पर सुगमता से दर्शन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें : कलेक्टर ऋतुराज सिंह

देवास। जिले में चैत्र नवरात्रि पर्व 19 मार्च से मनाया जाएगा। नवरात्रि पर्व की तैयारियों के संबंध में कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह की अध्यक्षता में माँ चामुण्डा शासकीय देवस्थान प्रबंध समिति कार्यालय में बैठक आयोजित हुई। बैठक में महापौर प्रतिनिधि श्री दुर्गेश अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गेहलोद, नगर निगम आयुक्त श्री दलीप कुमार, अपर कलेक्टर श्री शोभाराम सोलंकी, अपर कलेक्टर श्री संजीव जैन, एसडीएम देवास श्री अभिषेक शर्मा, परिवीक्षाधीन आईपीएस श्री आलोक कुमार वर्मा, लोक निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, विद्युत, नगर निगम, वन विभाग, यातायात, स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में कलेक्टर श्री सिंह ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि माताजी टेकरी पर दर्शन के लिए आने वाले सभी श्रद्धालुओं को सुगमता से दर्शन हों, इसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। टेकरी श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए दिशा-निर्देश के पोस्टर लगाएं और दूरी भी लिखें। श्रद्धालुओं को प्रसाद लेने के लिए कोई भी दुकानदार परेशान नहीं करें, इस संबंध में दुकानदारों की बैठक लें। माताजी टेकरी के आसपास लगने वाली दुकानों को शर्तों के साथ अनुमति दें। कोई भी दुकानदार 'प्रसाद' के नाम पर ग्राहकों से पार्किंग का पैसा नहीं वसूलेगा। 'प्रसाद' के नाम पर पार्किंग का पैसा वसूलने पर संबंधित पर कार्यवाही की जायेगी। लगातार मॉनिटरिंग के लिए सभी दुकानों में सीसीटीवी कैमरे भी लगाये। नवरात्रि के दौरान श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक दर्शन की सुविधा की दृष्टि से टेकरी पर पानी, पंखा, कूलर व छाया सहित आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराई जाये। माताजी टेकरी पर सभी सीसीटीवी कैमरे चालू अवस्था में रहना चाहिए। कंट्रोल रूम से 24 घण्टे मानिटरिंग करें। नवरात्रि पर मंदिर समिति प्रसाद वितरण के लिए पर्याप्त काउन्टर बनाये। ऑनलाइन दान के लिए टेकरी परिसर में जगह-जगह बारकोड लगाये।

ग्राम उमरखेड़ी काफिले के साथ पहुंचे बाबा

युवा राष्ट्र की शक्ति है, युवाओं से आह्वान गांजा,शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों से दूर रहें : सतुआ बाबा महराज उत्तरप्रदेश

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। सेमरीहरचंद के समीपवर्ती छोटे से कस्बे उमरखेड़ी में ग्रामीण उस समय अचंभित रह गए जब मां नर्मदा की पावन परिक्रमा के दौरान जगतगुरु विष्णु स्वामी मुख्य आचार्य पीठ एवं सतुआ बाबा आश्रम के संचालक श्री संतोषदास जी (सतुआ बाबा महाराज) उत्तरप्रदेश का आगमन हुआ। इस काफिले में सुरक्षाकर्मियों सहित करीबन 40 से अधिक वाहन थे। ग्राम उमरखेड़ी के समाजसेवी शिवकुमार पटेल ने बताया कि महराज जी काफला पिपरिया सोहागपुर सेमरी हरचंद से होकर हमारे निवास स्थान पहुंचा। श्री महामंडलेश्वर श्री बृज किशोरदास जी महाराज (बोरास) की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। महराज जी का काफिला जिस भी क्षेत्रों से निकला वहां श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा और जयकारों के साथ संतों का भव्य स्वागत किया। ग्राम उमरखेड़ी में श्री पटेल के निवास पर सत्संग दरबार विशाल धर्मसभा को संबोधित किया। आपने सत्संग को संबोधित करते हुए जगद्गुरु जी ने

युवाओं से आह्वान किया कि वर्तमान में देश में नशे की बढ़ती लत के दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हमें इससे सचेत रहने की नितान्त आवश्यकता है। आपने आह्वान किया कि उन्हें गांजा, शराब और हर प्रकार के व्यसन से दूर रहना चाहिए। क्योंकि युवा शक्ति ही राष्ट्र की शक्ति है, इसे नशे में बर्बाद न करें । ग्राम उमरखेड़ी के नागरिक ने उत्साह एवं ध्यानपूर्वक सुना ।

ग्राम उमरखेड़ी में अभूतपूर्व स्वागत को देखकर महाराज श्री अत्यंत प्रसन्न नजर आए। उन्होंने भावुक होकर कहा कि, 'मुझे गर्व और अत्यंत प्रसन्नता है कि छोटे से ग्राम उमरखेड़ी में हमारे आगमन पर संतों का इतना भव्य और आत्मीय स्वागत किया गया। इस भक्तिमय दृश्य को देखकर मेरा मन हर्षित है।' उन्होंने आगे कहा कि जिस स्थान पर संतों का ऐसा आदर और आगमन होता है, वहाँ हमारी संस्कृति सदैव सुरक्षित रहती है। आपने अंत में नर्मदा परिक्रमा की महत्ता बताते हुए उपस्थित जनसमूह को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर क्षेत्र के हजारों श्रद्धालु संतों के दर्शन और अमृत वचनों का लाभ लेने उमड़ पड़े थे ।इस अवसर पर आयोजन के मार्गदर्शक बालयोगी संत श्री राम प्रियदास महाराज (भानपुर) श्री मंझले भैया (समनापुर वाले)श्री बाल संत भगवान दास जी महाराज रोकडिया हनुमान रेवा मुहारी, आयोजक समिति के समाजसेवी शिव कुमार पटेल, केशव पटेल, राज पटेल आदि समस्त ग्रामवासी की सक्रिय भूमिका रही।

आजीविका मिशन के तहत स्व-सहायता समूह से जुड़कर ग्रामीण महिलाओं के जीवन में आ रहा क्रांतिकारी बदलाव

कभी घर गृहस्थी तक सीमित ग्रामीण महिलाएं अब दूसरों के लिए बन रहीं प्रेरणा स्त्रोत

रायसेन (निप्र)। सरकार द्वारा संचालित आजीविका मिशन ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहा है। इस मिशन के तहत स्वयं सहायता समूहों का गठन कर महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा जा रहा है। प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार से जुड़ाव के माध्यम से महिलाएं अब अपने पैरों पर खड़ी हो रही हैं। रायसेन जिले के सांची विकासखण्ड के ग्राम रतनपुर गिरधारी निवासी श्रीमती सरूपी मीणा आजीविका मिशन से जुड़कर आज आर्थिक रूप में ना सिर्फ आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि क्षेत्र की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत भी हैं। श्रीमती सरूपी मीणा द्वारा सांची में रूरल मार्ट का संचालन किया जा रहा है। इसके साथ ही उन्होंने ड्रोन दीदी के नाम से भी अपनी अलग पहचान बनाई है। श्रीमति सरुपी मीणा ने बताया कि वह 10वीं तक शिक्षित थी। पति कृषि कार्य करते थे, जिससे बड़ी मुश्किल से परिवार का भरण पोषण हो पाता था। श्रीमति सरुपी अपनी शिक्षा को आगे चालू रखना चाहती थी परन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने से वह आगे की पढाई नही कर सकी।

कुछ वर्ष पहले आजीविका मिशन के कर्मचारियों द्वारा ग्राम में भ्रमण कर महिलाओं को समूह में जुडने हेतु समझाया गया। उस समय तक सरुपी भी पूर्णतः बेरोजगार थी तथा आगे की पढाई जारी रखना चाहती थी परन्तु आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण इनकी इच्छा पूरी नही हो सकी तो उन्होंने सोचा की समूह में जूडने से हो सकता है मुझे आगे बढने का

अवसर मिल जाये। समूह से जुड़ने के बाद धीरे-धीरे बचत कर समूह से पैसा लेकर श्रीमती सरुपी ने अपनी आगे की पढाई चालू कर दी। साथ ही उन्होंने समूह निर्माण कार्य एवं अन्य सर्वे कार्य सीआरपी के रूप में करना प्रारम्भ कर मानदेय प्राप्त करने लगी। समूह से रूपए लेकर और समूह के कार्य से प्राप्त मानदेय से उन्होंने एक किराना दुकान प्रारम्भ की। इसके अलावा उन्हें बैंक सखी का कार्य करने का अवसर भी मिल गया। जिससे शाखा प्रबंधक द्वारा उनके समूह का सीसीएल भी कर दिया गया। इस सभी कार्यो से उन्हें प्रतिमाह चार से पांच हजार रू की आमदनी होने लगी। इसके बाद उन्होंने सीएससी सेन्टर का कार्य भी प्रारभ्भ कर दिया जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि हुई। श्रीमती सरूपी मीणा द्वारा स्नातक तक शिक्षा पूर्ण कर ली है। श्रीमती सरूपी मीणा की लगन और मेहनत के कारण उन्हें सांची में रूरल मार्ट का संचालन करने का अवसर मिला। वह रूरल मार्ट में दीदी समूहों के उत्पादों का विक्रय एवं अन्य सामग्री का विक्रय करने का कार्य करती है। इसके अतिरिक्त श्रीमती सरूपी मीणा को वर्ष 2023-24 में नमो ड्रोन योजना का भी लाभ मिला है। उन्होंने बताया कि नमो ड्रोन योजना में चयनित होने के बाद उन्हें ग्वालियर में ड्रोन चलाने का प्रशिक्षण दिया गया। इसके बाद उन्हें निःशुल्क ड्रोन दिया गया। कम्पनी से आए इंजीनियर ने भी उन्हें ड्रोन चलाने का पूरा प्रशिक्षण दिया। जिसके बाद वह खेतों में ड्रोन से कीटनाशकों का छिड़काव करने लगी। इस प्रकार उन्हें प्रतिवर्ष लगभग तीन लाख रू की आमदनी हो जाती है। श्रीमती सरूपी मीणा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को धन्यवाद देते हुए कहती हैं कि आजीविका मिशन महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इससे महिलाएं आत्मनिर्भर बनने के साथ ही समाज में उनका मान-सम्मान भी बढ़ा है।

संक्षिप्त समाचार

मार्च के पहले हफ्ते में टूटा 10 साल का रिकॉर्ड

नर्मदापुरम में 38 डिग्री के पार पहुंचा पारा; पचमढ़ी में भी सताने लगी गर्मी

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम सहित पूरे मध्य प्रदेश में मौसम ने अचानक करवट ली है। पिछले चार दिनों से प्रदेश में तेज गर्मी का नया ट्रेंड देखने को मिल रहा है। इसने पिछले 10 सालों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है, क्योंकि आमतौर पर 15 मार्च के बाद ही इतनी तेज गर्मी पड़ती है। लेकिन इस बार 4 मार्च से ही अधिकतम तापमान में भारी उछाल दर्ज किया जा रहा है और पारा लगातार 36 डिग्री सेल्सियस के ऊपर बना हुआ है। चिलचिलाती धूप ने लोगों को बेहाल कर दिया है। शुक्रवार को नर्मदापुरम पूरे प्रदेश में सबसे अधिक गर्म जिला रहा, जहां अधिकतम तापमान 38.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हालांकि, शनिवार को इसमें आधा डिग्री की मामूली गिरावट हुई और यह 37.6 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। दिन के साथ-साथ अब रातें भी गर्म होने लगी हैं। नर्मदापुरम में पिछले 24 घंटे में रात के न्यूनतम तापमान में 2.8 डिग्री सेल्सियस का बड़ा उछाल आया है और यह 19 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है। मैदानी इलाकों के साथ-साथ प्रदेश के इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में भी गर्मी का असर तेज हो गया है। यहां रात के न्यूनतम तापमान में 0.8 डिग्री और दोपहर के तापमान में 1.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि आने वाले दिनों में गर्मी का यह प्रकोप और बढ़ेगा तथा तापमान में लगातार वृद्धि देखने को मिलेगी।

60 बालिकाओं को एचपीवी की वैक्सीन लगाई गई

सीहोर (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार स्वास्थ्य विभाग द्वारा राष्ट्रीय ह्यूमन पैपिलोमा वायरस टीकाकरण कार्यक्रम के तहत 14 से 15 वर्ष की बालिकाओं का टीकाकरण किया जा रहा है। सीएमएचओ डॉ सुधीर कुमार डेहरिया ने बताया कि सीहोर जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में भी एचपीवी टीकाकरण कार्यक्रम के तहत बालिकाओं को एचपीवी की वैक्सीन लगाई जा रही है। उन्होंने बताया कि 07 मार्च को जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में जिले की 60 बालिकाओं को एचपीवी की वैक्सीन लगाई गई। सीएमएचओ डॉ सुधीर डेहरिया ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर भारत में महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे जानलेवा कैंसर है। इस गंभीर बीमारी की रोकथाम के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा यह राष्ट्रव्यापी एचपीवी टीकाकरण अभियान प्रारंभ किया गया है। यह अभियान आगामी तीन माह तक पूरे देश में संचालित किया जाएगा।

लाड़ली लक्ष्मी योजना की राशि से छात्रा हेमा को पढ़ाई में मिली आर्थिक मदद

बैतूल (निप्र)। राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी लाड़ली लक्ष्मी योजना बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका उदाहरण बैतूल मुख्यालय के गांधी वार्ड निवासी छात्रा हेमा रैकवार है। इस योजना के तहत मिलने वाली राशि से छात्रा हेमा को पढ़ाई में आर्थिक सहयोग मिला है। हेमा रैकवार ने बताया कि वह मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना से लाभान्वित हितग्राही हैं। उन्हें कक्षा छठवीं में पहली बार योजना के तहत 2 हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई थी। इसके बाद कक्षा 9वीं में 2 हजार रुपये तथा कक्षा 11वीं और कक्षा 12वीं में 6-6 हजार रुपये की राशि मिली। हेमा ने बताया कि उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है। उनके माता-पिता मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करते हैं। ऐसे में लाड़ली लक्ष्मी योजना से प्राप्त राशि ने उनकी पढ़ाई जारी रखने में काफी सहयोग किया है। छात्रा हेमा ने कहा कि लाड़ली लक्ष्मी योजना के माध्यम से बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहन और सशक्त बनने का अवसर मिल रहा है। इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का आभार व्यक्त किया है।

सीहोर जिले में नरवाई जलाने पर कलेक्टर ने लगाया प्रतिबंध, नरवाई जलाने पर होगी कार्यवाही

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री बालागुरु के. द्वारा सीहोर जिले में खेतों में नरवाई जलाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। जारी आदेशानुसार फसल कटाई के बाद अगली फसल की तैयारी के लिए कुछ किसानों द्वारा खेतों में आग लगाकर नरवाई नष्ट की जाती है, जिससे हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही इससे मिट्टी की उर्वरता भी कम होती है, सूक्ष्म जीव नष्ट होते हैं, जनसंपत्ति और प्राकृतिक वनस्पति को नुकसान पहुंचता है तथा आगजनी की घटनाओं की आशंका भी बनी रहती है। जिले में रोटावेटर जैसे वैकल्पिक साधन उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग कर खेत साफ किए जा सकते हैं। आदेश का उल्लंघन करने पर कार्रवाई की जाएगी।

पीएम राहत योजनाः सड़क दुर्घटना में घायल को 1.5 लाख तक का कैशलेस चिकित्सा सहायता

योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए प्रशिक्षण आयोजित

बैतूल (निप्र)। पीएम राहत योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए निजि अस्पताल संचालकों एवं स्वास्थ्य विभाग के डाटा एन्ट्री आपरेटरों का प्रशिक्षण एएनएमटीसी प्रशिक्षण केन्द्र बैतूल में शनिवार को आयोजित किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाडे ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पीएम राहत योजना का 13 फरवरी से शुभारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य सड़क दुर्घटना पीड़ितो को गोल्डन ऑवर के दौरान दुर्घटना की तिथि से 7 दिनों के भीतर रूपये 1.5 लाख तक का कैशलेस चिकित्सा उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है। उन्होनें कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता दुर्घटना पीड़ित का इलाज करवाना है।

हम सभी लोग इसमें मिलकर कार्य करें, हमारे तरफ से यह कोशिस हो कि कोई भी घायल व्यक्ति इलाज के अभाव में दम न तोड़े। योजना को आपातकालीन सहायता प्रणाली 112 से जोड़ा गया है, जिसमें दुर्घटना की सूचना मिलने पर पीड़ित को निकटतम अस्पताल तक शीघ्र पहुंचाया जा सके। जिले में आयुष्मान भारत पीएमजेएवाई के अंतर्गत समस्त अस्पतालों को पीएम राहत योजनांतर्गत शामिल किया जाएगा। डीआईओ एनआईसी श्रीमती रचना श्रीवास्तव द्वारा पीएम राहत योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि पीएम राहत योजना में किस प्रकार निजी एवं शासकीय चिकित्सालयों में लाभ प्राप्त हो सकेगा। डीआरएम एनआईसी श्री अभिषेक वागद्रे ने बताया कि योजना का संचालन पूर्णतः डिजिटल प्रणाली के माध्यम से किया जाएगा।

सड़क परिवहन एवं राज्य मार्ग मंत्रालय की ई डिटेंल्स एक्सीडेंट रिपोर्ट प्रणाली को राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के ट्रांजेक्शन प्रबंधन सिस्टम से जोड़ा गया है, जिससे दुर्घटना की सूचना से लेकर भुगतान तक पूरी प्रक्रिया ऑनलाईन होगी। जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार ने बताया कि केन्द्र सरकार की राहवीर योजना मध्यप्रदेश राज्य में भी लागू कर दी गई है।

जिसके अंतर्गत सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने एवं जान बचाने पर 25 हजार रूपये का ईनाम एवं प्रशंसा पत्र दिया जाएगा। इनाम की राशि परिवहन विभाग द्वारा दी जाएगी। प्रशिक्षण में निजी अस्पताल के संचालक एवं विकासखंड से डाटा एन्ट्री ऑपरेटर उपस्थित रहे।

पिपरिया में होली मिलन समारोह की धूम

पिपरिया (निप्र)। शनिवार शाम पिपरिया में दो होली मिलन समारोह आयोजित किए गए। हथवास और पचमढ़ी रोड स्थित सिद्धि विनायक गार्डन में आयोजित इन कार्यक्रमों में नागरिकों और महिलाओं ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर भाईचारे और सौहार्द का संदेश दिया।

हथवास में मथुरा की तर्ज पर होली का उल्लास : हथवास में जनपद सदस्य नरसिंह रावत के तत्वावधान में पुरस्कार प्रोत्साहन समिति द्वारा रंग-गुलाल उत्सव मनाया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण मथुरा से आई नृत्य मंडली रही, जिन्होंने राधा-कृष्ण के स्वरूप में मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए। ढोल-नगाड़ों और गुलाल के बीच पूर्व विधायक हरिशंकर जायसवाल, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष संपत मूंदड़ा और एकता स्पोर्ट्स क्लब के अध्यक्ष बलराम सिंह बैंस सहित अनेक जनप्रतिनिधियों ने शिरकत की। हिंदू उत्सव समिति, अमृत सेवा समिति और भूतपूर्व सैनिक समिति के सदस्यों ने भी सामूहिक रूप से होली की खुशियां बांटीं।

राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान अंतर्गत कन्या क्रीड़ा परिसर हमलापुर में जिला स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित

बैतूल (निप्र)। जिला मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत बैतूल श्री अक्षत जैन एवं जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री हंसराज धुर्वे के निर्देशन में नवाचार अंतर्गत पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से जिला पंचायत के माध्यम से खेल एवं युवा कल्याण विभाग बैतूल के द्वारा एक दिवसीय जिला स्तरीयकबड्डी खेल प्रतियोगिता का आयोजन कन्या क्रीड़ा परिसर हमलापुर में किया गया। प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में श्री आदित्य बबला शुक्ला, श्री अतीत पंवार, जिला कबड्डी संघ के अध्यक्ष श्री नितेश राजपूत एवं पर्वत राव धोटे, क्रीड़ा अधिकारी शिक्षा विभाग श्री धर्मेन्द्र पवार, क्रीड़ा अधिकारी जनजातिय कार्य विभाग श्री विनय यादव उपस्थित थे।

प्रतियोगिता में जिले के विकासखंडो से प्रतिभागियों ने सहभागिता की। अतिथियों ने उद्बोधन में खिलाड़ियों को नवीन ऊर्जा का संचार करने के लिए हौसला बढ़ाया एवं खेल को खेल की भावना से खेले जाने के लिए एवं अपना व जिले का नाम रोशन करने आदि पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने खेलों में सक्रिय भागीदारी व सहभागिता करने के लिए प्रेरणा दी। कार्यक्रम में मंच संचालन श्री राम नारायण शुक्ला एवं आभार जिला समन्वयक श्री उमेंद्र रहड़वे ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में जिला पंचायत से राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के जिला परियोजना प्रबंधक संदीप परिहार, जिला समन्वयक उमेंद्र रहड़वे, टीम कोच रवि विनय, गोविन्द विश्वकर्मा तथा खेल और युवा कल्याण विभाग से जिला प्रशिक्षक व युवा समन्वयक एवं समस्त स्टाफ के संयुक्त प्रयासों से यह प्रतियोगिता सफलता के साथ संपन्न कराई गई।

जिला खेल और युवा कल्याण विभाग अधिकारी श्रीमती पूजा कुरील ने बताया कि प्रतियोगिता में शाहपुर एवं बैतूल टीमों के बीच फाइनल मुकाबला खेला गया, जिसमें शाहपुर टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर 21 हजार की पुरस्कार राशि एवं शील्ड पर अपना आधिपत्य किया, वहीं बैतूल टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त कर 11 हजार की राशि व शील्ड पुरस्कार स्वरूप प्राप्त किया, तीसरे स्थान पर चिचोली टीम को 5100 की राशि, शील्ड प्रदान की। इसके अलावा सांत्वना पुरस्कार के रूप में 1100-1100 की राशि एवं मेडल क्रमशः घोड़ाडोंगरी, भीमपुर व प्रभात पट्टन ने प्राप्त किया।

जनसंपर्क अधिकारी के बंगले में बाल अपचारी ने की चोरी

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले में जनसंपर्क अधिकारी रश्मि देशमुख के सरकारी आवास और एक मस्जिद से हुई चोरी के मामले में पुलिस ने रविवार दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इसमें एक बाल अपचारी शामिल है। आरोपियों के कब्जे से चोरी की गई संपत्ति जब्त कर ली गई है। जानकारी के अनुसार, 31 जनवरी को जनसंपर्क विभाग की संयुक्त संचालक रश्मि देशमुख के शासकीय आवास में चोरी हुई। रश्मि देशमुख किसी निजी कार्यक्रम में बाहर गई थीं। इस दौरान चोरों ने पीछे के रास्ते से गेट तोड़कर घर में प्रवेश किया और बाथरूम में लगे नलों की टोटियां निकालकर ले गए। अगले दिन चोरों ने फिर से घर में घुसने का प्रयास किया, लेकिन रश्मि देशमुख की आवाज सुनकर वे मौके से फरार हो गए। 2 फरवरी को रश्मि देशमुख ने कोतवाली में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज की और मुखबिर की सूचना पर बाल अपचारी से पूछताछ की। पूछताछ में उसने चोरी करना स्वीकार किया और चोरी की गई वस्तुएं बरामद की गईं। आरोपी को बाल न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे संप्रेक्षण गृह बैतूल भेजा गया।

मस्जिद में चोरी करने वाले भी पकड़ाए : मस्जिद में चोरी का मामला 28 जनवरी का है, जिसमें शिकायत अकबर अली ने दर्ज कराई थी। पुलिस ने इमरान खान (पिता कमाल अंसारी, उम्र 35 वर्ष, निवासी मटन मार्केट, बंगाली कॉलोनी, नर्मदापुरम) को गिरफ्तार किया। असली कीमत करीब 40,000 रुपए की साउंड मशीन, 2 माइक और स्टैंड, गैस टंकी, आरओ मशीन और अन्य बर्तन आरोपी के कब्जे से जब्त किए गए। एसडीओपी जितेंद्र पाठक ने बताया कि दोनों चोरी के मामलों में आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इसमें एक आरोपी बाल अपचारी है। बरामद की गई संपत्ति को संबंधित विभाग और पीड़ितों को लौटाने की कार्रवाई की जा रही है।

इटारसी के हनुमान धाम मंदिर में फूलों की होली

10 क्विंटल फूलों से सराबोर हुए श्रद्धालु; फाग गीतों पर जमकर झूमे

इटारसी (निप्र)। इटारसी के प्रसिद्ध हनुमान धाम मंदिर में शनिवार को 'फूलों की होली' का आयोजन किया गया। शाम 7 बजे से शुरू हुआ यह उत्सव देर रात तक चलता रहा, जिसमें आस्था और रंगों का अनूठा संगम देखने को मिला। आयोजन में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों, महिलाओं और बच्चों ने हिस्सा लिया।

10 क्विंटल फूलों की हुई वर्षा

इस विशेष आयोजन के लिए समिति द्वारा गेंदा, सेवंती और गुलाब के लगभग 10 क्विंटल फूलों का प्रबंध किया गया था। मंदिर परिसर में भगवान हनुमान जी की प्रतिमा के समक्ष फाग गीतों और भजनों की गूंज के बीच श्रद्धालुओं ने एक-दूसरे पर फूलों की वर्षा की। गुलाल और फूलों की महक से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।

दोपहर से ही शुरू हो गया था उत्साह

उत्सव की शुरुआत दोपहर से ही हो गई थी, जब श्रद्धालु मंदिर में एकत्र होने लगे थे। भजन-कीर्तन के साथ पहले गुलाल की होली खेली गई और शाम होते ही मुख्य आयोजन 'फूलों की होली' प्रारंभ हुआ। ढोलक की थाप और पारंपरिक फाग गीतों पर भक्त झूमते नजर आए। श्रद्धालुओं ने इस अवसर पर भगवान से क्षेत्र की सुख-समृद्धि और खुशहाली की प्रार्थना की।

भाईचारे और भक्ति का संदेश

मंदिर समिति के सदस्य लखन बेस ने बताया कि हनुमान धाम मंदिर में हर वर्ष फूलों की होली का आयोजन करने की परंपरा है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज को एक सूत्र में पिरोना और भक्ति व भाईचारे के साथ त्योहार मनाने की संस्कृति को बढ़ावा देना है। इस वर्ष भी श्रद्धालुओं की भारी भागीदारी ने इस आयोजन को यादगार बना दिया।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना की मदद से महेश रघुवंशी बने आत्मनिर्भर

योजना की मदद से स्थापित की 'वेदांश ओवर सीज फ्लोर मिल' कृषक कल्याण वर्ष 2026 में योजना के लिए 200 करोड़ रुपए का किया गया है प्रावधान

रायसेन (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार द्वारा किसानों के सशक्तिकरण के माध्यम से प्रदेश के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना की गई है। इसी अनुक्रम में वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। कृषक कल्याण वर्ष 2026 में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में सतत और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य के वार्षिक बजट 2026-27 में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के लिए 200 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। यह वित्तीय वर्ष 2025-26 के पुनरीक्षित अनुमान 169 करोड़ 11 लाख रुपए से लगभग 18.25 प्रतिशत अधिक है। खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में सफल उद्यमी बनाने की दिशा में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना, मील का पत्थर साबित हो रही है। रायसेन जिले में भी इस योजना का लाभ लेकर अनेक युवा सफल उद्यमी बनकर दूसरों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन रहे हैं। रायसेन जिले के किसान श्री महेश रघुवंशी द्वारा प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना की मदद से स्वयं का आटा उद्योग शुरू किया गया है। गैरतगंज क्षेत्र के किसान श्री महेश रघुवंशी पिता श्री तुलसीराम रघुवंशी बताते हैं कि पहले वह परम्परागत खेती करते थे, जिससे उन्हें प्रतिवर्ष बहुत कम आय प्राप्त होती थी।

जब उन्हें सरकार की प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना के बारे में पता चला, तो उन्होंने गैरतगंज विकासखण्ड के उद्यानिकी कार्यालय में श्री सुरेन्द्र रघुवंशी से सम्पर्क किया। यहां उन्हें पीएमएफएमई योजना की सम्पूर्ण जानकारी दी गई। श्री महेश रघुवंशी द्वारा आटा उद्योग शुरू करने में रूचि दिखाई तथा इसके बारे में जानकारी भी प्राप्त की। इसके उपरांत उन्होंने योजना के तहत आटा उद्योग इकाई लगाने के लिए योजना के तहत आवेदन किया। भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से ऋण स्वीकृत होने तथा राशि मिलने पर उन्होंने आधुनिक मशीनों के साथ आटा उद्योग इकाई ब्रांड 'वेदांश ओवर सीज फ्लोर मिल' स्थापित की। योजना के तहत श्री महेश को 35 प्रतिशत अनुदान सहायता मिली है। हितग्राही श्री महेश रघुवंशी ने बताया कि वह आधुनिक मशीनों के उपयोग से उच्च गुणवत्ता के उत्पाद जैसे आटा एवं दलिया का प्रतिदिन 30 से 35 क्विंटल उत्पादन कर रहे हैं। जिसे वह 'वेदांश ओवर सीज फ्लोर मील' के नाम से गैरतगंज, रायसेन, भोपाल एवं आसपास के बाजार में विक्रय कर प्रति माह लगभग 80 हजार से 90 हजार रू आय प्राप्त कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को धन्यवाद देते हुए हितग्राही श्री महेश रघुवंशी कहते हैं कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना युवाओं के लिए वरदान की तरह है। इस योजना की मदद से हितग्राही स्वरोजगार स्थापित कर स्वयं आत्मनिर्भर बनने के साथ ही अन्य लोगों को भी रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रहे हैं।

रावत को कितनी राहत!

जबलपुर हाई कोर्ट की ग्वालियर बेंच ने विजयपुर के निर्वाचित कांग्रेस विधायक मुकेश मेहरोत्रा का निर्वाचन निरस्त कर दूसरे नंबर के भाजपा प्रत्याशी रामनिवास रावत को विजय घोषित तो कर दिया है लेकिन रावत के लिए भविष्य की राह आसान नहीं है। फिलहाल इस निर्णय को ग्वालियर उच्च न्यायालय की

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

डीबी बेंच में चुनौती दी जा सकती है। फ़िर सुप्रीम कोर्ट भी है। अपील निश्चित होगी और इसके दूरगामी परिणाम भी होंगे। राजनीतिक पंडितों का कहना है कि रावत को कितने दिनों की राहत है यह तो कहा नहीं जा सकता लेकिन जिस तरीके से उच्च न्यायालय के निर्णय पर भाजपा नेताओं ने प्रतिक्रिया देने में जल्दबाजी की है आने वाले दिनों में यह जल्दबाजी उनको कहीं हंसी का पात्र न बना दे। क्योंकि पूर्व के उदाहरण रहे हैं कि ऐसे फैसले को ऊपरी अदालत में चुनौती देने पर निचली अदालत के फैसले पर रोक लग सकती है। राजनीतिक जानकारों का यह भी कहना है कि विधायक, न्यायालय नहीं जनता निर्वाचित करती है। इधर कांग्रेस के एक विधायक को लेकर भी चर्चा है। महिला विधायक इन दिनों भाजपा के पाले में है और फैसला करना है एक सचिवालय को। विजयपुर का फैसला आने के बाद अब महिला विधायक का मामला भी जोर पकड़ सकता है।

भोपाली कांग्रेसियों का दर्द

प्रदेश कांग्रेस के हर कार्यक्रम में आगे रहने वाले भोपाल के पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं का दर्द इस समय अलग ही है। भोपाल के कांग्रेस नेताओं को पार्टी के मंच पर स्थान ही नहीं मिलता चाहे कार्यक्रम भोपाल में हो, चाहे इंदौर या जबलपुर में। भोपाल के कांग्रेस नेता मंच पर स्थान ही नहीं बना पाते हैं। यह बात अलग है कि उनके दिग्गज नेता मंच पर रहते हैं लेकिन उनके दाएं-बायें चलने वाले छुट भैया नेता मंच पर पहुंचने की बारी का इंतजार करते रहते हैं। पिछले दिनों भोपाल में कांग्रेस बड़ा कार्यक्रम हुआ। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने किसान महासम्मेलन किया। महासम्मेलन में इंदौर के नेताओं को मंच पर खूब तवज्जो मिली लेकिन भोपाल के कांग्रेसी नेता भीड़ में इधर-उधर घूमते ही नजर आए। भोपाल के एक पार्षद का तो यहां तक कहना है कि जब से माननीय पटवारी जी प्रदेश अध्यक्ष बने हैं पार्टी के हर कार्यक्रम में भोपाल के कांग्रेस नेताओं की उपेक्षा हो रही है। इंदौर के छोटे नेता मंच सुशोभित कर रहे हैं।

हसरत पूरी या मजबूरी

प्रशासनिक गलियारों में इन दोनों एक विषय को लेकर भरपूर चुटकियां ली जा रही हैं। प्रदेश की प्रशासनिक धुरी मंत्रालय में एक सीनियर आईएएस अफसर को बड़ा दायित्व मिला है। यह प्रभार दायित्व भले ही कुछ दिन का है लेकिन प्रशासनिक गलियारों में यह चर्चा है कि सीनियर आईएएस अफसर की हसरत देर से ही सही पूरी हो गई, भले इसके पीछे मजबूरी हो। सीनियर आईएएस अफसर ने इस दायित्व को संभालने के लिए पूर्व में काफी जोड़ तोड़ भी की थी लेकिन उनका समीकरण सटीक नहीं बैठ पाया। लेकिन अब उन्हें सीनियर आईएएस अफसर होने के चलते यह प्रभारी दायित्व मिल गया है। प्रशासनिक सूत्रों का कहना है कि आने वाले दिनों में यह दायित्व स्थाई रूप ले भी सकता है।

आरोपी की पिटाई ही पिटाई

भोपाल संभाग के एक जेल में इन दिनों एक आरोपी की हर तरह से पिटाई की खबरें आ रही है। आरोपी पर तो आरोप संगीन है लेकिन जेल में उसकी इस तरह पिटाई और प्रताड़ना होगी उसने सोचा भी नहीं था। आरोपी ने पिछले दिनों एक मामला जोर शोर से उठाया था जिसमें सरकार के एक प्रभावशाली नेता पर सवालिया निशान उठे थे और उनकी कुर्सी तक खतरे में आ गई थी। पिछले दिनों आरोपी को एक मामले में पुलिस ने धर लिया और उन्हें जेल भेज दिया। जेल जाने के बाद आरोपी को प्रभावशाली नेता के समर्थक बंदी और तंत्र के कारिंदे उसे जमकर पीट रहे हैं।

पूर्व मंत्री ने चलाई बस

प्रदेश प्रदेश की राजनीति में आजकल जनता के बीच अपनी छवि को और बेहतर करने के लिए नेता तरह-तरह के उपाय करते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पिछले दिनों ट्रैक्टर चला कर किसान पुत्र और किसान हितेषी सरकार साबित करने के लिए एक अच्छी पहल की थी। अब इसी पहल को भाजपा के विधायक और पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव ने भी अपना लिया है। गोपाल भार्गव ने पिछले दिनों अपने विधानसभा क्षेत्र से मरीजों की सेवा के लिए एक बस का शुभारंभ किया और इस बस को खुद चलते हुए मरीजों को लेकर भोपाल के लिये रवाना हुए। इस बस में उनके क्षेत्र के मरीज को भोपाल के विभिन्न अस्पतालों में चिकित्सा के लिए लाने ले जाने की सुविधा रहेगी। बता दें कि विधायक भार्गव के बंगले पर उन्होंने एक हाल मरीजों की सेवा के लिए ही बना रखा है जहां मरीज और उनके परिजन आकर रुकते हैं और इलाज के बाद सागर रवाना हो जाते हैं।

शहरों में तालाब, बावड़ी, नदियों, नालों से हटेंगे अतिक्रमण

नगरीय विकास 760 करोड़ से अधिक राशि करेगा खर्च, अफसरों को कार्रवाई के लिए कहा

भोपाल (नप्र)। चैत्र नवरात्र से प्रदेशभर में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' की शुरुआत होगी। इस अभियान के तहत शहरी क्षेत्रों में तालाब, बावड़ी, नदियों और नालों से सख्ती के साथ अतिक्रमण हटाया जाएगा। साथ ही जल स्रोतों के जीर्णोद्धार और अमृत 2.0 के तहत विकास कार्यों पर 760 करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए जाएंगे। इसके लिए सभी जिलों के कलेक्टरों और नगरीय निकायों के आयुक्त व सीएमओ को निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा जारी गाइडलाइन के अनुसार पारंपरिक जल स्रोतों के पुनरुद्धार के लिए नदियों, तालाबों, बावड़ियों और नालों के किनारों पर किए गए अतिक्रमण को चिह्नित कर तत्काल हटाने की कार्रवाई की जाएगी। विभाग का मानना है कि जल संरचनाओं को अतिक्रमण मुक्त करने से उनके प्राकृतिक स्वरूप की पुर्नस्थापना होगी और वर्षा जल से भू-जल स्तर में भी वृद्धि होगी।

112 जल संग्रहण संरचनाओं का जीर्णोद्धार करेंगे

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश के बाद तैयार की गई इस योजना में बुनियादी ढांचे और स्वच्छता से जुड़े कार्यों के लिए वित्तीय प्रावधान किए गए हैं। अमृत 2.0 योजना के तहत प्रदेश की 112 जल संग्रहण संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया जाएगा। इनका कुल क्षेत्रफल करीब 3315 एकड़ है और इस पर लगभग 67 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के अंतर्गत नदियों को प्रदूषण मुक्त करने के लिए 100 प्रमुख नालों के शुद्धिकरण की योजना बनाई गई है, जिस पर करीब 664 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसके अलावा 1000 जल ग्रहण संरचनाओं के वैज्ञानिक तरीके से संवर्धन और 5000 नाले-नालियों की सघन सफाई एवं सौंदर्यीकरण का लक्ष्य तय किया गया है।

5000 नई रेन वाटर हार्वेस्टिंग प्रणालियां स्थापित होंगी

नगरीय क्षेत्रों में जल संचय को बढ़ावा देने के लिए 5000 नई रेन वाटर हार्वेस्टिंग प्रणालियां स्थापित की जाएंगी। साथ ही सभी नगरीय निकायों में प्रमुख बाजारों, बस स्टैंडों और सार्वजनिक चौराहों पर प्याऊ स्थापित करने के निर्देश भी दिए गए हैं, ताकि गर्मी के मौसम में राहगीरों और आमजन को शुद्ध पेयजल उपलब्ध हो सके।

300 एकड़ क्षेत्र में हरित क्षेत्र विकसित किए जाएंगे

पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए अमृत 2.0 के तहत 116 नगरीय निकायों में करीब 300 एकड़ क्षेत्र में नए हरित क्षेत्र विकसित किए जाएंगे, जिस पर लगभग 29 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। वहीं मानसून सत्र के दौरान प्रदेशभर में 1 करोड़ पौधे लगाने की तैयारी भी की गई है। अभियान में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए 5000 युवाओं को 'अमृत मित्र' के रूप में पोर्टल पर पंजीकृत किया जाएगा, जो जल संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता फैलाने में सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

4 साल पहले लव-मैरिज, फिर प्रेमी से पति को मरवा डाला

छत के रास्ते घर में घुसे बॉयफ्रेंड ने हसबैंड को मारी गोली; चैटिंग से खुला राज

मुरैना (नप्र)। चार साल पहले जिस युवती से लव मैरिज कर लवकुश माहौर ने अपना घर बसाया था, उसी ने अपने दूसरे प्रेमी के लिए उसकी हत्या करवा दी। मुरैना जिले के सिहोनिया में हुए इस ब्लाइंड मर्डर का पुलिस ने चार दिन बाद खुलासा कर दिया है। सिहोनिया पुलिस ने मामले में मृतक की पत्नी खुशी माहौर और उसके पड़ोसी प्रेमी विक्रम परमार को गिरफ्तार कर हत्या का केस दर्ज किया है। वारदात में इस्तेमाल किया गया कट्टा भी बरामद कर दोनों को जेल भेज दिया गया है।

जांच में सामने आया कि लवकुश की पत्नी खुशी माहौर का अपने ही मोहल्ले में रहने वाले युवक विक्रम परमार से अफेयर हो गया था। दोनों साथ रहना चाहते थे, लेकिन लवकुश उनके रिश्ते के बीच आ रहा था। इसी वजह से दोनों ने मिलकर उसे रास्ते से हटाने की साजिश रच डाली। 3 मार्च की रात जब लवकुश अपने घर में सो रहा था, तभी विक्रम छत के रास्ते घर में घुसा और सोते हुए उसे कट्टे से गोली मार दी। इसके बाद वारदात को आत्महत्या का रूप देने की कोशिश भी की गई। मृतक की बहन द्वारा आरोपी को भागते देखने और मोबाइल चैट सहित अन्य साक्ष्यों के आधार पर साजिश का पर्दाफाश हुआ और पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

मुरैना से करीब 35 किमी दूर सिहोनिया पहुंची और मृतक लवकुश माहौर के परिजन से बातचीत की। परिजन का कहना है कि बेटे की बेरहमी से हत्या की गई है, इसलिए आरोपियों को सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।

शादी में मिले लवकुश और खुशी, फिर किया प्रेम विवाह- मृतक लवकुश माहौर के भाई अनिल माहौर के अनुसार लवकुश और उसकी पत्नी खुशी माहौर की शादी प्रेम विवाह था। 31 मई 2022 को अंबाह के बडफरा गांव निवासी गणेशी माहौर की बेटी खुशी माहौर और सिहोनिया निवासी अशोक माहौर के बेटे लवकुश माहौर की शादी हुई थी। बताया गया है कि खुशी और लवकुश की मुलाकात एक रिश्तेदारी की शादी में हुई थी। वहीं से दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई और धीरे-धीरे दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ने लगीं। इसके बाद खुशी के परिजनों ने लवकुश के परिवार से संपर्क किया। कुछ समय बाद दोनों परिवार भी इस रिश्ते के लिए तैयार हो गए और उनकी शादी करा दी गई।

सूरत की हीरा फैक्ट्री में काम करता था लवकुश

शादी के बाद लवकुश माहौर रोजगार की तलाश में गुजरात के सूरत चला गया। वहां वह हीरा बनाने की एक फैक्ट्री में मजदूरी करने लगा। काम के कारण वह ज्यादातर समय सूरत में ही रहता था और बीच-बीच में अपने गांव सिहोनिया आता था। कभी-कभी उसकी पत्नी खुशी भी सूरत अपने पति के पास चली जाती थी। इसी दौरान पति की गैरमौजूदगी में खुशी का संपर्क पड़ोस में रहने वाले युवक विक्रम परमार से हो गया। पहले दोनों के बीच मोबाइल पर बातचीत शुरू हुई। धीरे-धीरे दोनों के बीच अफेयर हो गया। बताया जाता है कि जब खुशी अपने पति के पास सूरत जाती थी तो विक्रम भी उसके साथ वहां पहुंच जाता था। लवकुश दिनभर हीरा फैक्ट्री में काम पर रहता था। वहीं, खुशी विक्रम को अपने पास बुला लेती थी और दोनों साथ में समय बिताते थे।

50 एकड़ में लगी गेहूं की फसल में आग

हरदा-खंडवा स्टेट हाईवे पर घटना, फायर ब्रिगेड और प्रशासनिक टीम मौके पर थी

खिरकिया (हरदा) (नप्र)। खिरकिया के छीपाबड़ में सोमवार को हरदा-खंडवा स्टेट हाईवे पर एक खेत में खड़ी गेहूं की फसल में आग लग गई। इस घटना में लगभग 50 एकड़ में लगी गेहूं की फसल जलकर खाक हो गई।

आग लगने की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड, छीपाबड़ पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। खिरकिया से पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ी द्वारा आग बुझाने का काम जारी है। अज्ञात कारणों से किसान के खेत में अचानक आग लगी, जिसने देखते ही देखते विकराल रूप ले लिया। दमकल कर्मियों और स्थानीय ग्रामीणों ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक काफी नुकसान हो चुका था। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। प्रशासन द्वारा मामले की जांच की जा रही है।

जबलपुर में भाजपा का प्रशिक्षण महाभियान

मुख्यमंत्री बोले-प्रशिक्षण का क्रम जारी रखने के कारण ही भाजपा विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बनी

जबलपुर (नप्र)। पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान (2026) के तहत भाजपा के संभागीय कार्यालय जबलपुर में बड़ी बैठक हो रही है। जिसमें प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ल सहित भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी, मंत्री, विधायक और कार्यकर्ता शामिल हो रहे थे। यहां कार्यकर्ताओं को वैचारिक स्पष्टता, सांगठनिक कौशल और नेतृत्व क्षमता में सक्षम बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस प्रशिक्षण के दौरान वैचारिक सत्र, योग और विभिन्न संगठनात्मक चर्चाएं आयोजित की जाती हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रशिक्षण का क्रम जारी रखने के कारण ही भाजपा विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बनी है। इसीलिए हमारी सरकार जनहितैषी कार्य में अपने संगठन की ताकत लगाती है। संगठन की मजबूती के लिए, कार्यकर्ताओं को आधार बनाने और सक्रियता के लिए प्रशिक्षण वर्ग की आवश्यकता होती है। मुझे प्रसन्नता है कि जब से हेमंत खंडेलवाल अध्यक्ष बने हैं, वे ऐसे कार्यों को गति देते जा रहे हैं। हम सरकार के मुखिया भले ही हैं, लेकिन एक कार्यकर्ता होने के भाव से हमारे सांसद, विधायक और मंत्री दोनों दायित्वों का बराबरी से निभा रहे हैं। आज जबलपुर, रीवा, शहडोल सहित चार संभाग का प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया जा रहा है।

नरसिंहपुर से पहुंचे मंत्री उदय प्रताप

प्रदेश के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह भी नरसिंहपुर जिले के ग्राम लोलरी से कार द्वारा जबलपुर पहुंच गए हैं। परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री यहां रानीताल स्थित पार्टी कार्यालय में आयोजित संभागीय कार्यशाला में शामिल हो रहे हैं और शाम 5 बजे कार द्वारा भोपाल प्रस्थान करेंगे। प्रदेश की पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री राधा सिंह भी प्रशिक्षण शिविर में शामिल होने के लिए जबलपुर पहुंच गई हैं। वे शाम 4.30 बजे कार द्वारा भोपाल प्रस्थान करेंगी।

रीवा से आए डिप्टी सीएम

प्रशिक्षण अभियान में शामिल होने के लिए प्रदेश के उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल रीवा से जबलपुर आ गए थे। शुक्ल ने कहा कि बीजेपी अपने उद्देश्यों को लेकर राजनीति के क्षेत्र में एक मिशन की तरह काम कर रहा है, उस मिशन को पूरा करने के लिए लगातार इस प्रकार के प्रशिक्षण और ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

कार्यकर्ता अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्धता के साथ अपनी भूमिका का निर्वहन ठीक प्रकार से कर सकें, इसके लिए इस तरह के कार्यक्रम होते हैं और इससे हम सबको बहुत फायदा होता है।

जुडा की हड़ताल पर शुक्ल ने कहा कि जल्द उनकी समस्याओं का निकाकरण किया जाएगा। मेरा निवेदन है कि सभी हड़ताल पर जाने के बजाय ड्यूटी पर लौटे।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

अफीम की खेती में भाजपा नेता का हाथ

क दुर्ग जिले में एक भाजपा नेता द्वारा अफीम की खेती किए जाने का मामला सामने आने के बाद राज्य की राजनीति गरमा गई है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भाजपा नेता के अफीम की खेती वाली जगह पर ही पहुंच गए। अफीम की खेती का मामला तूल पकड़ने के बाद भाजपा ने अपने नेता को निलंबित कर दिया है, पर इस घटना से कई सवाल खड़े हो गए हैं। अफीम की खेती गैर कानूनी होने के बाद भी सत्तारूढ़ दल के एक पदाधिकारी ने पार्टी की साख की चिंता नहीं की। राज्य के मंत्रियों और पार्टी पदाधिकारियों के इस भाजपा नेता के कई फोटो अब वायरल होने लगे हैं। इस घटना से एक बात तो साफ़ हो गई कि सत्तारूढ़ दल का चोला ओढ़कर कुछ लोग अपना हित साध रहे हैं और पार्टी के नीति-निर्धारक जमीनी हकीकत जाने बिना पद बांट रहे हैं। दूसरा पार्टी में जमीनी कार्यकर्ताओं की जगह परिक्रमा करने वालों को नवाजने की परंपरा चल पड़ी है। छत्तीसगढ़ में नशाखोरी चरम पर है,पुलिस की धरपकड़ के बाद भी थम नहीं रहा है, ऐसे में भाजपा के नेता का नशे की खेती में संलिप्तता से आने वाले दिनों के लिए कांग्रेस को बड़ा मुद्दा मिल गया है।

लक्ष्मी वर्मा के राज्यसभा जाने से किसे फायदा

भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ से महिला नेत्री लक्ष्मी वर्मा को राज्यसभा भेज रही है। लक्ष्मी वर्मा को राज्यसभा भेजने में जातीय समीकरण ज्यादा नजर आ रहा है। बताते हैं भाजपा राज्य में साहू के साथ कुर्मी को साधकर अगले चुनाव में संतुलन बनाने की रणनीति पर काम किया है। साहू और कुर्मी ओबीसी वर्ग में राजनीतिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। भाजपा ने सरकार में साहू और कुर्मी दोनों को प्रतिनिधित्व दिया है। साहू समाज से उपमुख्यमंत्री अरुण साव हैं तो कुर्मी समाज से मंत्री टंकराम वर्मा। माना जा रहा है कि भूपेश बघेल के कारण कुर्मी समाज का झुकाव कांग्रेस की तरफ कुछ बढ़ा, इसे बैलेंस करने के लिए भाजपा ने लक्ष्मी वर्मा के रूप में कुर्मी समाज के प्रतिनिधि को राज्यसभा भेज कर रणनीतिक चाल चली है। मंत्री टंकराम वर्मा और लक्ष्मी वर्मा दोनों ही बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के निवासी हैं। 2023 के विधानसभा चुनाव में लक्ष्मी वर्मा बलौदाबाजार सीट से भाजपा की टिकट मांग रही थीं। कहा जा रहा है कि लक्ष्मी वर्मा के राज्यसभा जाने से टंकराम वर्मा का रास्ता निष्कंटक हो गया। करीब तीन दशक से भाजपा से जुड़ीं लक्ष्मी वर्मा रायपुर जिला पंचायत की अध्यक्ष रह चुकी हैं।

फूलोदेवी की उम्मीदवारी से सधे कई निशाने

कांग्रेस ने फूलोदेवी नेताम को राज्यसभा के लिए दोबारा उम्मीदवार बनाकर एक तीर से कई निशाना साध लिया। फूलोदेवी नेताम की उम्मीदवारी से राज्य के वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं में कोई गिला-शिकवा नहीं दिखा, वहीं फूलोदेवी की उम्मीदवारी से ट्राइबल और महिला कोटा भी फुलफिल हो गया। राज्यसभा में कांग्रेस के 27 मेंबर में पांच महिलाएं ही हैं। इनमें एक मात्र ट्राइबल फूलोदेवी नेताम ही हैं। इस कारण हाईकमान ने फूलोदेवी के नाम पर मुहर लगा दी, फिर छत्तीसगढ़ से भाजपा ने महिला उम्मीदवार के तौर पर लक्ष्मी वर्मा का नाम पहले ही घोषित कर दिया था। इस कारण भी कांग्रेस को महिला उम्मीदवार पर दांव चलना पड़ा। छत्तीसगढ़ विधानसभा में दलीय स्थिति के आधार पर कांग्रेस और भाजपा को एक-एक सीट मिलनी तय है। इस कारण फूलोदेवी नेताम और लक्ष्मी वर्मा का राज्यसभा में निर्विरोध जाना तय है।

चुनाव ड्यूटी से मैडम परेशान

कहते हैं मंत्रालय में पदस्थ एक सीनियर महिला अफसर को चुनाव ड्यूटी नहीं भा रहा है। कहा जा रहा है कि मैडम मानकर चल रही थी कि सीनियर लेवल पर पहुँचने के बाद चुनाव कार्य में उनका नंबर नहीं लगने वाला, लेकिन चुनाव आयोग ने अगले कुछ महीनों में पांच राज्यों में होने वाले चुनाव के लिए मैडम को आव्जर्वर के लिए सूचीबद्ध कर लिया। बताते हैं दूसरे सेवा में कार्यरत मैडम के पति की भी चुनाव डयूटी लग गई है। अब दोनों की चुनाव ड्यूटी से मैडम की परेशानी स्वाभाविक है। खबर है कि मैडम चुनाव ड्यूटी कैंसल कराने की जुगत में तो हैं, पर नतीजा क्या निकलता है, यह देखना होगा।

कौन बनेगा सिंचाई विभाग का ईएनसी

बताया जा रहा है जल संसाधन विभाग के प्रमुख अभियंता (ईएनसी) इंद्रजीत उइके को अब एक्सटेंशन देने की संभावना कम ही है। करीब-करीब छह साल तक जल संसाधन विभाग के मुखिया की भूमिका में रहने के बाद 31 मार्च को विदा हो जाएंगे। इंद्रजीत उइके को भूपेश बघेल की कांग्रेस सरकार ने ईएनसी बनाया था। वे भूपेश राज में चले और सत्ता बदलने के बाद भी पद पर बने रहे। भाजपा की साय सरकार में उन्हें एक्सटेंशन भी मिल गया। विभाग में वरिष्ठ अफसरों के सॉर्टेज का उइके साहब को खूब लाभ मिला। अब सरकार ने प्रमोशन पॉलिसी में बदलाव कर सीनियर लेवल पर पद भरने का फैसला किया है, फिर भी ईएनसी स्तर पर एक चीफ इंजीनियर स्तर के अफसर को प्रभारी बनाना पड़ेगा। प्रभारी ईएनसी के लिए मक्सी कुजूर का नाम चर्चा में है। कुजूर साहब अभी मंत्रालय में जल संसाधन विभाग के ओएसडी हैं और अधीक्षण अभियंता स्तर के अधिकारी हैं। जल्द ही चीफ इंजीनियर के पद पर पदोन्नत होने वाले हैं, उसके बाद विभाग को संभालेंगे। अब देखते हैं प्रमोशन कब तक होता है। अभी जल संसाधन विभाग महानदी जल विवाद को सुलझाने में लगा है। जस्टिस बेला त्रिवेदी की अध्यक्षता वाली महानदी जल विवाद न्यायाधिकरण ओडिशा के बाद छत्तीसगढ़ के दौरे पर है।

कृषि विभाग के विभीषण

कृषि विभाग के एक अफसर को विभीषण कहा जा रहा है। कहते हैं कृषि विभाग के ये अफसर अपने ही मातहतों और वरिष्ठों के खिलाफ विधानसभा में ध्यानाकर्षण और सवाल लगाते हैं। अफसर की इस रणनीति से विभाग के अन्य स्टाफ उनके आगे-पीछे होता रहता है और विभाग में साहब की तूती बोलती है। बताते हैं जो अफसर या मातहत उनके आगे-पीछे नहीं होते परेशान रहते हैं। विधानसभा के ध्यानाकर्षण और सवालों के जवाब बनाने में उलझे रहते हैं। कहते हैं विभाग की ही पोल-पट्टी खोलने वाले अफसर को एक बड़े अफसर का संरक्षण भी मिला हुआ है। इस कारण उनका हौसला और भी बुलंद रहता है।

राजीव श्रीवास्तव का पुनर्वास

भाजपा-कांग्रेस करने वाले रिटायर्ड डीजी राजीव श्रीवास्तव को साय सरकार में राज्य पुलिस जवाबदेही प्राधिकरण का सदस्य बनाया गया है। 1987 बैच के आईपीएस श्रीवास्तव रिटायमेंट के महज 15 दिन पहले डीजी प्रमोट हुए। रिटायरमेंट के बाद भाजपा ज्वाइन कर लिया। कांग्रेस की सरकार आई तो भाजपा को छोड़ दिया और सरकार बदली तो फिर भाजपा के हो गए। राजीव श्रीवास्तव राज्य पुलिस सेवा से डीजी के पद पर पहुंचने वाले छत्तीसगढ़ के पहले अफसर हैं। रिटायर्ड आईएएस आरपीएस त्यागी भी भाजपा से जुड़े हैं, तो रिटायर्ड आईएफएस राकेश चतुर्वेदी का भी भाजपा नेताओं से नाता है। अब देखते हैं इनको कब सरकारी पद मिलता है।